गरुड़ पुराण रहस्य

प्रथम भाग

(माता भागवती देवी के जीवन की झाँकी)

माता भागवती देवी परम दयाल फकीर चंद जी महाराज की धर्मपत्नी थीं. उनका जीवन वृत्तान्त देने के कई कारण हैं. सबसे मुख्य तो यह है कि उनकी मृत्यु पर परिवार के लोगों के कहने पर गरुड़ पुराण की कथा रखाई गई, जिसे महाराज जी ने भी सुना. उसके सुनने पर उसके गुप्त रहस्यों को महाराज जी ने विज्ञान तथा निज अनुभव के आधार पर वर्णन किया है. दूसरा कारण यह है कि जो लोग इस पुस्तक को पढेंगे और इसमें माता जी का उल्लेख आयेगा तो उनके हृदय में उनके बारे में जानने की लालसा पैदा होगी. तीसरी बात यह है कि ऐसे परमपुरुष की पत्नी के बारे में जानने की उत्कंठा हर एक को रहती है इसलिए उनका वृत्तान्त दिया जाता है. उनके जीवन का संक्षिप्त विवरण मेरी प्रार्थना पर महाराज जी ने स्वयं लिखकर भेजा है जो आगे दिया जाता है किन्तु मैंने भी 10-12 वर्ष के समय में जो उनके बारे में जाना उसको बिना लिखे रह नहीं सकता.

जब मैं पहली बार होशियारपुर गया था तो महाराज जी के पास घर पर ही ठहरा था. उस समय जिस प्रेम भाव से मेरी मां व्यवहार करती थी, उसी ढंग से चौके में पास बैठा कर खाना खिलाया और पुत्रवत व्यवहार किया. उस समय ही मैंने यह समझा कि वही मेरी माँ है. उनके चेहरे से सच्चाई और भोलापन टपकता था. हृदय में छल-कपट के लिए कोई स्थान नहीं था.

मैंने यह भी देखा कि वह और लोगों से भी बड़े प्रेम से व्यवहार करती थीं. सेवा-भाव उनमें कूट-कूट कर भरा था. महाराज जी ने अपने वचनों में स्वयं स्वीकार किया है कि एक समय था जब 25-25, 30-30 सत्संगी दोनों समय प्रतिदिन इनके यहाँ ठहरे रहते थे और माता जी सारा दिन उनके भोजन आदि बनाने में लगी रहती थीं और यह सिलसिला 10-12 साल तक बराबर चालू रहा मगर कभी कोई शिकायत ज़ुबान पर नहीं लाईं.

एक बड़ा गुण उनमें यह भी था कि वे कभी बेकार नहीं रहती थीं। हर समय काम में लगी रहती थीं. अवकाश के समय में विशेष कर वह चरखा काता करती थीं. अन्तिम दिन भी वे कते हुए सूत के पिंडे शाम तक बनाती रहीं और थक कर सो गईं.

उनके जीवन की एक मुख्य घटना है जो मुझे श्री गोपाल दास जी से ज्ञात हुई. एक समय जब महाराज जी सुनाम स्टेशन पर स्टेशन मास्टर थे तो वहाँ एक सेठ ने एक नया आलीशान मन्दिर बनवाया था. पडोस की स्त्रियाँ वहाँ माता जी को लिवा ले गईं.। वहाँ पर एक महन्त रहता था. सब स्त्रियों ने उस महन्त के पैर छुए मगर माता जी ने उन सबके आग्रह पर भी उनके पैर

छूने से मना कर दिया और कहा कि मैं सिवाय पति के और किसी के पैर नहीं छूती.

उनके जीवन की इतनी घटनाएँ हैं कि यदि लिखा जाए तो एक बड़ी पुस्तक बन जाएगी. यहाँ केवल शिक्षाप्रद बातों का वर्णन आवश्यक समझ कर दिया है आगे जो वृत्तान्त महाराज जी ने स्वयं अपनी लेखनी से लिखा है वह दिया जाता है.

(देवीचरन मीतल)

(परम संत दयाल फकीर चंद जी महाराज द्वारा)

मेरी स्त्री भागवती दिनांक 15-12-63 को परलोक सिधार गई मैंने गरुड़ पुराण का रहस्य अपनी स्त्री की मृत्यु पर लिखा. क्यों? जीवन में पहली बार मुझे गरुड़ पुराण के सुनने का अवसर मिला है. इसी क्रम में देवीचरन ने लिखा कि मैं उनके जीवन पर कुछ प्रकाश डालूँ इसलिए लिख रहा हूँ.

मेरी शादी 1911 ई. में हुई. दिन याद नहीं है. इतना याद है कि उस दिन अंग्रेज़ सम्राट दिल्ली आया था और उसका दरबार हुआ था. शायद दिसम्बर का महीना था. मैं विवाह करना नहीं चाहता था. विचार साधन और अभ्यास की ओर थे. दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज उस समय अमेरिका में थे. उनकी आज्ञा भी नहीं ले सकता था. पिता जी के मजबूर करने पर रज़ामंद हो गया.

पहली बार मैं जब अपनी स्त्री से मिला तो मैंने कहा कि भागवान् ! मैं निर्धन हूँ. संभव है मैं तुम्हारी सांसारिक आवश्यकताओं को पूरा न कर सकूँ, इसलिए यह समझ लेना कि हम दोनों घर के नौकर हैं. हमने केवल रोटी और कपड़ा ही लेना है. उसके पिता ने भी अपनी लड़की को यही कहा था कि फकीर चंद को किसी वस्तु के लिए तंग न करना. इस स्त्री ने जीवन भर सादा वस्त्र और साधारण भोजन के सिवाय मुझसे कभी कुछ नहीं माँगा. उसको थोड़ी बहुत बीमारी रहती थी मगर जब तक रोग के कारण बेबस नहीं हुई उसने कभी इलाज नहीं कराया ताकि खर्च न हो.

मेरे माता-पिता की अत्यन्त सेवा की, यहाँ तक कि दाता दयाल ने प्रयत्न किया कि उसका पासपोर्ट बनवा कर बग़दाद उसको भेज दें मगर उसने मेरे पिता की सेवा को अधिक आदरणीय समझा और घर नहीं छोड़ा. कुटुम्ब परवर बहुत थी. मेरे भाई के बच्चों की बहुत कुछ सेवा की. उसका फल यह हुआ कि गोपाल दास ने उसकी 7 साल निस्स्वार्थ शारीरिक सेवा की.

वह आत्माभिमानी थी. किसी की अनुचित बात को सहन नहीं कर सकती थी. दाता दयाल ने उसको यह आज्ञा दे रखी थी कि यदि कोई अनुचित रूप से बुरा-भला कहे तो वह एक के बदले सोलह सुनाये. इस पर वह जीवन भर आरूढ़ रही.

इसको पहले कर्मों के कारण साधारणतया डरावने स्वप्न आया करते थे. दाता दयाल इसे नाम

नहीं देना चाहते थे मगर मेरे हठ करने पर उन्होंने नाम दान प्रदान कर दिया. साधन के समय अभ्यास में भय लगा करता था. दाता दयाल को लिखा. उत्तर मिला था. प्रारब्ध कर्म ऐसे ही हैं. अभ्यास छोड़ दे. तुम्हारी संगत से कर्म कट जाएँगे.

मैं 12 वर्ष बसरा बग़दाद में रहा. अपने विचारों के कारण गृहस्थ से विरक्त रहता था मगर इस समय में जब वह युवा थी किसी तरह की शिकायत मुझे या मेरे माता-पिता को नहीं हुई. आज 24 वर्ष से मैं और वह बहैसियत पति और स्त्री नहीं थे. उसने मुझे ख़ुशी से इजाजत दी हुई थी.

यद्यपि वह अभ्यास साधन आदि नहीं करती थी मगर उसका विश्वास मालिक पर अवश्य था. मैं भक्त होता हुआ तथा ज्ञानवान् होता हुआ कभी-कभी घबराया करता था मगर वह नहीं घबराई बल्कि मुझे हौसला दिया करती थी. वह मेरे और स्वास्थ्य खाने-पीने का बड़ा भारी ख्याल रखती थी. बीमारी की दशा में भी लड़की या नौकर को हमेशा मेरे भोजन की बाबत हिदायत करती रहती थी.

पिछली उम्र में उसको सत्संगियों से स्वतः ही ग़ैरियत आ गई थी विशेषकर स्त्रियों से, क्योंकि जब ये लोग मुझे अपने अज्ञान की भक्ति के कारण अधिक तंग करते थे तो वह व्याकुल जाती थी मगर बीमारी से पहले इसने सत्संगियों की बहुत सेवा की थी. अपने बच्चों और घर से मोह अधिक रखती थी.

दाता दयाल ने उसकी हर तरह से संभाल की। एक बार अढ़ाई हज़ार रुपया प्रसाद के रूप में उसको वापस किया. 35 वर्ष के बाद बीस हज़ार रुपया मेरी स्त्री को दे गए. किसी समय दाता दयाल के संकेत के अनुसार मुझे कई जगह दान देने की आवश्यकता पड़ी. इसने पहले बैंक से रुपया निकलवा कर भेजने को कहा मगर चूँकि वह रुपया दाता दयाल ने उसको दिया हुआ था और कहा था फकीर! अपना कमाओ और खाओ. यह रुपया भागवती की सन्तान के लिए है. (ओह दाता दयाल! तेरी याद आती है तो आँसू आ जाते हैं) मैंने उसे स्वीकार नहीं किया. तब उसने अपने कुल ज़ेवर जो मैंने बसरा की नौकरी से बनवाए थे मुझे दे दिए और ख़ुशी से दिए. इसका फल उसको यह मिला कि मैंने उसकी बीमारी पर काफ़ी रुपया खर्च किया और यह रुपया गिरिधर सिंह वारंगल निवासी ने मुझे उसके इलाज के लिए दिया. मगर मित्रो, मैंने लिया और खर्च किया. कई बार मेरी स्त्री ने कहा,"जब जवान थे, कमाते थे अपना रुपया पानी की भाँति बाँटा. अब बुढ़ापे में दुम हिलाकर सत्संगियों से लो." उसके शब्द कठोर हुआ करते थे मगर थे सच्चे!

मैंने आवेश में या फ़क़ीरी के भावों के कारण रुपये की परवाह नहीं की. सन 1926 ई. तक तो निर्धनता ही निर्धनता रही. सन 1919 तक सब रुपया माता-पिता की भेंट होता रहा. इसके पश्चात दाता दयाल ने सँभाला.

उसके मरने के बाद घर के भिन्न-भिन्न ट्रंकों में से 1979 रुपए निकले. इसमें से कुछ रकम

उसके लड़के ने दी हुई थी और कुछ उसने किफ़ायतशआरी करके जोड़ा हुआ मालूम होता है. मेरे लिए वह रकम बड़ी नियामत की है. दाता की आज्ञा है कि फकीर अपनी जीविका आप कमाओ. अब बुढ़ापा आ गया. अपनी रोटी कमा लेता हूँ मगर कब तक, मेरी स्त्री का भला हो जिसने मेरे ऋण को निबाहने के लिए वह रकम इकट्ठी करके मेरे लिए छोड़ गई.

मैं महसूस करता हूँ कि मैं अपना कर्त्तव्य पूरी तरह नहीं निबाह सका, यद्यपि मैंने अपनी ओर से अपने सच्चे हृदय से अपने ख्याल के अनुसार सच्ची हमदर्दी और सेवा की है मगर वह एक सच्ची स्त्री की हैसियत में अपना कर्त्तव्य पूरा कर गई और अन्त समय बिना किसी कष्ट के या शारीरिक गति के प्राण त्याग गई.

गरुड़ पुराण रहस्य

द्वितीय भाग

गरुड़ पुराण पर प्रश्नोत्तर परम दयाल फकीर चंद की महाराज

चूँकि मेरी स्त्री की मृत्यु चारपाई पर हुई इसलिए मेरे कुटुंबी जनों ने कहा कि इनका क्रिया कर्म कुरुक्षेत्र में कराना चाहिए. उन्होंने गरुड़ पुराण की कथा भी रखवाई. मेरे कुछ मित्र जिनका संबंध मेरी तरह सन्त मत से है उन्होंने कई प्रश्न किए तथा अन्य ब्राह्मणों ने इस विषय पर किए. जो प्रश्न और उत्तर हुए उनको लेख बद्ध किया जाता है.

प्रश्न- गरुड़ पुराण के कथनानुसार अन्त समय यह वैतरणी नदी और यम दोनों के हाथों से जो कष्ट होते हैं क्या ये ठीक हैं.?

उत्तर- हां, मगर सबके लिए नहीं। केवल उनको जो निगुरे हैं. जिन्होंने गुरु धारण नहीं किया उनको अवश्यमेव नरक और स्वर्ग भोगने पड़ते हैं?

प्रश्न- फकीर साहब! आप तो निष्पक्ष व्यक्ति हैं मगर यह गुरु मत का पक्ष क्यों?

उत्तर-मेरी ओर देखो और मेरी बात को सुनो. क्या स्वप्न की अवस्था में अनेक लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के दृश्य नहीं देखते हैं? कोई पहाड़ से गिरता है.। किसी को साँप बिच्छू डंक मारते हैं. कोई शेर चीता आदि से भय खाता है. कोई गंदी नालियों में फिरते हैं. कोई समुद्र या नदी में तैरते हैं. कोई स्वप्न में बड़बड़ाते हैं या रो उठते हैं. कोई अच्छे-अच्छे दृश्य देखता है. यह हमारा स्वप्न का जगत क्या है? यही तो नरक और स्वर्ग का दृश्य है, जो हमको कष्ट देता है या सुखी करता है.

यमराज और धर्मराज का मार्ग उससे बचाव

प्रश्न- यह ठीक है मगर यह स्वप्न है. क्या मरने के बाद भी यही दशा होती है?

उत्तर- मृत्यु भी एक लम्बा स्वप्न है, जिस प्रकार इस स्वप्न के पश्चात जाग्रत अवस्था आती है

इसी प्रकार इस मृत्यु के लम्बे स्वप्न के बाद भी जाग्रति आती है, क्योंकि प्रत्येक स्वप्न का परिणाम जाग्रति होना अनिवार्य है. इस हमारे स्वप्न में या हमको कोई दूसरा आदमी आवाज़ देकर या शरीर को हिलाकर जगा देता है अथवा हम स्वयं जागते हैं मगर मृत्यु के बाद जो हम अपने मानसिक स्वप्न या संकल्प-विकल्पों से जाग्रत होते हैं तो चूँकि यह शरीर नहीं होता है इसलिए या तो हम किसी दूसरी देह में जाएँगे या उस स्वप्न से या मानसिक कल्पनाओं से ऊपर जाकर किसी और जगह रहेंगे. इस स्वप्न के समय को यमराज या धर्मराज का मार्ग कहते हैं.

जो आदमी अकाल मृत्यु से मरते हैं अर्थात, जिन्हें मरने का ज्ञान नहीं होता है कि वे मर रहे हैं वे अपनी मानसिक दुनिया में अपने ही स्वप्न में रहते हैं, क्योंकि उनका शरीर नहीं होता है इसलिए उनका सूक्ष्म शरीर भटकता रहता है. ऐसे प्राणियों की सद्गति के लिए अर्थात् उनको उस स्वप्न से या इस भटकने से बचाने के लिए यह अनिवार्य है कि कोई उनके सूक्ष्म शरीर के स्वप्न को तुड़वा दे और उनको यह विश्वास करा दे कि यह स्वप्न जो तू देख रहा है यह वास्तव में तेरा अपना ही ख्याल है और तू इससे निकल। ये जितने क्रिया-कर्म आदि हैं उनका असली मन्तव्य यही है कि मरने वाले के स्वप्न को तोड़ दिया जाए और उसको जगा दिया जाय, ताकि इसकी सुरत जाग्रत होकर अपनी कल्पना से बाहर हो जाय.

प्रश्न- क्या कोई प्रमाण आप दे सकते हैं?

उत्तर- कुछ वर्ष की बात है एक पढ़ा लिखा आर्य समाजी गुजरांवाला के ज़िले का निवासी था. (पूरा याद नहीं मगर समाचार-पत्र में पढ़ा था) वह एक मकान में किराए पर रहा. उसको रात को एक सूक्ष्म शरीर वाली स्त्री ने आकर कहा कि वह एक ब्राह्मणी की आत्मा है. उसका प्रेम एक मुसलमान से था. उसके साथ रही मगर उसने अपना धर्म नहीं बदला. जब वह मर गई तो मुसलमानों ने उसको क़ब्रिस्तान में दबाने नहीं दिया. उसके मुसलमान पति ने उसको अपने ही मकान में दबा दिया. समय के बाद उसका मुसलमान पति भी मर गया. उस ब्राह्मणी के सूक्ष्म शरीर ने इस आर्य समाजी को कहा कि मकान के अमुक हिस्से में क़ब्र को खुदवा कर उसकी हड्डियाँ जला दे और हरिद्वार में पहुँचा दे. इस आर्य समाजी सज्जन ने ऐसा ही किया और हरिद्वार में जाकर उसकी हड्डियाँ फैंक दीं. इसके पश्चात फिर उस औरत ने दर्शन नहीं दिए.

बात यह है कि मरने वाला जिस प्रकार के विचार अपने मन में रखता है वही सूक्ष्म शरीर देखता रहता है. चूँकि वह स्त्री ब्राह्मणी थी उसको हिन्दू धर्म से ऐसे ही संस्कार मिले हुए थे. वह प्रेत-योनि में रहती थी. जब उसके ख्याल की पूर्ति हो गई वह चली गई.

दूसरे दाता दयाल महर्षि जी महाराज की घटना है. उन्होंने एक मुसलमान स्त्री की आत्मा को देखा था जिसने अपने बच्चे की बीमारी की दवा बताई थी. जिन्हें अपने मरने का ज्ञान होता है कि वे मर रहे हैं और उनके सूक्ष्म शरीर को अर्थात् मन को सत्संग द्वारा ज्ञान हुआ है कि मनुष्य क्या, है कहाँ से आया है? कहाँ को जाना है तो वह अपने आदि तत्त्वों, असली तत्त्वों या

असलियत की ओर स्वयं चले जाएँगे और इस मानसिक शरीर के बन्धनों से स्वतंत्र हो जाएँगे.

यदि मन को यह ज्ञान नहीं है और वह सिवाय अपने मन के विचारों के और कोई जीवन नहीं जानते हैं उनको इनके रिश्तेदार या मित्र अपने कर्म से या बातों से बोध कराकर उनके स्वप्न को तोड़ देते हैं और वह प्राणी फिर मानसिक जगत में आकर दूसरे शरीर में चला जाता है और पहले स्वप्न अर्थात् जन्म की घटनाओं को भूलकर एक नया स्वप्न यानी जीवन धारण करता है. इसलिए प्राणी के लम्बे स्वप्न को तोड़ने के लिए क्रिया कर्म है.

इसलिए राधास्वामी मत के बारह मासा में सावन मास के शब्द में लिखा है कि बिना गुरु भक्ति और नाम भक्ति के कोई प्राणी इस यमराज और धर्मराज के चक्र से बच नहीं सकता है. वाणी पढ़ कर देख लो.

प्रश्न- तो क्या ये सब गुरु भक्त यमराज के चक्र से बच जाएँगे?

उत्तर–हाँ और नहीं! हाँ इसलिए कि यदि किसी ने किसी सत्पुरुष के सत्संग से भेद या रहस्य को जान लिया है तो चल जाएगा और यदि किसी ने रस्मी तौर से गुरु मत को धारण किया है और अज्ञान तथा भ्रम से केवल मत्थे टेकता, भेंट चढ़ाता है वह किसी सूरत में इस मन के चक्र से नहीं निकलेगा मगर फिर भी वह नरक में न जाएगा. कहा है-

बुरा भला जो गुरु भगत,
कबहूँ नर्क न जाय ।।

प्रश्न–'यह क्यों और कैसे?"

उत्तर–'चूँकि मरते समय उसके विश्वास के अनुसार उसके अन्दर कोई न कोई रूप चाहे राम का चाहे गुरु या कृष्ण का अथवा किसी और का प्रकट होगा उसका मन सिवाय इस रूप के किसी दूसरी ओर नहीं जायेगा. इसलिए उसके मन के संकल्प न उठेंगे और वह उस वैतरणी नदी में जिसका उल्लेख गरुड़ में है, नहीं जाएगा. यह नरक या वैतरणी नदी आदि मानसिक और कल्पित हैं और चूँकि मनुष्य के गंदे, स्वार्थपरता, लोभ, लालच आदि के भाव या संस्कार मनुष्य के चिदाकाश पर मौजूद रहते हैं इसलिए उसके लम्बे स्वप्न अर्थात मृत्यु के बाद या जीवन के स्वप्न में फुरते हैं. यदि किसी भी इष्ट वाले को सत्संग द्वारा कुछ समझ आई है तो वह नरक में नहीं जा सकता है अर्थात उसका मानसिक स्वप्न जो चिदाकाश के बुरे या गंदे संस्कारों के कारण आता है, ध्यान योग की बरकत से नहीं आएगा. इसलिए कहा गया है कि- 'बुरा भला जो गुरु भगत कबहुँ नरक न जाय.'

नरक स्वर्ग वैतरणी

प्रश्न- जो बुराइयाँ या गलत और गंदे विचार मनुष्य ने लिए हुए हैं वे कैसे दूर होंगे.

उत्तर- वे कर्म ध्यान की शक्ति से, अपना मानसिक अर्थात कल्पित खेल नहीं कर सकेंगे किन्तु उनका जो संस्कार है वह संस्कार उसको दूसरे शरीर में प्रभाव दिखाएगा. वह कल्पित दुःख कहीं

भोगेगा.

प्रश्न-तो यह नरक स्वर्ग या वैतरणी कहीं बाहर नहीं हैं?

ये मेरी समझ में कल्पित हैं. जिस प्रकार हम अपने ख्याल से स्वप्न में अपनी नई दुनिया बना लेते हैं इसी प्रकार अन्त समय प्राणी अपने संकल्प से अज्ञानवश अपनी मानसिक रचना आप बना लेते हैं. यद्यपि वह कल्पित होती है मगर वह कल्पना जब तक है अति दुःख या सुख का कारण बनती है.

यदि देखा जाए तो गरुड़ पुराण सत है. वहाँ दो मार्ग से वह सूक्ष्म शरीर जाता है-एक यम मार्ग दूसरा धर्मराज का मार्ग. जिस तरह प्रत्येक स्वप्न के बाद उत्थान होता है इसी प्रकार पहले मानसिक कल्पना में जो यम का मार्ग है इससे प्राणी गुजरता है. चूँकि हर संकल्प के बाद उत्थान का होना और किसी अन्य जगह ठहराव का आना लाजिमी है इसलिए यमराज के मार्ग के आगे धर्मराज का मार्ग आता है और यहाँ से फिर उस प्राणी की दूसरी योनि कर्मानुसार मिलती है. यह गरुड़ पुराण का कहना है.

जो पहले ही ज्ञानारूढ़ होकर मरते हैं उनको यममार्ग में जाने की कोई आवश्यकता नहीं. वह ध्यान योग की शक्ति से तुरन्त ही इन संस्कारों की बदौलत जो उसके चिदाकाश पर होते हैं दूसरी योनि ले लेते हैं इसलिए राधास्वामी दयाल ने कहा है:-

यम पुर से अब सत गुरु राखें।
बहुत जीव नरक को ताकें ।।

इसलिए कोई ध्यान योग को करने वाला या किसी का ध्यान करने वाला किसी सूरत में इस वैतरणी नदी या नरक लोक में नहीं जा सकता है.

क्रिया-कर्म

प्रश्न- जो प्राणी अकाल मृत्यु से मरते हैं उनको तो अपने इष्ट का ध्यान रहता ही नहीं होगा. उनका क्या इलाज है?

उत्तर- उनके सूक्ष्म शरीर का जीवन यानी लम्बे स्वप्न को वे मनुष्य नहीं तोड़ सकते हैं जिनका ध्यान शरीर और मन में ही रहता है. दूसरे शब्दों में जिन्होंने जन्म-मरण को ही जीवन समझ रखा है, ऐसे प्राणी जब अपना ख्याल देंगे वे शारीरिक और मानसिक ही देंगे. मरने वाला अपने शरीर को न जाने हुए चूँकि छोड़ गया हुआ है वह इसलिए जाग्रत नहीं होगा. इसलिए पिछले महा पुरुषों ने उसकी क्रिया-कर्म के लिए कुरुक्षेत्र या हरिद्वार आदि में या नारायण बलि आदि के द्वारा उनकी प्रेत-योनि दूर करने का प्रबन्ध किया है. प्राचीन काल में इन स्थानों पर आत्मनेष्टी महापुरुष जो शब्द और प्रकाश के साधक थे वे अपना ख्याल ब्रहम या शब्द ब्रहम में बैठकर देते थे. उससे उनकी गति हो जाती थी यानी उनका लम्बा स्वप्न टूट जाता था.

प्रश्न- क्या इस प्रकार ख्याल देने से दूसरे का स्वप्न टूट सकता है?

उत्तर- यदि मेस्मेरिज़्म वाला अपने ख्याल से किसी को बेहोश करके उससे भिन्न-भिन्न प्रकार के उत्तर ले सकता है और मौजूदा टेलीविज़न और टेलिपैथी ठीक है तो यह भी हो सकता है. ख्याल की धार में अत्यन्त शक्ति है बशर्ते कि ख्याल दाता साधक और एकाग्रचित्त हो.

यद्यपि हिन्दू गया और हरिद्वार में यह कर्म कराते हैं मगर मेरा निज अनुभव यह है कि वहाँ उनकी गति शायद न हो सकती हो क्योंकि वहाँ के आचार्य या पांडे आदि की रहनी आत्मिक नहीं होती है. जो जैसा है वैसे ही भाव या रेडिएशन उसके अन्दर से निकलते रहते हैं. इसलिए मैं अपनी स्त्री का क्रिया कर्म स्वयं 22-12-63 को सत्संग में करूँगा.

सांसारिक और व्यावहारिक लोक-लाज के लिए परिवार वालों को अधिकार दे दिया है कि जैसा वे अच्छा समझते हैं अपनी माता या चाची ताई के लिए जो चाहे करें.

प्रश्न- आप गरुड़ पुराण को सत मान रहे हैं. इनमें पिंड दिए जाते हैं. क्या आप भी अपनी क्रिया कर्म में पिंड देंगे?

उत्तर - मित्रो! हर एक भक्त याद तो करता है उस ईश्वर को या अपने इष्ट को मगर उसका सुमिरन करने या प्रेम करने के लिए उसकी कोई न कोई मूर्ति बनाता है अथवा कोई न कोई चिहन बना लेता है. यह पिंड वास्तव में मृतक प्राणी की मूर्ति मानी जाती है और उसके अनुसार मनुष्य अपना ख्याल उस प्राणी को देता है. पिंड तो केवल एक चिहन ख्याल देने के लिए है और कोई प्रयोजन नहीं. मैं अपने ख्याल से स्त्री का ध्यान करके उसको मुखातिब करता रहता हूँ और उस दिन करूँगा.

प्रश्न - क्या आपके ऐसा करने से आपकी स्त्री का सूक्ष्म शरीर आपकी बात सुन लेगा?

उत्तर- यदि धन्ना भक्त का ईश्वर पत्थर द्वारा बोल सकता है, यदि नामदेव की मूर्ति उसका दिया हुआ भोजन खा सकती है, तो मेरी स्त्री भी मेरे ख्याल को सुन सकती है.

प्रश्न- मगर यह हो सकता है कि धन्ना भक्त का ईश्वर उसका अपना ही मन हो और नामदेव की मूर्ति भी उसकी अपने ही मन की वृत्ति हो तो आपकी यह क्रिया (अमल) भी आपका ही मन होगा.

उत्तर–ठीक है, मगर यदि मन की शक्ति रूप धर सकती है तो मन की वृत्ति दूसरे के सूक्ष्म शरीर को भी गति दे सकती है. विचार की शक्ति पहिले विचार को ही बदलती है. विचार के संगठन का नाम मन है, सूक्ष्म शरीर है.

प्रश्न–बात साफ हो गई मगर आवागमन के चक्र से रिहाई क्या कोई बाहरी गुरु कर सकता है?

उत्तर -वहाँ भी बाहरी गुरु की दया की आवश्यकता है. वह गुरु सत्संग में सत्संग कराकर मनुष्य की तवज्जह को या उसकी सुरत को मन से पृथक कराकर अपने आत्म-स्वरूप प्रकाश रूप में ठहरने की सच्ची हिदायत दे सकता है और विश्वास करा सकता है. यदि मनुष्य चाहे तो अपने आपको मन के चक्र से अलग रख कर शब्द और प्रकाश के रूप में अपने आपको बदल

सकता है. सच्चे संत के सत्संग से मनुष्य स्वयं एकाग्रचित्त हो जाता है और उसका ख्याल बदल जाता है.

प्रश्न--- क्या कोई बाहरी गुरु जिस तरह कोई किसी को स्वप्नावस्था में प्यार करता है इसी प्रकार प्राणी को शब्द और प्रकाश में अपने ख्याल से ले जा सकता है?

उत्तर ---हां, बशर्ते कि वह आदमी इस बात का इच्छुक हो. यमराज मार्ग में तो चूँकि सुरत मन में रहती हुई अपने कल्पित दुःखों से घबराई हुई होती है वह तो शीघ्र चेतवान हो सकती है क्योंकि वह मानसिक रूप से दुखी है मगर दूसरे लोग संसार में रहते हुए दुखी व अशान्त नहीं होते. जो होते हैं उनको महापुरुष अपने ख्याल की धार यानी हित के संस्कारों से इस मन के चक्र से ऊपर ले जा सकते हैं.

प्रश्न ---कोई प्रमाण?

उत्तर -मेरा जीवन! जिज्ञासु था, खोजी था. मन के चक्र ने इतना बाँधा हुआ था कि इससे निकलना कठिन था किन्तु आकांक्षा थी. दातादयाल (महर्षि शिव) ने युक्ति निकाली कि जिससे मुझे सार तत्त्व और असलियत का भेद मिल गया. अब मैं इस मन के चक्र में फँसता नहीं हूँ और अपने आपको शब्द व प्रकाश रूप मानता हुआ प्रकाश और शब्द की सैर करता रहता हूँ. कल की मालिक जाने!

प्रश्न---गरुड़ पुराण में एक जगह लिखा हुआ है कि मनुष्य यमराज के मार्ग से गुजरता हुआ धर्मराज के दरबार में जाता है. वहाँ से फिर विभिन्न योनियों में आता है और एक जगह लिखा है कि धर्मराज के दरबार के बाद फिर मनुष्य योनि में आता है. इस संबन्ध में आपका क्या विचार है.

उत्तर---जो प्राणी धर्म परायण नहीं होते हैं वे यमराज के मार्ग से अर्थात अपने कल्पित विचारों में रहने के पश्चात विभिन्न योनियों में आते हैं मगर जो धर्मराज के दरबार में पहुँच जाते हैं वे फिर मनुष्य योनि में ही आयेंगे. अन्य योनि नहीं भोगते हैं. अपने संस्कारों को साथ लिए हुए अपने कर्मानुसार मनुष्य योनि में दुःख-सुख आदि भोगते हैं.

प्रश्न---धर्मराज से क्या अभिप्राय है?

उत्तर ---किसी एक सिद्धान्त का पूर्णतया दृढ़ विश्वासी होना ही धर्म कहलाता है. जब मनुष्य अपनी समस्त कल्पनाओं का किसी एक सिद्धान्त के साथ लगाव कर लेता है. तो वह सिद्धान्त उसकी समस्त कल्पनाओं को एकाग्र करके एक केन्द्र पर ले आता है. देखो! आप लोग अभ्यास करते हैं. चूँकि आपके अभ्यास का कोई प्रयोजन है और इस प्रयोजन को प्राप्त करने के लिए अनेक बार विभिन्न बातें सोचते हो मगर अन्त में इन कुल वासनाओं या विचारों को जो अपने ध्येय को प्राप्त करने के लिए सोचे थे, ध्येय के पूरा होने पर छोड़ देना पड़ता है अथवा वे छूट जाते हैं, इसी तरह जिस मनुष्य ने किसी भी ध्येय को जीवन में सामने रखा उसने उसके प्राप्त करने के लिए

जो-जो कुछ अनेक प्रकार के विचार लिए वे सब समाप्त हो जाने हैं. इसलिए धर्म ही मनुष्य की सहायता करता है और वह नरक स्वर्ग के चक्र से मनुष्य को निकाल कर एक स्थान पर पहुँचा देता है. इसलिए जिसने जीवन का कोई ध्येय नहीं बनाया और उसकी ऐसे ही गुज़री जिस में उसकी वृत्तियाँ उसको विभिन्न प्रकार के खेलों या कर्मों में फिराती रहीं, वह मरने के पश्चात यमराज के मार्ग से होता हुआ फिर अपने कर्मानुसार विभिन्न योनियाँ लेता रहेगा और यदि कोई धर्म या ध्येय है तो उस ध्येय को पूर्ण कर लेने के लिए फिर मनुष्य योनि ही मिलेगी.

प्रश्न–गरुड़ पुराण में लिखा है कि मृतक प्राणी धर्मराज के दरबार से होते हुए चार मार्ग से जाते हैं. दक्षिण, उत्तर, पूर्व और पश्चिम. उसका अभिप्राय क्या है.

उत्तर- मुझे क्या खबर कि गरुड़ पुराण के रचयिता ने यह कैसे लिखा है मगर मैं इस वर्तमान समय का आदमी हूँ. साधन किया है और करता हूँ. आचार्य बनकर जो अनुभव प्राप्त हुए हैं उनके आधार पर उत्तर देता हूँ.

मनुष्य का आत्मा प्रकाश स्वरूप है. इसका निश्चय मुझे साधन से हुआ है. मैं साधन में प्रकाश स्वरूप होता रहता हूँ मगर इस प्रकाश रूपी आत्मा पर मन अर्थात विचार के खोल चढ़े हुए होते हैं. जब प्राणी का आत्मा इस खोल को लिए हुए अपने शरीर को त्यागता है वह इस खोल में फिरता है. यदि उसके मन में सांसारिक वस्तुओं से संबन्ध है यानी उनकी वासना है तो वह उसका शरीर भारी होगा और वह दक्षिण की ओर यानी नीचे को उतरेगा. यदि उसके विचार प्रेम प्रीति, भलाई के होंगे तो उसकी वासनाएँ कम भारी होंगी और वह पूर्व या पश्चिम की ओर जायेगा. यदि वह निर्वाण आदि का इच्छुक होगा तो बिल्कुल हल्का होने के कारण ऊँचा चढ़ कर फिर ठहरेगा. पृथ्वी गोल है और यह हर समय घूमती रहती है. भारी वस्तु सदा आकर्षण शक्ति के नियम के अनुसार नीचे को आती है. फिर अपने-अपने केन्द्र पर बैठकर वहाँ अपनी-अपनी वासनाओं के अनुसार जो उसके चिदाकाश पर चित्रगुप्त के रूप में मौजूद हैं वह वहाँ से फिर विभिन्न योनियाँ लेता है.

मगर जो मरने से पहले अपने अन्तर प्रकाश और शब्द रूप हो जाता है वह सीधा बड़े प्रकाश में चला जाता है और शब्द का स्वरूप हो जाता है. इसलिए कोई धर्मराज का दरबार नहीं है क्योंकि धर्मराज मन का ही रूप है. यमराज, चित्रगुप्त, धर्मराज ये मन के तीन रूप हैं.

यमराज मन के अनेक प्रकार के ख्यालात, चित्रगुप्त मन के अन्दर दबी हुई वासनाएँ हैं और धर्मराज मन की एकाग्रता है.

धर्मराज का स्थान

प्रश्न- इस धर्मराज का स्थान कहाँ है?

उत्तर - मनुष्य के मन के अन्दर जो त्रिकुटी का स्थान है जहाँ ध्यान, ध्येय और ध्यानी तीन अवस्थाओं की एकत्रित अवस्था है वह हमारे अन्दर भी है और बाहर में भी है. शरीर के त्याग के

पश्चात मनुष्य का सूक्ष्म शरीर अपनी मानसिक का ख्याली दुनिया में चला जाता है. चूँकि उसके जीवन में किसी न किसी प्रकार की इच्छा होती है और प्रत्येक मनुष्य अपने ध्येय का कोई न कोई नाम या रूप बनाता है इसलिए वह रूप-रँग उसके सामने आते हैं और हर रूप-रँग चूँकि कल्पित होता है समय के पश्चात समाप्त हो जाता है. जब यह समाप्त होता है उसके मन को ठहराव मिल जाता है. इस ठहराव का नाम धर्मराज का दरबार है. चूँकि वासनाएँ गुप्त रूप से उसके अन्दर हैं इसलिए उनके गुप्त चित्र फिर उसको वासनाओं के पूरा करने के लिए दूसरे शरीरों में जन्म देती हैं.

मैंने गरुड़ पुराण को जीवन में पहली बार सुना था. कथन भयानक, रोचक और यथार्थ भी हैं. सोलहवां स्कंद यथार्थ है. पहले कथन रोचक और भयानक हैं. बहुत कम लोग यथार्थ को समझ सकते हैं. जो वर्णन शैली प्राचीन ऋषियों ने ग्रहण की वही संत कबीर आदि संतों ने ग्रहण की. यथार्थ बात में आकर्षण कम होता है. उसको केवल शुद्ध बुद्धि वाले मनुष्य समझ सकते हैं.

धर्मराज और त्रिकुटी

प्रश्न - राधास्वामी मत वाले आपके साथ कैसे सहमत होंगे. वहाँ त्रिकुटी में लाल रँग बताते हैं. ओम या मृदंग का शब्द सुनाई देता है. कितने ही योजन उसका विस्तार बताते हैं और आप धर्मराज के स्थान को त्रिकुटी का स्थान कहते हैं.

उत्तर--गरुड़ पुराण में भी धर्मराज के दरबार की कई योजन लम्बाई चौड़ाई आदि वर्णन की है. वहाँ सुनहरे रँग के प्रकाश का भी उल्लेख है. लम्बाई का अनुभव जो मुझे है वह सत्य है. नाप-तोल तो मैंने नहीं की शायद किसी ने भी न की हो! मालिक जाने! यमराज के मार्ग की भी काफ़ी लम्बाई गरुड़ पुराण में वर्णन की है अनुमान से सत्य मालूम होती है.

अनेक प्रकार के बाजों का भी उल्लेख है. मेरी समझ में हिन्दू धर्म वालों को अपने शास्त्रों का अमली अनुभव नहीं है और न राधास्वामी मत वालों को अपनी वाणी का अमली अनुभव है. यह रहस्य केवल गुरु कृपा से ज्ञात होता है. कलियुग में शास्त्र सबके सब कील दिए हैं ऐसा उल्लेख है और सन्त कबीर और राधास्वामी दयाल ने भी भेद को गुप्त रखा. सन्त कबीर का कथन है:-

धर्म दास तोहि लाख दुहाई ।
सार भेद बाहर नहिं जाई ।।

राधास्वामी दयाल कहते हैं:-

सन्त बिना कोई भेद न जाने,
वह तोहि कहें अलग में ।

परिणाम यह हुआ कि यह संतमत जो सनातन धर्म की एक शाखा है और केवल निवृत्ति मार्ग की शिक्षा देता है इसके अनुयाइयों में भी भिन्नता हो गई और हम सबके सब आपस में बंट गए. मैंने जगत कल्याण के ख्याल से बात को स्पष्ट कर दिया और वाणी जाल से आप तो निकल गया हूँ

दूसरों को निकालने का साहस कर रहा हूँ.

धर्मराज का दरबार -फिर जन्म

प्रश्न ---अच्छा! गरुड़ पुराण में लिखा है कि धर्मराज के दरबार से प्राणी वापस आकर जन्म लेते हैं. वे वापस आकर कैसे विभिन्न योनियों में आते हैं?

उत्तर–सूक्ष्म शरीर क्या है? वासनाओं का केन्द्र है. यह अपने लम्बे स्वप्न के जीवन को भोगता हुआ स्थिर हो जाता है. उसका स्वप्न यमराज है ठहराव धर्मराज है और वासनायें जो गुप्त हैं वह चित्रगुप्त का स्थान है. ठहराव के पश्चात फिर अपनी वासनाओं के कारण आकाश मण्डल में घूमता रहता है और यह वासना रूपी आत्मा अनुकूल विचार या वासना वाले स्त्री-पुरुष के दिमाग के साथ मिलकर उनके रक्त और वीर्य में आ जाता है और बच्चे के रूप में पैदा होता है और अपने कर्म का सिलसिला जारी रखता है. यही बात गरुड़ पुराण में है और यही बात सावन मास के व अन्य शब्दों में है जो सार-वचन पद्य में और गद्य में मौजूद है. वासना रूपी सूक्ष्म शरीर चुम्बक के नियम के अनुसार पुरुष व स्त्री के दिमाग में असर करता है.

चौरासी के चक्र से छुटकारा

प्रश्न - उसको 84 के चक्र से छुटकारा कब मिलता है?

उत्तर- जब तक यह प्रकाश और शब्द रूप न हो जाय, आवागमन का चक्र कभी समाप्त न होगा. उसका इलाज गरुड़ पुराण में गायत्री का अजपा जाप और गुरु स्वरूप का ध्यान है. यही बात राधास्वामी मत या संतमत में है. यहाँ अजपा जाप और गुरु स्वरूप का ध्यान है. इसके बाद प्रकाश का मार्ग है. गरुड़ पुराण की गायत्री क्या है?

ओम् भूः भुव: स्व: मह: जन: तप: सत्यम । तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योन: प्रचोदयात् ।।

अर्थात् इन श्रेणियों से आगे जो सावित्री रूपी प्रकाश है उसके दर्शन करो जो तुम्हारी बुद्धि का प्रेरक हो । यही बात राधास्वामी मत में है कि सहसदल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भंवर गुफा से आगे सतलोक जो शब्द और प्रकाश का भंडार है या मंडल है उसमें चलो । तब तुम्हारा आवागमन समाप्त होगा ।

प्रश्न -गुरु का ध्यान तो मानसिक ही होगा ?

उत्तर-हां, मगर गरुड़ पुराण या हिन्दू शास्त्रों में कहा है :-

गुरुर्ब्रह्मः गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वर:
गुरु: साक्षात् परब्रह्मः तस्मै श्री गुरुवेनम:

और संतमत में भी -

गुरु को मानस जानते,
ते नर कहिये अंध ।

दुखी होंय संसार में,
आगे जम का फंद ।।

जो यह समझते हैं कि गुरु फकीर चन्द पुत्र मस्तराम या कोई और मनुष्य है वे इस शरीर के फंदे से अर्थात मन के चक्र से नहीं निकल सकते ।

गुरु किया है देह को,
सत्गुरु चीन्हा नाहिं ।
कहे कबीर ता दास को,
तीन ताप भरमाहिं ।।

प्रश्न - ऐसा तो कोई भी नहीं समझता होगा । न हिन्दू लोग न सन्तमत वाले.

उत्तर- तो इन दोनों में से कोई भी आवागमन से बच नहीं सकता है. गरुड़ पुराण में स्पष्ट लिखा है कि परब्रह्म से आगे शब्द ब्रह्म है और सन्तमत में शब्द अनहद को सत्गुरु माना जाता है.

शब्द गुरु को कीजिए,
बहुत गुरु लबार ।
अपने अपने स्वार्थ को
ठौर ठौर बटमार ।।

प्रश्न - तो शब्द गुरु और शब्द ब्रह्म एक की वस्तु हुई?

उत्तर- हां इसलिए मैंने इस सत्संग में यह कहा था कि सनातन धर्म और संत मत एक ही बात है.

तत्त्व ज्ञान यही है कि मनुष्य शब्द ब्रह्म या शब्द योग का साधन करे और अपने आवागमन को समाप्त करे.

क्रिया कर्म

प्रश्न- जिन्हें तत्त्व ज्ञान न हुआ हो क्या उनकी क्रिया कर्म अनिवार्य है?

उत्तर-हां, अनिवार्य है. जितने भी ये संस्कार हैं सबके सब प्राकृतिक हैं. कोई किसी तरीके से करता है, कोई किसी तरीके से. मित्रो! जीवन इसी ख़ब्त में व्यतीत हुआ. मौज मुझे सत्पद की खोज के सिलसिले में दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी के चरणों में लाई थी! उनके संस्कारों के प्रभाव से मैं यह कामकाज 25 वर्ष से कर रहा हूँ. इस काम से मुझ स्वयं (अपने) को लाभ पहुँचा. स्त्री गुज़री और मैं यह समझता हूँ कि यह मौज ने मेरी बेहतरी के लिए ही किया. शेष जीवन में और साधन और अभ्यास करूँगा. अब कोई भी जिम्मेदारी नहीं रही. बड़ी लड़की को मेरा लड़का अपने साथ ले जायेगा. मैं अकेला हो गया. मुझे किसी बात का दावा नहीं है. जीवन का अनुभव है. जो भी जीवन शेष है जगत के कल्याण के लिए काम करूँगा. यदि कोई और प्रश्न आप

लोगों को पूछना हो तो पूछ सकते हैं. अपने निज अनुभव के आधार पर उत्तर दूँगा.

उत्तर- गरुड़ पुराण में तो बहुत विस्तार से काम लिया गया है. आपने संक्षिप्त रूप से काम लिया है.

उत्तर:- वह कृत्य की जो विधि वर्णन करता है वह लम्बी है. मैंने कृत्य को छोड़ दिया. यह परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है मगर तत्त्व बात सदा स्थित रहती है.

आवागमन

आवागमन है और यह तब टूटेगा. जब तक सूक्ष्म शरीर कायम है तब तक आवागमन विभिन्न लोक लोकान्तरों में होता ही रहता है.

प्रश्न- गरुड़ पुराण में जहाँ जाकर आवागमन का चक्र समाप्त होता है वह शब्द ब्रहम का स्थान है. तो सन्तमत के सिद्धान्त के अनुसार यह आवागमन का चक्र कहाँ समाप्त होता है?

उत्तर- देखो मित्रो! मेरा ज्ञान पुस्तकीय नहीं है. मैंने साधन किया है और करता रहता हूँ. साधन से और गुरु बनकर जो अनुभव प्राप्त हुए हैं उनसे सिद्ध होता है कि जब मैं शारीरिक मानसिक भान बोध भूल जाता हूँ तो प्रकाश और शब्द रूप हो जाता हूँ. वहाँ-

न कोई तख़य्युल ही रहा, न कोई रूप न रेखा ।
जो कुछ भी रहा शब्द रहा, या प्रकाश स्वरूपा ।।
इस प्रकाश में नानाविधि की शक्लें हैं बनतीं ।
जो कि ज़िन्दगी में कभी कभी थीं मैंने देखीं ।।

कभी-कभी अशब्द व अप्रकाशपने की अवस्था आती रहती है. वहाँ न मैं न तू. चिराग गुल पगड़ी गायब. उसके प्रमाण में दाता दयाल का शब्द है--

गुरु करो अपने आपको, अपना पता मिले ।
उसकी कीजो सैर हो आवे बका मिले ।।
बेख़ुद बनो ख़ुदी को, करो दिल से महवगर ।
अपनी ही ज़ाते पाक़ में, ज़ाते ख़ुदा मिले ।।
बेअक्ली व अक़्ल के धन्धों से हो निजात।
उस वक़्त ज़िन्दगी का भी, तुमको मज़ा मिले ।।

देखो मित्रो ! मैंने जीवन भर साधन योग, कर्म और भक्ति का सौदा किया है. सुरत शब्द का परिणाम बता दिया कि मेरी सुरत साधन करती हुई अशब्द और अप्रकाश गति में चली जाती है. केवल इस साधन से भी आवागमन नहीं छूटता.

प्रश्न- क्यों?

उत्तर-- साधन के समय आनन्द अवश्य मिलता है और फिर शारीरिकपने, मानसिकपने और आत्मिक अवस्था के भान-बोध अप्रकाश और अशब्द गति में जाने के बाद समाप्त हो जाते हैं मगर

फिर उत्थान होता है तो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक भान-बोध होता है । फिर सुरत इस भान-बोध को देख कर समय-समय पर इन भान-बोध से आकर्षित होती है और फँस जाती है. इसलिए केवल शब्द अभ्यास ही आवागमन से छुटकारा दिलाने वाला नहीं हो सकता. इसके साथ सत्पुरुषों का सत्संग जो स्वयं निर्बन्ध हों, अनिवार्य है.

मेरे मन में प्रेम, भक्ति, योग के संस्कार प्रबल थे. दाता दयाल ने दया करके आचार्य पदवी दे दी. सत्संगियों के तजुर्बों ने सिद्ध किया कि यह सब प्रेम भक्ति, योग, विचार इस सूक्ष्म प्रकृति के खेल हैं अर्थात मन के खेल हैं और यही मन का खेल माया कहलाती है. जब तक मनुष्य को पूर्ण ज्ञान नहीं होता है कि यह सत-चित-आनन्द सब प्राकृतिक हैं, आवागमन से दायमी (स्थायी) मुक्ति असम्भव है. यही बात गरुड़ पुराण में है. राधास्वामी मत में भी मुक्ति का यही रहस्य है. शब्द है :-

बंझा ने बालक जाया । जिन सकल जीव भरमाया ।।
अज्ञानी नाम कहाया । जन माया सकल उपाया ।।

आदि-आदि. यदि पूरा पढ़ना हो तो 'सार वचन' पद्य से पढ़ लो. इस शब्द की आगे कड़ी है :-

करमी विषयी और उपासक इन सब चक्कर खाया ।
काल जाल से कोई न बाचा, निज घर अपने कोई न आया ।।
तब सत्पुरुष दया चित आई, कलि में संत रूप धर आया ।
सब जीवों को दिया संदेशा, सत्त लोक का भेद बताया ।।

यही बात गरुड़ पुराण में है कि आवागमन से रिहाई न वेद पाठियों की, न व्रत रखने वालों की, न किसी और ढंग से होती है. केवल गायत्री के अजपा जाप, गुरु मूर्ति के ध्यान और परब्रह्म और शब्दब्रह्म की प्राप्ति से होती है.

दाता दयाल का साहित्य इस विषय पर बहुत ही उत्तम और व्याख्या सहित है.

राधास्वामी पन्थ और निवृत्ति मार्ग

प्रश्न - (एक सनातन धर्मी) जब यही बात है तो फिर राधास्वामी नाम की क्या आवश्यकता थी? इस पंथ को नया नाम क्यों दिया गया?

उत्तर- यद्यपि इस श्रुति मार्ग या अनहद मार्ग का वर्णन उपनिषद आदि में है और शब्दब्रह्म का संकेत गरुड़ पुराण में भी है मगर आप लोग कितने हैं जो इस मार्ग पर चलते हैं? इसलिए कलयुग में जीवों के कल्याण के लिए :-

सतयुग त्रेता द्वापर बीता काहु न जानी शब्द की रीता।।
कलियुग में स्वामी दया विचारी । प्रगट करके शब्द पुकारी।।
जीव काज स्वामी जग में आए । भवसागर से पार लगाए ।।
तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा । सत्तनाम सत्गुरु गति चीन्हा ।

जीवों का कल्याण प्रवृत्ति मार्ग में नहीं है. यहाँ सब लोग किसी न किसी रूप में द्वन्द्व की रचना के कारण दुखी हैं. सन्तमत केवल निवृत्ति मार्ग अर्थात भवसागर से पार कराने का भेद देता है. यही बात गरुड़ पुराण में है कि प्रत्येक व्यक्ति को धर्मराज का दरबार लाजिमी है और आवागमन लाजिमी है. यह संस्कार जो दिए जाते हैं केवल प्रवृत्ति मार्ग को श्रेष्ठ बताने के लिए हैं.

प्रश्न- क्या निवृत्ति मार्ग का संस्कार है?

उत्तर - वह भी है मगर यह केवल गायत्री का प्राणायाम है और संतमत में संक्षेप करके सत्नाम या पाँच नाम या राधास्वामी नाम का संस्कार है.

प्रश्न- राधास्वामी नाम का क्या अर्थ है?

उत्तर- राधा आदि सुरत का नाम । स्वामी आदि शब्द पहचान।।

गरुड़ पुराण में शब्दब्रह्म का उल्लेख है. ये झगड़े सब शब्द के हैं. यह राधास्वामी वास्तव में धुनात्मक नाम है जो हमारे असली तत्त्व की गति की आवाज़ (शब्द) है. आवाजे तो अनेक हैं मगर वे स्थूल, सूक्ष्म और कारण प्रकृति की गति का परिणाम होती हैं. इसी अन्तरीय धुनात्मक नाम के सुनने से मनुष्य की तवज्जह(सुरत) थिर हो जाती है. तब उसको असली, सच्चा और पूर्ण ज्ञान होता है.

प्रश्न-(वही सनातन धर्मी) इसके अधिकारी कहाँ है? इस समय राधास्वामी मत में लाखों आदमी शामिल हैं. क्या वे सब अन्तरीय धुनात्मक नाम को सुनते हैं?

उत्तर- आपने पक्ष और कटाक्ष की बात की है. क्या सब सनातन धर्म वालों की एक श्रेणी है? नहीं है. बीज डाला गया है. संस्कार किसी न किसी जन्म में अपना काम करेगा.

प्रश्न- आपकी इस बात से तो मैं यह समझता हूँ कि आप सनातन धर्म के अनुयायी हैं.

उत्तर- सनातन कहते हैं सबसे पुराने या आदि को. हम सबके सब मनुष्य ही हैं और हम सबका मार्ग एक की है मगर श्रेणियां हैं. मैंने इसलिए शब्द 'मानवता' का प्रयोग किया है. हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सबके सब मनुष्य हैं. हम सबका मार्ग प्राकृतिक है. हम अपने अज्ञान और भ्रमवश भेदभाव बना बैठे हैं.

प्रश्न-ऐसा क्यों?

उत्तर- गुरु नहीं मिला. कोई सच्ची बात बताने वाला नहीं मिला. यदि कहीं कोई है तो भी जनसाधारण परवाह नहीं करते हैं. आप भी मेरी स्त्री के मरने पर मातमपुर्सी के ख्याल से आ गए और आपने मेरा पिछला सत्संग जो गरुड़ पुराण के आधार पर हुआ था सुना. चूँकि वह अच्छा लगा, आप कई ब्राह्मण सज्जन आ गए हैं.

प्रश्नकर्त्ता- बात ठीक है. हम आपके राधास्वामी मत से स्वाभाविक दूर रहना चाहते हैं मगर यदि यही राधास्वामी मत है तो हम हर्षपूर्वक इन विचारों को स्वीकार करते हैं. आपने लौकिक व्यवहार को नहीं छोड़ा है.

उत्तर- देखो ! मैं स्वंय तो राधास्वामी मत में नहीं आया था. मुझे उस मालिक परमतत्त्व, राम या कोई और नाम रखो, के मिलने और आवागमन से बचने की लालसा थी. वर्षों रोने-धोने के बाद मेरा एक स्वप्न था जो मुझको दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गया था. वहाँ से मेरे भाग्य में यह राधास्वामी मत आया. चूँकि इस मार्ग में निवृत्ति मार्ग के ख्याल से सबका खंडन है मैंने प्रण किया था कि इस लाइन पर सच्चा होकर चलूँगा. और जो मिलेगा सबको बता जाऊँगा.

चूँकि वही खंडन गरुड़ पुराण के 16 वें स्कंध में मौजूद है यद्यपि वर्णन शैली का अन्तर है, इसलिए मेरी तमाम शंकाएँ समाप्त हो गईं और मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि निवृत्ति मार्ग के लिए निचली श्रेणियों में साधन, विश्वास आदि आवश्यक है.

प्रश्न-वह कैसे?

उत्तर- सहसदल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भंवर गुफा आदि का साधन अथवा भूर्भुव: स्वः मह: जन: तप: लोक का साधन अथवा मानसिक जगत में सुखदाई और लाभदायक होता है.

निर्वाण

प्रश्न- वह कैसे?

उत्तर- यह गरुड़ पुराण का विषय है. मेरी 'उन्नति मार्ग', 'मानव-धर्म-प्रकाश' पुस्तकों का अध्ययन करो. संतमत में 5 नाम का साधन भी मानसिक जगत की उन्नति का काम करता है. इन स्थानों पर साधन करने से मनानन्द, योगानंद, विवेकानन्द, ज्ञानानन्द आदि मिलते हैं. निर्वाण या अपने घर दायमी वास के लिए निज नाम, सत नाम, या राधास्वामी नाम आदि का साधन और किसी पूर्ण पुरुष, वीतराग पुरुष या परमसंत का सत्संग अनिवार्य हैं.

प्रश्न-सत्गुरु, पूर्ण पुरुष या वीतराग पुरुष किस जाति का होना चाहिए?

उत्तर- गरुड़ पुराण में लिखा है कि यह गरुड़ पुराण सूत जी ने ऋषियों को सुनाया था और विष्णु भगवान ने गरुड़ से कहा था. होगा. मगर सूत जी कौन थे? यह स्वयं इतिहास से समझ लो. यहाँ जाति पाँति का प्रश्न नहीं है. सब मनुष्य एक हैं. जो शब्द और प्रकाश स्वरूप हो गया और यदि वह सत्संग का सिलसिला चालू करता है तो वह भी पूर्ण पुरुष, वीतराग पुरुष हो सकता है.

प्रश्न-यह ठीक है कि सूत जी उच्च जाति या कुल के नहीं थे मगर वाणी तो विष्णु भगवान ने गरुड़ को कही थी.

उत्तर-उसका लिखने वाला कोई महान पुरुष है. सम्भव है वेदव्यास जी हों, जिन्होंने विष्णु भगवान का नाम रखकर वाणी कही हो क्योंकि गरुड़ पुराण में अजामिल आदि का उल्लेख आता है. इससे सिद्ध हुआ कि यह किसी सन्त का लिखा हुआ है. विष्णु और गरुड़ का एक नाम है. पुराण अलंकार और कथा के रूप में असलियत और सत पद के प्राकट्य के रूप हैं. जिस समय ये लिखे गए होंगे

उस समय ऐसी ही वर्णन शैली होगी. दाता दयाल ने पुराणों की बड़ी प्रशंसा की है और साथ ही सोसाइटी को कायम रखने का ख्याल रहा होगा ताकि सामान्य जनता एक ज़ंजीर में रहे और सामाजिक प्रबन्ध न बिगड़े.

प्रश्न-आवागमन कब मिटेगा?

उत्तर- जब मानव जीवन शब्दब्रह्म के लोक में चला जायेगा या शब्द स्वरूप हो जाएगा. जब तक ऐसा नहीं होता जीव विभिन्न अवस्थाओं में फिरता रहेगा. उस समय तक संस्कार अनिवार्य है. इसके बिना गुज़ारा नहीं होता.

प्रश्न- वे विभिन्न अवस्थाएँ क्या हैं!

उत्तर -योग की श्रेणियाँ, पिंड और अंड देश. गरुड़ पुराण में इसका वर्णन आया है मगर वहाँ संकेत मात्र है. राधास्वामी मत में इनकी पूर्ण व्याख्या है, यद्यपि वह भी अब वर्तमान समय के बुद्धिवाद के लिए सन्तुष्टि देने वाली नहीं है. मैंने इसलिए उनको वैज्ञानिक ढंग से अक्टूबर सन् 1962 ई. के 'मनुष्य बनो' में स्पष्ट कर दिया है.

चूँकि गुरु ऋण था, मेरा यह सन् 1905 ई. का प्रण था कि जो कुछ मेरी समझ में आयेगा वर्णन कर जाऊँगा और इस प्रण का असली कारण यह खंडन था जो राधास्वामी मत व कबीर मत में किया है. इसलिए मैंने यह काम किया. यह मौज होगी. और क्या कहूँ! मेरा विचार इन सब प्रश्नोत्तरों को प्रकाशित करने का है. वे सज्जन कहने लगे कि हमें तो बड़ी प्रसन्नता होगी. यहाँ तक कि हमने एक-दो समाचार पत्रों में भी आपके गरुड़ पुराण पर प्रकाश डालने का ज़िक्र किया है मगर एक बात का उत्तर दें.

गुरु की मुख्यता

प्रश्न - यह कि आप ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म, परब्रह्म का इष्ट नहीं रखते किन्तु केवल गुरु को ही मानते हैं.

उत्तर- मित्रो ! अब ज्ञात होता है कि ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म, परब्रह्म, शब्दब्रह्म ये तो मुझ में पहले भी थे और मैं इनसे ही निकला था, मुझे पता न था. दातादयाल ने दया करके अज्ञान भ्रम का पर्दा दूर कर दिया. अब चेतन्यता की दशा में सिवाय गुरु के किसका अहसान मानूँ. आप ही सोचो!

वन्दनम् सत ज्ञान दाता, वन्दनम् सत ज्ञानमय ।
वन्दनम् निर्वाण दाता, बन्दनम् निर्वाण मय।
भक्ति-मुक्ति योग युक्ति, आपके आधीन सब ।
आप ही हैं सिन्धु, सद्गति, जीव जन्तु मीन सब ।
आप गुरु सत्गुरु दया और प्रेम के भण्डार हैं ।
आप कर्त्ता धर्त्ता हैं, करतार जगदाधार है ।।

ऋद्धि सिद्धि शक्ति नौनिधि हैं चरण में आपके ।
बच गया भव दुख से जो, आया शरन में आपके।।
भक्ति दीजै नाम की, सतनाम में विश्राम दे ।
राधास्वामी अपना कीजै, राधास्वामी धाम दे ।।

इसलिए इस मानवता मन्दिर में दाता दयाल महर्षि शिव का और समस्त सत्पुरुषों का, जिन्होंने संसार में जीवों के कल्याण के लिए और अज्ञान भ्रम मिटाने के लिए काम किया है, साहित्य व महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज का स्टेचू रख रहा हूँ.

गरुड़ पुराण रहस्य

तृतीय भाग

गरुड़ पुराण पर प्रश्नोत्तर परमदयाल फकीर चन्द की महाराज

नोट - इस पुस्तक के द्वितीय भाग में परम संत दयाल फकीर साहब ने गरुड़ पुराण के रहस्यों को प्रश्न और उत्तर के रूप में संक्षेप में वर्णन किया है, मगर इस तृतीय भाग में गरुड़ पुराण के रहस्यों की बहुत कुछ व्याख्या की गई है और उनको राधास्वामी दयाल व कबीर साहब की वाणियों के आधार पर तथा वैज्ञानिक ढंग से समझाया गया है ताकि सन्तमत और सनातन धर्म वाले तथा शिक्षित वर्ग सन्तमत और गरुड़ पुराण की शिक्षा को समझ सकें और यह जान सकें कि दोनों की शिक्षा एक ही है और इस प्रकार असलियत को समझ कर पारस्परिक धार्मिक और साम्प्रदायिक भेदभाव व पक्षपात को मिटा सकें!

(देवीचरन मीतल)

मैं यहाँ दस साल से आ रहा हूँ. आज दाता दयाल के स्टेचू को देखा. ख्याल हुआ कि मैं इनके दरबार में क्यों गया. मुझे अपना बचपन याद आता है जब मालिक या परम तत्त्व से मिलने की तड़प में रोया करता था. उस समय मेरा स्वप्न था जो मुझे दाता दयाल (महर्षि शिव) के चरणों में ले गया. उन्होंने मुझे राधास्वामी मत की शिक्षा दी. चूँकि स्वामी जी की वाणी (माया संवाद) में सब मत और सम्प्रदायों का खंडन था अतः जीवन में देखना चाहता था कि राधास्वामी दयाल या कबीर ने जो कुछ कहा है उसमें कहाँ तक सच्चाई है. यह या तो मौज होगी या कर्म होंगे. इसका फैसला नहीं दे सकता.

मैं बचपन से इस लाइन में चला हूँ. बड़ा साधन और अभ्यास किया है और सच्चे शिष्य और सच्चे गुरु की हैसियत से जो अनुभव किए हैं वह कहता रहता हूँ और कहता हूँ.

सवा महीना हुआ मेरी स्त्री परलोक सिधार गई. ब्राह्मण कुल के नाते मेरे कुटुम्बी जनों के

कहने पर गरुड़ पुराण की कथा रखवाई. मैंने इस कथा को जीवन में पहली बार सुना था. गरुड़ पुराण की कथा मरने पर रखी जाती है. उस समय क्यों रखते हैं इसका कारण है.

गरुड़ पुराण सुनाने का समय

देखो ! जीवों को दुनिया में इतना आकर्षण है कि सच्चाई या सार तत्त्व को सुनने का उनके पास समय नहीं है और न रुचि है. गरुड़ पुराण में पूर्ण ज्ञान भरा है. जो राधास्वामी मत की शिक्षा है वही उसमें है. गरुड़ पुराण सुनाने का समय ऋषियों ने मनुष्य की मृत्यु के बाद रखा है. यह समय उन्होंने बड़ा सोच समझ कर रखा है क्योंकि मरने वाले के घर के तथा बाहर से आने वालों के दिलों पर एक प्रकार का प्रभाव दुनिया की तुच्छता का होता है, इसलिए यह कथा उस समय ही उपयुक्त समझी गई ताकि गरुड़ पुराण को सुनकर दुनिया से वैराग हो जाय. जब तक संसार से मनुष्य को उपरामता नहीं आती कोई व्यक्ति राधास्वामी मत या संतमत का अधिकारी नहीं होता है. संतमत की भी शिक्षा उनको है :-

विषयन से जो होय उदासा । परमारथ की जा मन आसा ।
धन संतान प्रीति नहीं जाके । खोजत फिरे संत गुरु जाके ।।

लाखों लोग राधास्वामी मत में हैं मगर क्या वे इस शिक्षा के अधिकारी हैं? मैंने गरुड़ पुराण सुना. उसमें वर्णन है कि जीव कहाँ से आता है और कहाँ जाता है, किन-किन अवस्थाओं में होकर उसे गुज़रना पड़ता है, आदि-आदि. इस सम्बन्ध में कबीर का कथन है :

उतते कोई न आइया, जासे पूछूँ जाय । इतते सब कोई जात है, भार लदाय लदाय ।।

उतते सत्गुरु आइया, बुधि मति जाकी धीर । भवसागर के जीव को, काढ़ लगायो तीर ।।

सत्गुरु

जीव कहाँ से आता है और कहाँ जाता है इस विषय को यथार्थ रूप से केवल सत्गुरु हृदयांकित करा सकता है. वह सत्गुरु वह है जिसे सच्चा ज्ञान और अनुभव हो अर्थात त्रिलोकी के अथवा तीनों प्रकार के शरीरों के परे का जिसे अनुभव हो.

हमारे तीन शरीर हैं :- स्थूल, सूक्ष्म और कारण! इनसे परे वह परम तत्त्व है जो इन तीनों में रहता है. स्थूल शरीर हमारा देह है. सूक्ष्म शरीर हमारा मन है. यह संकल्प का या वासना का केन्द्र है. कारण शरीर शब्द और प्रकाश है. वह आत्म-स्वरूप है. जो वस्तु इनमें रहती है और इनकी साक्षी है वह हम हैं. वह परमतत्त्व है. संत उसे सुरत कहते हैं. जब तक कोई मनुष्य शरीर में रहता हुआ शब्द और प्रकाश का अनुभव करता हुआ परे नहीं जाता उसको त्रिलोकी का ज्ञान नहीं हो सकता.

लोग पुस्तकें पढ़ लेते हैं. किसी ने कोई ग्रंथ पढ़ लिया. उसका या गीता या भागवत या

रामायण का प्रमाण दे दिया. इसी को सब कुछ समझ बैठते हैं. उनमें अपनी गाँठ का कुछ नहीं होता. मैंने जीवन भर सफ़र किया है. सावन अभ्यास किए हैं और अब भी करता हूँ. मैं जो कहता हूँ अपना अनुभव कहता हूँ. यह नहीं कहता कि जो मैं कहता हूँ वह ठीक ही है.

मैं अपनी नीयत से सच्चाई से चला हूँ और जिस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ वह कह रहा हूँ.

गरुड़ पुराण और राधास्वामी और संतमत

गरुड़ पुराण में लिखा है कि मरने वाले को यमराज पकड़ते हैं. वैतरणी नदी में ले जाते हैं. जीव फिर धर्मराज के यहाँ और फिर चित्रगुप्त के यहाँ जाता है. मैं मानता हूँ कि यह ठीक है. इसका प्रमाण भी आगे चलकर दूँगा. राधास्वामी दयाल ने भी अपनी वाणी में ऐसा ही कहा है मगर राधास्वामी मत वालों को इतना अनुभव ज्ञान नहीं है. वे एक-दो पुस्तक पढ़कर दूसरे के धर्म का खंडन ग़लत रूप से करते हैं. राधास्वामी दयाल ने बारहमासा के सावन माह में लिखा है :-

सावन आया मास दूसरा। सास मरी घर आया सुसरा ।।
काली घटा शुभात्मन हुआ । श्यामकज में यह मन मूआ ।।
गरजे बादल चमके बिजली। सुरत निरत की झड़ियाँ लागीं ।
धुन अनंत शब्दन से चाली ।। वृद अवस्था चेतन लागी ।
यमपुर से अब सत्गुरु राखें । बहुतक जीव मौत दर ताकें ।।

इस शब्द से प्रकट है कि स्वामी जी मानते हैं कि यमपुर है और गरुड़ पुराण भी यही मानता है. फिर दोनों में क्या अन्तर है? कुछ नहीं.

इसी प्रकार गरुड़ पुराण में अनेक बातों का जैसे नरक स्वर्ग, यमराज, धर्मराज, वैतरणी, चित्रगुप्त आदि-आदि का वर्णन आया है. इन सब बातों का स्पष्टीकरण संतमत तथा विज्ञान की दृष्टि से आगे किया जाएगा ताकि यह समझ में आ जाय कि गरुड़ पुराण की शिक्षा और संतमत की शिक्षा में कोई भेद नहीं है. हां, वर्णन शैली भिन्न-भिन्न है.

यमराज (मृत्यु के बाद की अवस्था)

देखो! यह प्रतिदिन के व्यवहार में देखते हो कि जब जाग्रत अवस्था में होते हो काम करते रहते हो. जब सोने लगते हैं तब मन अनेक प्रकार के स्वप्न देखता है. कोई अच्छे स्वप्न देखता है. कोई बुरे और भयावह, कोई साँप, बिच्छू, शेर, भेड़िया आदि देखता है कोई बड़बड़ाता है कोई गंदी नालियों में गिरता पड़ता है और कोई अनेक प्रकार की यात्नाएँ भोगता है. कहने का अभिप्राय यह है कि मन पर जैसे-जैसे संस्कार पड़े होते हैं चाहे वे प्रारब्ध कर्म के अनुसार हों अथवा बाह्य जगत में देखने, सुनने और कर्मों के कारण हों, इन सबकी फिल्म दिमाग पर पड़ती रहती है और मन तरह-तरह के संकल्प विकल्प उठाता रहता है. स्वप्नावस्था में वह फिल्म चलती रहती है. साधन में जो मन के ख़्यालात होते हैं वे फिल्म बनकर सामने आते रहते हैं. बैठे अभ्यास करने

और मन ले गया कहीं का कहीं. उस मन का या मन की उस अवस्था का नाम है यमराज. जो स्वप्नावस्था है वही अवस्था साधन में होती है और वही मरने के बाद होती है. मृत्यु के पश्चात जो अवस्था होती है वह साधारणतया एक लम्बा स्वप्न होता है और हमारा प्रतिदिन का स्वप्न थोड़े समय का होता है.

यमराज या उस अवस्था से छुटकारा

इस यमराज से कौन रक्षा कर सकता है. राधास्वामी मत में कहा गया है कि यमपुर से गुरु रक्षा कर सकता है. गुरु कैसे रक्षा करेगा? वह तुमको गुरु बताएगा अथवा नाम का अजपा जाप और गुरु मूर्ति का ध्यान बताएगा. हिन्दू शास्त्रों में गायत्री मंत्र का अजपा जाप और गुरु मूर्ति का ध्यान बताया गया है. इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है. असलियत का ज्ञान न होने से भेद भाव हो गया है.

अभी मैंने बताया कि यमपुर से गुरु रक्षा कर सकता है और वह तुमको गुरु बता देगा. उस गुरु के अनुसार चलना आपका काम है. इसलिए बड़े आग्रह के साथ कहता हूँ कि मेरी बात को एकाग्रचित्त होकर सुनो.

आप लोग या दुनिया, चाहे मुझे अहंकारी कहे मगर मैं विश्वास दिलाता हूँ कि क़ुदरत ने मुझे किसी विशेष मिशन के लिए भेजा है. मेरा मिशन है काल-माया से निकलने का रास्ता साफ़ कर जाऊँ. एक प्रेतात्मा है जो नाम से बाबा सीलू है. उसका स्थूल शरीर नहीं है मगर वह शरीर सीटी में बातों का उत्तर देता है. जिसके जरिए बाबा सीलू आता है और उत्तर देता है, वह मेरा एक मित्र है. इससे सिद्ध होता है कि जब स्थूल देह से सूक्ष्म शरीर निकलता है वह प्रेत योनि में जाता है. इससे बचने के लिए सुमिरन ध्यान ही सहायक है. सम्भव है दूसरे पंथों में कोई और तरीका हो.

हमको स्वप्न आते हैं. वह 1-2 मिनट के होते है जिसमें वर्षों की घटनायें गुज़र जाती हैं. एक बार मुझे मेरी लड़की ने अपना स्वप्न सुनाया कि वह पैदा हुई, बच्चे हुए, उसका भाई पदम अलग हो गया. इसमें 80 वर्ष लगे. हम फिर मिले. गोद में लिया. मैं रो पड़ी. स्वप्न था 3 मिनट का और साल भोगे 80. यदि सुमिरन-ध्यान नहीं मिला तो इस योनि में पहुँचावेगा जो ऊपर बताई गई है. जब तक तुम स्वप्न में हो दुख-सुख से बच नहीं सकते. इससे कौन बचायेगा?

एक समय की बात है जब मैं सुनाम में स्टेशन मास्टर था. दाता दयाल (महर्षि शिव) वहाँ पधारे. वहाँ एक लखपति सज्जन थे. उन्होंने मुझसे कहा कि दाता दयाल उनके यहाँ खाना खायेंगे. जब उनसे कहा गया तो बोले फकीर? क्या तेरे घर में मेरे लिए टुकड़ा नहीं रहा! उन सज्जन से कहा कि तुम अमीर और मैं फकीर. मेरा तुम्हारा क्या संबन्ध? उनके कहने का अभिप्राय यह था कि मेरे पास जिज्ञासु आएँ. संत मार्ग जिज्ञासुओं का है. इसलिए मैं भी कहता हूँ कि मेरे पास सच्चाई के जिज्ञासु आएँ या वे आएँ जो 84 के चक्र और आवागमन से बचना चाहते हैं. उनको चाहिए कि वे गुरु सेवा करें. बिना सेवा के किसी को कुछ नहीं मिलता फिर गुरु सेवा

क्या है?

गुरु सेवा और गुरु

दर्शन करे बचन पुनि सुने । सुन सुन कर निज मन में गुने ।।
गुन गुन काढि लिए तिस सारा । काढ़ि सार तब करे अहारा ।।
करि अहार पुष्ट हुआ भाई। भव, भय, भौ सब गए नसाई ।।

यह है गुरु सेवा. यदि धन देने वाले परमात्मा को पा सकते तो इस दौलत को पा जाते और निर्धन उससे वंचित रह जाते. मगर यह तो सुरत (तवज्जह) देने का विषय है. वचन सुनने और उनके गुनने, मनन करने से जैसा कि वाणी में ऊपर कहा है तुम्हारा बेड़ा पार होगा. केवल गुरु-गुरु या राधास्वामी- राधास्वामी करने से काम न बनेगा. क्योंकि तुमको इस भवसागर से और यमराज से सत्गुरु ही निकाल सकता है. वह सत्गुरु कौन है? वह है सच्चा ज्ञान, सच्चा विवेक और सच्चा अनुभव और यह ज्ञान, विवेक तथा अनुभव जब मिलेगा, गुरु से ही मिलेगा.

जो लोग यह समझते हैं कि गुरु मरता है और जन्म लेता है अथवा एक गुरु मरा दूसरा गद्दीनशीन हुआ और ऐसा समझ कर उनको पूजता है तो उसका बेड़ा पार नहीं होता. कबीर साहब का सत्गुरु की बाबत कहना है :-

सत्गुरु चीन्हो रे भाई

सत्त नाम बिन सब नर बूड़े नरक पड़ी चतुराई ।।
वेद पुरान भागवत गीता, इनको सबै दृढ़ावै ।
जाको जनम सफल रे प्रानी, सो पूरा गुरु पावै ।।
बहुत गुरु संसार कहावें, मंत्र देत है काना ।
उपजें बिनसें या भौ सागर, मरम न काहू जाना ।।
सत्गुरु एक जगत में गुरु हैं, सो भव से कढ़िहारा ।
कहैं कबीर जगत के गुरुआ, मरि मरि लें अवतारा।।

दृढ़ाने का अर्थ है रटना. उन्हीं शब्दों को बार-बार बोलना. वेदों का पाठ इसी तरह से 84 के चक्र से छुड़ाने के लिए दृढ़ाना है. यह नहीं कि वेदों का पाठ गलत है. स्कूल में जो बच्चा पहाड़े बार-बार नहीं बोलता अर्थात दृढ़ाता नहीं वह आगे चल कर फेल रहेगा. जब पहाड़े याद हो जायेंगे तब आगे चलेगा. इसी प्रकार जब वेद वाणी दृढ़ हो जाएगी तब आगे चल सकेगा. वेद पाठ का महत्व इतना ही है जितना कि बच्चे के पहाड़े.

इस सिलसिले में एक बात याद आ गई है. होशियारपुर में एक वृद्ध पुरुष 82-83 वर्ष की आयु का है. उसने श्री ब्रह्मशंकर जी महाराज से नाम लिया हुआ था. उनके चोला छूटने पर उसने साहब जी महाराज को व उनके बाद दूसरों को गुरु माना. उनका पोता मेरे पास आया. उसने कहा कि मेरे बाबा इतने गुरुओं से मिलकर भी अशान्त हैं. उनकी शिकायत है कि संतमत की शिक्षा

गलत है? सोचता हूँ उसने एक गुरु से नाम लिया, फिर दूसरे की गुरु माना. चूँकि गुरुओं ने यह ख्याल दिया हुआ है कि जब एक गुरु मर जाता है, उसकी रूह दूसरे गुरु में चली जाती है मगर सत्गुरु कभी मरता नहीं. संत कबीर का भी ऐसा कथन है. उसकी तालीम सब पंथ वाले मानते हैं. उनके पिछले शब्द 'सत्गुरु चीन्हो रे भाई' में एक कड़ी आती है.

'सत्गुरु एक जगत में गुरु हैं, सो भव के कढ़िहारा ।
कहैं कबीर जगत के गुरुआ, मरि मरि लें अवतारा ।।

जब एक गुरु की रूह दूसरे चोले में आई तो उसकी रूह बिना मरे हुए दूसरे चोले में नहीं जा सकती. अफसोस! गुरु के रूप को नहीं समझ गया. इन वृद्ध सज्जन ने गुरु के रूप को नहीं समझा और न वास्तविक रूप से गुरु धारण किया. इसलिए वे अशान्त रहे. मेरी ड्यूटी है कि सच्चा और सही मार्ग बता जाऊँ. बाकी काम तुमको करना है. इस साफ़ बयानी से मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं रहता.

विचारों की फुरना

जब तुम स्वप्न में हो या अभ्यास में बैठते हो अथवा मृत्यु के बाद लम्बे स्वप्न में हो तो तुम्हारे अन्दर वही फुरेगा या फुरता है जो तुमने अपने जीवन में किया है या सोचा है या जैसे-जैसे विचारों ने तुम्हारे हृदय में घर किया हुआ है. यदि जीवन में धोखे, ईर्ष्या, द्वेष आदि के विचार रहे हैं तो वही रूप बन कर आयेंगे. यदि मैं अपनी मान प्रतिष्ठा के लिए सच्ची बात न कह कर तुमको धोखे में रखता हूँ तो वही विचार भयानक रूप रख कर मेरे सामने आयेंगे मैं उनसे बच कैसे सकता हूँ और तुम भी कैसे बच सकते हो?

मेरी स्त्री को नाम मिला हुआ था. वह स्वप्न में डरा करती थी. अभ्यास करती तो सांप, शेर आदि दिखाई देते और उसे डर लगता था. दाता दयाल महर्षि महाराज से कहा गया. उन्होंने कहा कि यह इसके प्रारब्ध कर्म है मगर यह तुम्हारी संगत के कट जायेंगे और अभ्यास करने को मना कर दिया.

जब तुम लम्बे स्वप्न में जाते हो तो शरीर तो वहाँ होता नहीं, केवल स्वप्न की फिल्म चलती रहती है. उस स्वप्न की फिल्म से गुरु बचा सकता है. गुरु तुमको नाम और ध्यान बता देगा. कोई संस्कार दे देगा.

धर्म

गरुड़ पुराण में लिखा है कि जब मनुष्य मरता है तो धर्म ही रक्षा करता है. अब धर्म क्या है? धर्म कहते हैं किसी इष्ट, आइडियल, नाम, विचार, संस्कार को धारण कर लेना. तुम देखते हो कि जब साधन में बैठते हो तो मन कठिनता से एकाग्र होता है. छलाँगें मारता है. तरह-तरह के संकल्प उठाता है मगर चूँकि तुमको संस्कार मिला हुआ है तुम गुरु के दिए हुए नाम और रूप को बनाओगे और तुम्हारे चिदाकाश पर जो संस्कार पड़े हैं वे सामने आने लगेंगे. उस नाम और रूप ने

जिसको तुमने धारण कर रखा है वह तुमको स्वप्न की फिल्म से निकाल ले जाएगा और इस तरह धर्म तुम्हारा रक्षक और सहायक होगा.

हिन्दुओं में यह प्रथा है कि जब प्राणी मरने लगता है तो उससे गोदान कराते हैं और गाय की पूँछ उसके हाथ में देकर दान करा देते हैं. चूँकि हिन्दुओं में गाय को बहुत पूज्य माना गया है तो मरने वाले के सामने यह गाय का ख्याल दूसरे गंदे विचारों से बचा देता है और वह स्वप्न की फिल्म से बच जाता है.

कोई भी धर्म या सम्प्रदाय वाला हो यमराज से सबको गुजरना पड़ता है, इसलिए गरुड़ पुराण का यह कथन सबके लिए है चाहे वह ईसाई हो, सिख हो, पारसी हो यहूदी हो, मुसलमान हो या कोई और हो. कोई बच नहीं सकता है.

यह सवाल किया जा सकता है कि दूसरे सम्प्रदाय वाले तो यमराज को मानते नहीं हैं फिर उनको यमराज से क्यों गुजरना पड़ेगा?

यमपुर-यमदूत-चित्रगुप्त

देखो! यमराज शब्द के झमेले में न पड़ो. जो सिद्धान्त है उसे समझो. सिद्धान्त किसी एक धर्म-संप्रदाय की वस्तु नहीं होता. वह तो प्राणी मात्र के लिए लागू होती है. यह विज्ञान का नियम है. तुम जब एकान्त में बैठते हो या अभ्यास करते हो तो एक विशेष प्वाइंट या ख्याल को लेकर चलते हो और जब तक एक नाम और रूप का सहारा नहीं है तो वह ख्याल बढ़ता ही जाएगा. यही दशा मरते समय होती है. जो-जो ख्याल संस्कार चिदाकाश पर पड़े होते हैं वे सामने आने लगते हैं और उन्हीं में फँसा रहकर प्राणी शरीर त्याग देता है और इस तरह यमराज से बच नहीं सकता है.

पहले पहल ख्याल छोटा होता है. इसलिए सूक्ष्म शरीर अंगुष्ठ समान कहा गया है. यदि अभ्यास में सुमिरन ध्यान छूट जाय तो मन के विचार बेहद बढ़ जाते हैं. मरते समय किसी को अपने गुरु या इष्ट या राम-कृष्ण आदि का ध्यान बँध जाय तो यह यमराज के दुखों से बच जायगा. इसलिए कहा गया है :-

बुरा भला जो गुरु भगत, कबहुँ नर्क न जाय ।

सवाल होता है कि क्या कोई वास्तव में यमपुर है? हाँ, है. देखो! हमारे शरीर के अन्दर असली रूप सुरत है. इस पर प्रकाश का रूप चढ़ा हुआ है. उस पर मन का खोल है. जब मनुष्य मरता है तो उसका सूक्ष्म शरीर या वासना निकल जाती है और दूसरा जन्म लेने तक भ्रमण करती रहती है. इसका प्रमाण इस समय भी होशियारपुर में मौजूद है. वहाँ एक ऐसा सूक्ष्म शरीर है. लोगों ने सूक्ष्म शरीर से बातें की हैं. संत मत का मक़सद है तीनों शरीरों से निकालकर सतपद पर पहुँचना बशर्ते कि किसी को जिज्ञासा हो या उत्कट इच्छा हो. तुम कहोगे कि मैं गलत कह रहा हूँ. सुनो दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जिन्हें ज्ञान का अवतार मानता हूँ उन्होंने मेरे लिए क्या लिखा है :-

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा ।

दु:खी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देशा ।

तीन ताप से जीव दु:खी हैं, निबल अबल अज्ञानी ।

तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ।

इस शब्द की अन्तिम कड़ी में मुझे दया करने को कहा गया है.। वह मैं कर रहा हूँ. वह कैसे? वह इस तरह कि मैं किसी से कुछ न लेकर जीवन की तफलता का, आवागमन से बचने का, यमपुर आदि के कष्टों से बचने का गुरु या उपाय बता रहा हूँ.

‘ यमपुर से अब सत्गुरु राखें.’ अर्थात सत्गुरु सुमिरन-ध्यान बता कर इस योनि से बचा सकता है.

यमदूत- कभी मन में ऐसे रूप या ख्याल आते हैं जिन्हें तुम चाहते हो कि न आएँ मगर वे ख्याल जाते नहीं अथवा वह रूप दूर नहीं होता और इससे तुमको कष्ट होता है. जब जाग्रत में ऐसे ख्याल सताते हैं तो फिर स्वप्न में क्यों न सामने आएँगे और क्यों न सतायेंगे.

बारह मासा की अगली कड़ियों में कहा गया है -

यमपुर से अब सत्गुरु राखें । बहुतक जीव मौत दर ताकें ।।

काल घटा यम आकर छाई ।धारा मौत अधिक बरसाई ।।

जीव अनेक रहे घबराई । काया गढ़ उन दीन्ह ढवाई ।।

जमपुर जाय जीव पछतावे । जम के दूत तिन बहुत सतावें ।।

नाना कष्ट देय पल पल में । फिर फाँसी डालें गल गल में ।

कुंभी नर्क माहिं दें गोते । जीव सहें दुख अतिकर रोते।

वे निरदई दया नहि लावें । अति तरास से जिव मुरझावें ।।

अग्नि ज्वाल से फिर लिपटावें । हाय हाय कर सब चिल्लावें।।

सुने न कोई मुश्किल भारी । सर्पन माला ले गल भारी ।

मार मार चहुं दिस से होई । पति गति अपनी सब विधि खोई ।।

नर्कन में अति त्रास दिखावें । फिर चौरासी ले पहुँचावें।।

गुरु भक्ति बिन यह गति पाई । नर देही सब बाद गँवाई।।

इस शब्द में यमपुर, यमदूत और जीवों की नाना भाँति के त्रास देने का वर्णन है । यही वर्णन गरुड़ पुराण में भी है.

इस यमपुर और नरक के दुखों से बचने के लिए स्वामी जी ने गुरु भक्ति बताई है. वह गुरु भक्ति क्या है? गुरु भक्ति गुरु की देह से प्रेम करने का नाम नहीं है. सच्ची भक्ति है उनके वचनों पर श्रद्धा और विश्वास और जो आदर्श गुरु ने बताया है उसको धारण करना. जो नाम, उपाय, युक्ति गुरु ने बताई है उस पर आरूढ़ होना. जिसका मन विषय विकारों से भरा है

और शुद्ध नहीं है वह गुरु के बताए हुए आदर्श पर आरूढ़ नहीं हो सकता! इसलिए इस मन को शुद्ध करो.

चाहे वेद पाठ करो न करो मगर वेद वाक्य 'शिवसंकल्पमस्तु' के अनुसार शुभ विचार रखो तो वेद भक्त है वरना नहीं. केवल वेद-वेद करने से क्या बनेगा! इसलिए शुभ संकल्प रखना है और आशावादी होकर रहना है.

इस तरह जो संस्कार तुम्हारे चिदाकाश पर पड़े हैं स्वप्न में उन्हीं की ओर ध्यान जाएगा. पहले जो संस्कार या वासनायें गुप्त रूप से दबी पड़ी हुई हैं और पूरी नहीं हुई हैं वे फुरेंगी. चित्रगुप्त दबी हुई इच्छायें हैं. यदि रूप बना है, धर्मराज ठहरा है तो यमराज से बच जाओगे. अच्छी-अच्छी योनियां मिल जायेंगी मगर 84 के चक्र से नहीं बच सकते, क्योंकि वासनाओं को भोगने के लिए जन्म लेना पड़ेगा.

जो आदमी नाम रूप का सहारा लेकर मरते हैं वे हंस के चोले में जन्म लेंगे, क्योंकि मन ठहरा हुआ है अर्थात यमराज से बच कर मानव जीवन में आयेंगे.

गरुड़ पुराण में गायत्री मंत्र का अजपा जाप और गुरु मूर्ति का ध्यान बताया गया है और राधास्वामी मत में नाम का अजपा जाप अर्थात सुरत को शब्द से लगाना और गुरु मूर्ति का ध्यान है मगर सुमिरन ध्यान से पहले सत्संग की आवश्यकता है.

जो जो भजन भक्ति से चूके। तिनके मुख जम पल पल थूके ।।

थूकना क्या है? उचित या अनुचित ख्यालों का उठना ही थूकना है.

गुरु धारण करने का अर्थ मत्था टेकना नहीं किन्तु गुरु के वचनों पर चलना है. गुरु के वचनों पर चलने से जो मन छलाँगे मारता है उससे बच जाओगे.

स्वप्न का प्रभाव और उसे जगाना

यह मन के संकल्प ही हैं जो मनुष्य को जाग्रत अवस्था में दुखी-सुखी करते हैं. जिस प्रकार इनका प्रभाव जाग्रत में होता है उसी प्रकार स्वप्न का प्रभाव स्वप्नावस्था में भी होता है. स्वप्न में तुम स्त्री बना लेते हो और भोग भोगते हो. वीर्यपात हो जाता है! फिर कौन कहता है कि स्वप्न का प्रभाव नहीं होता! बहुत से लोग स्वप्न में भयभीत हो जाते हैं और चिल्ला उठते हैं. कोई हितैषी उनको स्वप्न से जगा देता है और उनका वह कष्ट दूर हो जाता है. जग जाने के तीन तरीके हैं :-

(1) कोई आवाज देकर जगा दे.

(2) कोई हिलोरें देकर जगा दे.

(3) या अपने आप जागे.

जो व्यक्ति मर जाता है, उसका स्थूल देह तो होता नहीं वह सूक्ष्म शरीर में स्वप्न देखता है. उसे उस स्वप्न से कौन जगा सकता है? सुनो!

यदि मरने वाले को गुरु से नाम की दीक्षा मिली हुई है और रूप का ध्यान करता है तो नाम रूप के सहारे वह यमराज से बच जाएगा.

जिसको स्वप्न में यह ज्ञान है कि स्वप्न देख रहा है तो वह दुनिया को स्वप्नवत समझेगा और उस अवस्था में नहीं रहेगा. यदि यह ज्ञान नहीं अथवा रूप का सहारा नहीं तो उसे जगाने वाला चाहिए. ऐसे व्यक्ति को वह जगा सकता है जो सच्चा हितैषी हो.

क्रिया कर्म

इसलिए पुत्र उनके जगाने के लिए क्रिया कर्म करते थे. जब पुत्र यह क्रिया कर्म करते थे तब भारत में मानवता, शिष्टाचार और सदाचार था. अब वह प्रणाली नहीं रही. आज के युग में पुत्र या कुटुम्ब परिवार में हमदर्दी कहाँ है! इसलिए सन्तों की प्रणाली आई. संतों ने वही पुरानी बात नए ढंग से वर्णन की.

क्रिया कर्म करने वाला पुत्र या कोई अन्य मोहग्रस्त न होना चाहिए वरना मरे हुए व्यक्ति की सद्गति नहीं होगी क्योंकि जब वह रो रहा है तो रोते समय के भाव-विचार सद्गति कैसे दिला सकते हैं! इसलिए किसी के मरते समय मरने वाले की सद्गति की दृष्टि से घर वालों को रोना-पीटना नहीं चाहिए वरना वे मरे हुए को उस स्वप्न से जगाने के बजाय फँसा रहे हैं. उसके जगाने वालों को सच्चे हृदय से उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए. इस प्रकार मरने वाले को स्वप्न से जगाया जा सकता है.

कितने व्यक्ति ऐसे मरते हैं जिन्हें मरने का ज्ञान नहीं होता जैसे अकाल मृत्यु से अर्थात जल में डूबने से, बिजली से, अचानक कोई घटनाओं से. उनका सूक्ष्म शरीर बाहर में अपनी देह न पाकर भटकता है क्योंकि उनको मरने का ज्ञान तो है ही नहीं उनके ठहरने का केन्द्र तो मन और देह बना हुआ है. इसलिए ऐसे व्यक्ति को साधारण व्यक्ति, पुत्र आदि नहीं जगा सकता.

ऐसे व्यक्ति को शब्द और प्रकाश में रहने वाला आत्मनेष्टी पुरुष जगा सकता है, जो अपने ख्याल से उसका भला चाहे. मरे हुए को जगाने के लिए उसका नाम और रूप बनाना पड़ता है और उसका नाम लेकर ख्याल दिया जाता है. मैंने अपनी स्त्री का फोटो रखकर क्रिया कर्म किया पुत्र ने अलग किया. विधि सबकी अलग है मगर सिद्धान्त सब में एक है. जो पुत्र क्रिया-कर्म नहीं करता वह अपने माता-पिता का हितैषी नहीं है किन्तु द्रोही है. पुराने समय में जिनका कोई नहीं होता था उनका क्रिया-कर्म गांव का मुखिया या पुरोहित करता था. ये क्रिया-कर्म पहले पंडित कराते थे. वे उच्च कोटि के आत्मनेष्ठी पुरुष होते थे. आज के गुरु पैसे का ध्यान रखते हैं. यह लोभी, लालची और मान के इच्छुक बने हुए हैं. पंडे और ब्राह्मण भी लोभी लालची हैं. आत्मनेष्टी तो शायद बहुत कम हैं. ऐसे पुरुषों से जीव का कल्याण नहीं हो सकता.

मेरी स्त्री सोई हुई मरी इसलिए उसका क्रिया-कर्म मैंने स्वयं किया. आप लोग भी जब आपका कोई रिश्तेदार मरे तो उसके लिए सच्चे हृदय से प्रार्थना किया करें.

यदि अकाल मृत्यु से कोई व्यक्ति मर गया है तो उसकी देह और हड्डी पर भी किसी ब्रह्मनेष्टी पुरुष की दृष्टि पड़ जाय तो इससे भी उसकी सद्गगति हो सकती है.

विज्ञान से यह सिद्ध है कि सृष्टि की उत्पत्ति सूर्य की किरणों (Cosmic Rays) से होती है. उनसे जीवन मिलता है. इसी प्रकार शब्द और प्रकाश का जो पुरुष साधन करते हैं, उसका रूप बने हुए हैं, उनसे जो धारें निकलती रहती हैं, वे धारें आत्मिक धारें (Spiritual Rays) हैं. वही कॉस्मिक रेज़ हैं. इसलिए ऐसे साधु की दृष्टि उस मरे हुए पर पड़ जाए तो वह यम-योनि में नहीं आयेगा. यदि वह अपना ख्याल किसी को दे दे तो वह भी यमपुर से बच जाएगा. यहाँ मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि मेरे यहाँ के भाषणों को यदि मृतक को सुना दिया जाएगा तो वह यमपुर से बच जाएगा.

ब्राह्मण वह जो ब्रह्म स्मरण करता हो और शब्द और प्रकाश में रहता हो. सूत जी ने ऋषियों को कथा सुनाई. सूत जी ब्राह्मण नहीं थे इसलिए जाति का कोई बन्धन नहीं, शब्द और प्रकाश में रहने वाला किसी भी जाति का हो उसकी शुभ भावना से मृतक प्राणी की सद्गति हो सकती है. ब्राह्मण जाति में पैदा होने की विशेषता यह है कि उसे ब्राह्मण शब्द का ज्ञान हैं. वह दूसरों की अपेक्षा अधिकार-संस्कार के अधीन शीघ्र उस अवस्था को प्राप्त कर सकता है.

गरुड़ पुराण रहस्य

चतुर्थ भाग

गरुड़ पुराण पर प्रश्नोत्तर परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज

द्वितीय सत्संग

(हनमकुंडा 19.1.64)

आज सुबह के सत्संग में मैंने अपने अनुभव के आधार पर यह बताया था कि गरुड़ पुराण, राधास्वामी मत, कबीर मत की शिक्षा एक ही है और वह वैज्ञानिक है. केवल वर्णन शैली का अन्तर है.

जीवन क्या है?

आपको बता दिया कि जीवन कुछ नहीं है. यह हमारे जीवन की वासनाओं का जो केन्द्र है उसका नाम है जीवन. हमारे मन में तरह-तरह की इच्छायें व संकल्प पैदा होते हैं. उनकी एकत्रित अवस्था का नाम है जीवन. हमारे शरीर के 3 रूप हैं -स्थूल, सूक्ष्म और कारण. जब शरीर से प्राण निकल गया तो स्थूल शरीर गया मगर जो वासनायें अन्तर में (अर्थात मन में थीं) चाहे दुनिया की

चाहे भक्ति की, योग की, या किसी भी तरह की, वे सब सूक्ष्म शरीर में मौजूद रहती हैं, गुप्त रहती हैं, चित्रगुप्त रहती है अथवा उनके चित्रगुप्त रहते हैं.

जीव के जाने के 4 मार्ग

गरुड़ पुराण में लिखा है कि धर्मराज का दरबार कितने ही योजन अर्थात करोड़ों मील लम्बा है. वहाँ सुनहरी रंग का प्रकाश है. सुन्दर स्थान है. जीव यमराज के दरबार से फिर धर्मराज के यहाँ पेश किया जाता है. फिर धर्मराज उसको चित्रगुप्त के दरबार में भेजता है. वहाँ से फिर जीव योनियों में आता है. यह उसूल (सिद्धान्त) क्या है?

सूक्ष्म शरीर के जाने के 4 मार्ग हैं. ज़मीन गोल है. सदा चक्कर खाती रहती है. इसमें आकर्षण शक्ति है और आकर्षण शक्ति के नियम के कारण भारी वस्तु नीचे को आती है. जब हमारा सूक्ष्म शरीर आकाश मण्डल में जाता है तो जिनके अन्दर दुनियावी या भौतिक पदार्थों यानी धन सम्पत्ति आदि की आशायें या वासनायें हैं अथवा उनसे मोह या आसक्ति है तो वासनाओं या कामनाओं के कारण जो हमारा सूक्ष्म शरीर है वह भारी होता है और भारी होने के कारण आकर्षण शक्ति के नियम के अनुसार वह नीचे दक्षिण की ओर जाता है. यमराज इनके लिए है. यमपुरी दक्षिण में है.

जिन्हें दुनियावी इच्छायें नहीं होतीं मगर वे इच्छायें होती हैं जिनके नाम भाव वाचक संज्ञा (Abstract noun) कहलाते हैं, जैसे नेकी-बदी या भलाई-बुराई, जो अपना अस्तित्व (वजूद) नहीं रखतीं अथवा जो प्रेम, भक्ति, योग, ज्ञान या आनन्द की इच्छायें रखते हैं तो उनका सूक्ष्म शरीर हल्का (Light) होता है और वह दायें-बायें और पूर्व-पश्चिम) से जाता है. यह वैज्ञानिक विधि है और जिनमें कोई इच्छा नहीं है न भलाई की और न बुराई की, मगर उनका सूक्ष्म शरीर या मन तो है वह उत्तर देश अर्थात ऊपर जाएगा. वहाँ वह उस केन्द्र पर ठहरेगा.

धर्मराज का दरबार

धर्मराज का दरबार सबको है चाहे भले और पुण्यात्मा हों चाहे पापी और बुरे. फिर धर्मराज के दरबार में जाकर फैसला होता है कि इस सूक्ष्म शरीर को कहाँ जाना है. ऐसा गरुड़ पुराण का कथन है.

धर्म क्या है? यह सूक्ष्म शरीर की वासनाओं के ठहराव की अवस्था है. धर्मराज तुम्हारे अन्दर है. तुम से अलग नहीं है. आकाश मण्डल में जब सूक्ष्म शरीर जाता है तो वहाँ जैसी हालत होती है, जैसा कि मैंने सुबह के सत्संग में कहा था कि मेरी लड़की को 3 मिनट के स्वप्न में 80 वर्ष गुजर गए, ऐसे ही हमारा सूक्ष्म शरीर जब आकाश में जाता है तो हम को हमारे की ख्याल के अनुसार वह लम्बा अर्सा मालूम होता है. जिनमें कोई वासना नहीं है उनका सूक्ष्म शरीर भी धर्मराज

को जाएगा. यदि उसको सत्संग मिला हुआ है और नाम मिला हुआ है वह कहाँ जायेगा? और वह कौन सा नाम है जो 84 के चक्र से बचाएगा.

नाम का जाप और प्रकाश

वह नाम र्+आ+म शब्द नहीं वह नाम रा+धा+स्वा+मी शब्द नहीं, वह नाम अ+ल्ला+ह, या ओ+उ+म; शिव+वा+य नम: के शब्द नहीं या गायत्री नहीं. इन शब्दों का उच्चारण तुम्हारे मन के संकल्प से संबन्ध रखता है. फिर वह नाम क्या है? वह नाम वह है जो मन से नहीं जपा जाता. वह नाम सुरत से जपा जाता है उसका रूप है प्रकाश. जिन्होंने गायत्री मन्त्र के भाव को समझ कर अपने अन्तर सावित्री (सूर्य) के प्रकाश को पैदा कर लिया है और उसके दर्शन कर लिए हैं, उनको धर्मराज के दरबार में नहीं जाना पड़ता.

जिन्होंने, उस नाम को जो अनहद शब्द है जिसे सत्नाम बोलते हैं, सुन लिया है वे मरते समय -

सेत सिंहासन क्षत्र विराजे । अनहद शब्द सबै धुनि गाजे ।।

की अवस्था प्राप्त करेंगे (अर्थात शब्द और प्रकाश में लय हो जायेंगे). ये यह सन्त मार्ग है. उनको धर्मराज नहीं पकड़ सकता. वह धर्मराज के मण्डल से बाहर हो गये.

अब स्वामी जी के बारह मासा के शब्द को सुनो

सावन मास आया दूसरा । सास मरी घर आया सुसरा ।।

जो जो भजन भक्ति से चूके । तिनके मुख जम पल पल थूके ।।

ऐसी कुगती होयगी सबकी । जो नहिं धारें सत्गुरु अबकी ।।

सत्गुरु बिना नहिं कोई बाचे । नाम बिना चौरासी नाचे ।।

धन्य भाग हम सत्गुरु पाया। चढ़ी सुरत मन गगन समाया।।

“बड़े भाग हम सत्गुरु पाया." सत्गुरु ने हमें क्या दिया? सुमिरन-ध्यान-भजन. यह दूसरी बात है कि सुमिरन किसी नाम का हो और ध्यान किसी रूप का हो. जिस समय मनुष्य मरता है और यदि केवल सुमिरन ध्यान है तो वह यमराज से बच जाएगा और यदि प्रकाश और नाम है तो धर्मराज के दरबार में भी नहीं जाना पड़ेगा. फिर वह कहाँ जाएगा? गरुड़ पुराण कहता है कि इस 84 के चक्र से बचने को गायत्री मन्त्र का अजपा जाप, गुरु मूर्ति का ध्यान फिर परब्रहम का देश, फिर शब्दब्रहम से! जब तक शब्दब्रहम से मेल नहीं होता, 84 के चक्र से बचाव नहीं हो सकता.

यही मार्ग राधास्वामी मत का है. यही संतों का मार्ग है. कौन कहता है कि सन्त-मत और सनातन धर्म दो मार्ग हैं. मेरे अनुभव के अनुसार इनमें कोई अन्तर नहीं है. आज के समय में थोड़े से लोग पन्थाई बन गये. इन्होंने अपनी अज्ञानता से अपने हिन्दू धर्म को या सनातन धर्म को न समझते हुए अनुचित ढंग से मानव जाति को बाँट दिया.

यह नूर का मसला या विवरण, यदि मैं गलती पर नहीं हूँ तो संभव है इस्लाम में भी है. नूर-कोहेतूर पर मूसा ने रोशनी देखी थी. वह कोहेतूर बाहर नहीं है. यह मनुष्य के अन्दर है.

जितने भी धर्म और सम्प्रदाय हैं प्रकाश को सब मानते हैं. उनके शब्द भिन्न- भिन्न हैं - लाइट, नूर, प्रकाश, सावित्री आदि. बात एक ही है. अब न तो हिन्दुओं को, न पण्डितों को अपने धर्म का ज्ञान रहा और न इन पंथ वालों को अनुभव ज्ञान रहा.

सन्तों का प्राकट्य

यह दशा देखकर उस परम तत्त्व या मालिके कुल की धार, सन्त रूप में संसार में प्रकट हुई. कहीं कबीर के रूप में, कहीं नानक के रूप में, कहीं राधास्वामी के रूप में, कहीं दाता दयाल (महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज) आदि के रूप में, अथवा मुझे अहंकारी न कहो तो यह समझ लो कि उसी बात को नये ढंग से मैं कह रहा हूँ.

सन्त कब प्रकट होते हैं? सुनो -

धर्म पर चलने के दो मार्ग हैं- प्रवृत्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग.

जब-जब प्रवृत्ति मार्ग के धर्म की हानि होती है या धर्म नष्ट हो जाता है तो धर्म को ठीक करने के लिए विष्णु या ब्रह्म का अवतार आता है. कभी राम के रूप में और कभी कृष्ण के रूप में आकर उसमें (प्रवृत्ति मार्ग में) सन्तुलन (Adjustment) कर जाता है. जहाँ निवृत्ति मार्ग का सवाल है वहाँ परम तत्त्व का अवतार सन्त के रूप आया करता है. वह एक आसान तरीका बता जाता है कि धर्म क्या है और किस धर्म से पार जाना है और किस धर्म से आवागमन छूटता है. उस धर्म का स्मरण करा दिया जाता है कि तुमको ऐसा नहीं करना चाहिए और ऐसा-ऐसा करना चाहिए.

इस सिलसिले में स्वामी जी महाराज का शब्द सुनो जिसकी व्याख्या दाता दयाल (महर्षि शिव) ने की है.

तेरी दया का दृढ़ विश्वास हुआ, चरणों में पड़ा निज दास हुआ ।

करूँ बिनिती दोऊ कर जोरी, अर्ज सुनो राधास्वामी मोरी ।

संसार से सहज उदास हुआ । चरणों में पड़ा ।।

निवृत्ति मार्ग में चरणों का दास होना या अपने आपको गुरु के सुपुर्द कर देने का यही मतलब है कि मैं संसार से दु:खी हूँ. उससे उदास हो गया हूँ. मेरा बेड़ा पार हो जाए.

सत्तपुरुष तुम सत्गुरु दाता । सब जीवन के पितु और माता ।।

ढाढ़स बँधी घट में उजास हुआ ।। चरणों में ।।

यहाँ कहते हैं कि गुरु के दर्शन से घट में उजास हो गया. उजास से अभिप्राय है प्रकाश, साहस, विश्वास, श्रद्धा, प्रेम का होना.

दया धार अपना कर लीजे । काल जाल से न्यारा कीजे ।।

तब समझूँगा माया का नाश हुआ ।। चरणों में ।।

यहाँ काल और माया से छुटकारे की प्रार्थना की गई है जो निवृत्ति मार्ग के अन्तर्गत है.

माया क्या है? मुझे पता नहीं दूसरे महापुरुषों का क्या भाव माया से है. मेरे विचार में वासना के अधीन जितने संकल्प हमारे अन्तर में पैदा होते हैं उनका नाम है छाया. इस माया और छाया को उदाहरण से इस तरह समझ लो.

आपके दिल में ख्याल पैदा हुआ कि हनमकुंडा में सत्संग घर बनाया जाय. वह आपकी वासना थी. इस वासना से जो चाह पैदा हुई वह है माया? सत्संग घर बन गया, वह है छाया.

तुम्हारे या किसी के दिल में इच्छा हुई कि बाबा फ़कीर हमारे अन्तर दर्शन दे. वह वासना है माया और वह रूप दिखाई दे गया वह है छाया. ये जितने योगी हैं, जितने भक्त हैं, उपासक हैं ये हैं क्या? ये किसके योगी हैं? जितने भक्त हैं, उपासक हैं ये हैं क्या? ये किसके पुजारी हैं? माया के हैं या नहीं.! इसी से तो राधास्वामी दयाल ने अपनी वाणी में कहा है कि-

भक्त उपासक योगी ज्ञानी, इन सब चक्कर खाया ।

आज बसन्त का दिन है. आज के दिन सत्पुरुष राधास्वामी दयाल ने राधास्वामी मत के सत्संग की नींव डाली थी. क्यों डाली थी? मेरे जैसे को जो काल माया से बचना चाहते थे, न कि आप संसारियों के लिये. सन्तों का मार्ग आम पब्लिक के लिए नहीं हैं. सन्त मार्ग के गुरुओं ने इसे सामाजिक (Social) बना दिया अथवा पंथ का रूप दे दिया. क्यों ऐसा किया? मैं इसमें भी बेहतरी समझता हूँ. चलो बीज तो पड़ गया है. संस्कार तो है आज न सही कल, कल न सही परसों, कभी न कभी तो फल लाएगा.

सत्गुरु त्रेता द्वापर बीता । काहू न जानी शब्द की रीता ।।

सब में अज्ञान का भास हुआ ।। चरणों ।।

84 का चक्र और उससे बचने के उपाय

अज्ञान का क्यों वास हुआ? क्योंकि गरुड़ पुराण लिखता है कि जब तक कोई गायत्री का अजपा जाप करके परब्रह्म और शब्द ब्रह्म से परे नहीं जायेगा. 84 के चक्र से नहीं छूटेगा, मगर गरुड़ पुराण और शब्द ब्रह्म का तो पण्डितों को स्वयं ज्ञान नहीं था, वे तो सुनाना जानते हैं. हौआ बनाकर दिखा दिया और बस! यद्यपि उससे भी लाभ है क्योंकि अज्ञानी ऊँची बात तो नहीं समझ सकते. उनका इलाज डण्डा है. जो मूढ़ वृत्ति वाले हैं वह जब क़ाबू में आयेंगे (या मानेंगे), भय से आवेंगे. 'भय बिन प्रीति न होय'. मगर अब समय बदल गया. देश की दशा बदल गई. लोग अब 84 को नहीं मानते. कहते हैं 84 कोई है ही नहीं, मगर ये अज्ञान से ऐसा कहते हैं. तुम रोज़ समाचार पत्रों में ऐसी खबरें पढ़ते हो. मैं भी अन्ध विश्वास से किसी बात को नहीं मानता, जब तक कि उसका अनुभव न कर लूँ, क्योंकि मैं रिसर्चर (खोजी) हूँ. मैं मानता हूँ कि 84 है. इस बारे में एक उदाहरण सुनाए देता हूँ.

जब मैं बसरा में था तब मेरी माँ होशियारपुर में मरी. पिता जी ने उसके अन्त समय के हालात बताये. चूँकि इस लाइन का पहले भी मुझे अनुभव था तो मैंने छोटे भाई राय साहब सुरेंद्र नाथ को कहा कि हमारी माँ मर गई. वह तुम्हारे घर लड़का बनकर आएगी. यह बात ठीक निकली और दस मास बाद उनके घर में लड़के का जन्म हुआ.

मेरी लड़की प्रेम प्यारी मरी. उसके मरने पर बली राम हकीम आये. अफसोस प्रकट करने लगे. मैंने कहा कि अफसोस क्यों करते हो वह तुम्हारे घर में पौत्री बनकर आएगी और उसके लक्षण ये होंगे और वही हुआ.

मेरा लड़का शाह धर्म जंग गुज़र गया. उसके बारे में ख्याल था कि वह सुनाम में पैदा होगा. वह स्वयं सुनाम में पैदा हुआ था. वहाँ एक लछमन दास पनवाड़ी था. उसके कोई लड़का नहीं था, इसलिए वह उससे बहुत प्रेम करता था. जब वह मरने लगा तो उसकी माँ ने कहा कि बेटा क्या तुम मुझे छोड़ जाओगे? तो उसने कहा कि माँ मैं सुनाम में जाऊँगा. इसके बाद मैंने लछमन दास पनवाड़ी को पत्र लिखा. उसने उत्तर दिया कि उसके यहाँ लड़का हुआ है. यह मेरा निजी अनुभव है. दूसरा प्रमाण अख़बारों से मिलता है जहाँ इस प्रकार की घटनाओं का समाचार निकलता रहता है. तीसरा प्रमाण महाभारत है. यहाँ वर्णन आता है कि अमुक व्यक्ति अमुक था और वह योनि मिली है. इससे सिद्ध होता है कि महाभारत के जो जपी-तपी थे, वे भी 84 के चक्र से नहीं बचे.

84 के चक्र से कौन बचता है? वह जो शब्द ब्रह्म की ओर जाता है. यह गरुड़ पुराण में लिखा है. इसलिये सन्त मार्ग के सन्त, राधास्वामी दयाल, गुरु नानक, सन्त कबीर इस कलियुग में यह अहसान कर गये कि उन्होंने हमारी पुरानी विद्या को प्रकट कर दिया. उपनिषदों में जहाँ शब्द-योग का वर्णन है उसे गुप्त देख कर -

कलियुग में स्वामी दया बिचारी । परगट करके शब्द पुकारी ।

इन सन्तों ने शब्द ब्रह्म का ख्याल दिया, सच्ची विद्या दी और सच्चा मार्ग बताया और यह भी कहा कि अगर कुछ नहीं कर सकते तथा कमाई नहीं होती तो किसी सन्त का पल्ला पकड़ लो.

अन्त मता सो गता

ऐ संसार वालो! मैं तुम्हारे लिए एक सन्देश लाया हूँ. वह सन्देश मेरा नहीं है सन्तों का है. मैं तो उसकी स्पष्ट रूप से व्याख्या करने वाला हूँ. वह क्या सन्देश है? यही कि यदि तुमसे कुछ नहीं होता तो किसी वीतराग पुरुष को अपनी खोपड़ी में रख लो और बस! क्यों? अन्त मता सो गता. जैसा कि मैंने अपनी माँ, लड़की और लड़के के बारे में कहा है और अन्त समय के उनके ख्यालों से अनुमान लगाया है तो जो किसी को अपनी खोपड़ी में रखता है तो 'अन्त मता सो गता ' के नियम के अनुसार वह इस चक्र से बच जाएगा.

यदि उसने सन्त को यह समझा है कि वह फकीर चन्द पुत्र पण्डित मस्त राम होशियारपुर वासी है तो उसका बेड़ा डूब जाएगा यदि यह माना है कि उसका गुरु सत्लोक का वासी है तथा शब्द और प्रकाश स्वरूप है तो 'अन्त मता सो गता' के नियम के अनुसार वह वहाँ जायेगा जहाँ सत पद का ज़िक्र है. सन्त आइडियल है शब्द और प्रकाश का सुनो-

जीव काज स्वामी जग में आये । भव सागर से पार लगाये ।।

तब दु:खी जीव सुखरास हुआ ।। चरणों में ।।

तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा । सत्त नाम सत्गुरु गति चीन्हा ।।

अनुभव का आप विकास हुआ ।। चरणों में ।।

'अनुभव का आप विकास हुआ'. सुरत शब्द योग के अभ्यास और सत्संग से अनुभव मिलता है. अनुभव नाम है ज्ञान का. शास्त्र भी यही कहते हैं कि ज्ञान बिना मुक्ति नहीं.

धर्मदास (श्री चन्द्रकान्त) भी मन्त्र पढ़ा करते हैं. उन्होंने मुझे स्नान कराया और मन्त्र पढ़कर गुरु की स्तुति को और कहा कि मैं ज्ञान दाता और मोक्ष दाता हूँ मगर मैं ज्ञान दाता या मोक्ष दाता ऐसे नहीं हूँ कि मुझसे यह आशा रखे कि फूँक मार दूँ कि तू तर जाएगा. अगर किसी फूंक्र मारने वाले को गुरु करना है तो किसी और के पास जाय.

वे लोग जो मुझे गुरु मानते हैं और यह समझते हैं कि उनका गुरु फकीर चन्द पण्डित मस्त राम का पुत्र है या भागवती का पति है या पदमजंग का पिता है और होशियारपुर में रहता है तो उनका उद्धार नहीं हो सकता. मेरा कर्त्तव्य है कि जो मुझे गुरु मानते हैं मैं उनके जीवन के साथ खेलूँ नहीं. अगर अपने मान को या नाम को सच्चाई नहीं कहता तो यह कहना चाहिए कि मैं उनके

जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहा हूँ. उनके जीवन को नष्ट कर रहा हूँ. क्या मेरी कोई ड्यूटी नहीं है? मैंने अपने आपको दाता दयाल (महर्षि शिव) के सुपुर्द किया. मैं उनसे प्रेम करता था, आरती उतारता था और उनको सब कुछ समझता था. उस समय उन्होंने मेरे चेताने के लिए शब्द लिखा-

तू फकीर है कैसा भाई भूल भरम चित लाया क्यों।

तज अज्ञान की बातें जल्दी, ज्ञान ध्यान अलसाया क्यों।।

अखियाँ उलट तमाशा देखे अन्तर की लीला न्यारी।

सब कुछ अन्तर तेरे भरा है, इससे आँख हटाया क्यों।।

गुरु तो तेरे घट के वासी, तू गुरु घट में रहता है।

तूने भूल भरम से प्यारे, यह सिद्धान्त भुलाया क्यों ।।

बाहर भीतर गुरु है व्यापक, कहीं राजा कहीं प्रजा है।

चेले में गुरु, गुरु में चेला, नहीं तो उसे चेताया क्यों ।।

आप आपको आप पिछानो, राधास्वामी की है बानी।

कहा और का नेक न मानो, यह बानी विसराया क्यों।।

एक शब्द और भी है-

काहे बौराना-हाय फकीरवा ।।

तेरे घट में माल खजाना, भया दिवाना हाय फकीरवा ।।

जाकी चाह में खोजत डोले, मन में समाना हाय फकीरवा ।।

तीरथ ब्रत सभी तेरे भीतर, नहिं कहीं जाना हाय फकीरवा ।।

राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, नित गुन गाना हाय फकीरवा ।।

मैं समझता हूँ कि आप मेरे भाव को समझ गए होंगे. मैं आपको सच्चे हृदय से चेतावनी दे रहा हूँ. यदि तुम इस जीवन में कर्माधीन शब्द और प्रकाश को नहीं पहुँच सकते तो कुछ न करो. तुम जिस गुरु को मानते हो उसे शब्द और प्रकाश स्वरूप मानो. यही सन्त मत है. यही सनातन मत है. शब्द प्रकाश को आम जनता नहीं समझ सकती. गरुड़ पुराण में जो लिखा गया है वह आम जनता को दृष्टि में रखकर लिखा गया है. ऊँची बात को सब नहीं समझ सकते. आम जनता को एक प्रणाली में बाँधा हुआ है. शब्द और प्रकाश के न समझने का कारण यह है कि चित्त की वृत्तियाँ एकाग्र नहीं होतीं. यह मन कठिनता से क़ाबू में आता है और किसी को क्या कहूँ इस मन ने मुझे भी तो बड़े नाच नचाये हैं और कभी-कभी अब भी क़ाबू में नहीं रहता है. कबीर

साहब कहते हैं -

मैं जाना मन मर गया, मर कर हूआ भूत .

भूत होय पीछे लगा ऐसा मेरा सपूत ।।

आगे फिर कहा है-

सन्ता तब लग भय करें, जब लग पिंजर साथ ।

मन और सुरत की भक्ति

राधास्वामी मत और कबीर मत में इसलिए मन की भक्ति नहीं है. यहाँ सुरत की भक्ति है मगर सुरत को भक्ति शीघ्रता से नहीं की जा सकती, जब तक मनुष्य मन से भिड़ंत न कर ले और उसे जीत न ले. मन के साथ रोज़ कुश्ती होती रहती है. सुरत मन के क़ाबू में है. जब तुम 24 घण्टे ख्याल की दुनिया में फँसे रहते हो, तो इससे निकल तो नहीं सकते! हाँ, जब मनुष्य को ठोकर खाने पर दुनिया की स्थिति का अनुभव हो जाता है, इस ओर आता है.

इसलिए सन्त मत की शिक्षा आम जनता को नहीं हैं. जो गरुड़ पुराण में लिखा है वही सन्त मत में लिखा है जिस किसी ने गरुड़ पुराण को रचा है मैं सच्चे हृदय से कह रहा हूँ कि मैं उसे दाता दयाल का रूप समझता हूँ, क्योंकि दाता दयाल (महर्षि शिव) मेरे गुरु ने जो उपदेश काल और माया के चक्र से निकलने का मुझे दिया है वह वही है जो गरुड़ पुराण में लिखा है.

जन्म-मरण

इसलिये हर एक आदमी जो भी संसार में आया है वह बिना शब्द और प्रकाश का रूप हुए आवागमन से बच नहीं सकता है. मुसलमान लाख न मानें मगर उनके न मानने से वह आवागमन से बच नहीं सकते. चमगादड़ को यदि सूर्य दिखाई नहीं देता तो उसका अर्थ यह नहीं कि सूर्य नहीं है. यह तो प्रकृति का नियम है. हिन्दू धर्म की बात को छोड़ दो. तुम उसूल (सिद्धान्त) को लो. तुम्हारे अन्तर में कोई चीज़ है जो मरते समय निकल कर कहीं बाहर जाती है. वह क्या चीज़ निकल गई? वह चीज़ तुम में प्रकाश हैं. तुम कहोगे कि हमारा प्रकाश ख़त्म हो गया, मगर ख़त्म होकर गया कहाँ? यदि तुम अपने आप पैदा हो गए होते तो हम मान लेते. तुम्हारा शरीर बना पिता के वीर्य के कीटाणुओं से. वह कीटाणु खुराक से बने. खुराक पृथ्वी से बनी, मगर तब बनी जब उस पर सूर्य-तारा गण आदि का प्रकाश पड़ा. इसलिए तुम्हारा जो रूप है वह प्रकाश है. इसलिए वह चाहे हिन्दू हो, ईसाई हो, मुसलमान हो, उसे कर्मानुसार दूसरी लाईट (प्रकाश) लेनी पड़ेगी. कोई शक्ति उसे रोक नहीं सकती. चाहे कोई माने या न माने. अब कोई आवागमन से बचना चाहता है या नहीं यह दूसरा सवाल है. इसलिए स्वामी जी महाराज ने अपनी वाणी में बारह मासा के सावन

मास में साफ लिखा है कि जीव कैसे आता है और कैसे जाता है. जब सूक्ष्म शरीर धर्मराज के दरबार में आता है. वहाँ से चित्रगुप्त की सूरत में वह शरीर में कैसे आता है यह एक सवाल है. मैंने इस मसले को अपनी संतुष्टि के लिए हल किया है. मैं यह नहीं कहता कि दूसरे मेरी बात अवश्य माने. मगर जिस तरह मैं कहता हूँ आप मान जाओगे. हमारा सूक्ष्म शरीर, वासना का शरीर होता है और मृत्यु के बाद वह आकाश में फिरता रहता है. जहाँ कोई मौजूँ या उसके अनुकूल विचार वाले स्त्री पुरुष जब संभोग करते हैं तो जैसी उनकी वासना होती है उनकी वासना के अनुसार चुम्बकीय शक्ति (Magnetism) के नियम अनुसार उस ब्रह्मांड में से जहाँ वह सूक्ष्म शरीर फिर रहे हैं उन (स्त्री-पुरुष) के ख्याल में चले जाते हैं. वासना से वासना मिल जाती है. वह ख्याल उनके रक्त को गति देगा. रक्त का संबन्ध वीर्य से है. फिर वह सूक्ष्म वासना रूपी वस्तु वीर्य में आकर पुत्र या पुत्री के रूप में प्रकट होगी. तुम कहोगे यह कैसे? सुनो! जब एक ही ख्याल को कई लोग पकाते हैं तो उनकी इच्छा शक्ति बढ़ जाती है और उसका प्रभाव होता है. यही नियम ऋषियों के यज्ञ में काम करता था. ऋषि लोग यज्ञ करते थे और एक ख्याल को लेकर उसे पकाते थे. इससे उनकी इच्छा शक्ति बलवान हो जाती थी और उनको सफलता मिल जाती थी.

गरुड़ पुराण में लिखा है कि चित्रगुप्त से आकर सूक्ष्म शरीर अच्छी-अच्छी योनियों में आता है. मनुष्य की योनि में वह आएगा जो धर्मराज के दरबार तक पहुँचा है. वहाँ कौन पहुँच सकता है? वही जिसने नाम के सुमिरन और किसी के ध्यान से मन को ठहरा लिया है. जिसने ठहराया है, वह वहाँ से नरक-स्वर्ग में जाता है, क्योंकि उसका मन तरह-तरह के ख्यालात लिए हुए हैं और धर्मराज के दरबार तक पहुँच नहीं सकता. किसी ने मुहम्मद साहब का ख्याल किया, किसी ने मुहम्मद चिश्ती का, किसी ने कृष्ण का. उनको पूज्य मानकर वह उस नरक से बचकर और इन योनियों से बचकर कहाँ जाएगा? धर्मराज के दरबार में. वहाँ जो वासना उसके अन्दर गुप्त पड़ी फिरती है उनके अनुसार वह जन्म लेगा.

इस मन से या ख्याल के जगत से निकलने दो मार्ग हैं--शब्द और प्रकाश. सिवाय शब्द और प्रकाश के साधन के और कोई तरीका नहीं. क्यों? क्योंकि जब किसी का रूप धारण करोगे तो यह तुम्हारा मन बनाएगा. तुम विचार करोगे तो मन से करोगे. इस तरह मन में फँसे रहोगे. यह रहस्य है जो मैं स्पष्ट रूप से प्रकट कर रहा हूँ. दूसरों ने संकेत रूप से कहा है.

पाखण्डी गुरु

आज मैं हैरान होता हूँ कि मौजूदा राधास्वामी मत या दूसरे धर्म वाले किस तरह दुनिया को गुमराह कर रहे हैं. किसी को मन्दिरों के साथ बाँध दिया, किसी को मस्जिदों के साथ. किसी को किसी व्यक्ति या गुरु के साथ बाँध दिया. इन सबका संबन्ध मन से है. फिर आवागमन से छुटकारा कहाँ हुआ?

कुदरत का एक ही धर्म है जिसको गरुड़ पुराण ने कहा, राधास्वामी दयाल ने कहा, हिन्दू शास्त्रों ने कहा और यही मैं कहता हूँ. मेरी बात को समझो तब काम बनेगा. मैं राधास्वामी मत वालों को बताना चाहता हूँ कि जो मैं कह रहा हूँ वही स्वामी जी महाराज ने कहा है. उनकी वाणी है--

गुरु चेला व्यवहार जगत में, झूठा बरत रहा ।
का से कहूँ खोज नहिं काहू, धोखे धार बहा ।।
गुरु तो लोभ प्रतिष्ठा चाहत, शिष स्वारथ आन बंधा ।।
सच्चा मारग सुरत शब्द का, सो अब गुप्त भया ।।
गुरु चेला पाखण्डी कपटी, चौरासी में दोऊ गया ।।
शब्द सरूपी शब्द अभ्यासी, अस गुरु मिले तो पार हुआ ।।
सुरतवंत अनुरागी सच्चा ऐसा चेला नाम कहा ।।
गुरु भी दुर्लभ चेला दुर्लभ, कहीं मौज से मेल मिला ।।
शब्द सुरत बिन जो गुरु होई, ताको छोड़ो पाप कटा ।।
राधास्वामी यों कह गाई, बूझ वचन तब काज सरा ।।

यह गुरु चेला का व्यवहार बड़ा उत्तम है मगर मेरे जैसे पाखण्डी गुरुओं के हाथ जब आ जाता है सत्यानाश कर देते हैं. आज 10-15 दिन हुए एक भोला-भाला आदमी मेरे पास आया. उसने सुन रखा था कि गुरु बिन गति नहीं. मैं भी यही कहता हूँ कि गुरु बिन गति नहीं. 5-6 साल हुए उसने किसी को गुरु धारण किया. जो कुछ कमाया उसकी सेवा में खर्च किया. अन्त में उस गुरु ने उसकी स्त्री पर हाथ फेरा. मैं शब्द खण्डन की दृष्टि से नहीं कह रहा किन्तु दर्दे दिल से कह रहा हूँ. वह दुखी हुआ. गया था राम से मिलने और मुक्ति प्राप्ति को मगर स्त्री को भी गँवा बैठा चूँकि उसे बचपन में ख्याल मिला हुआ था कि गुरु बिन गति नहीं. अब न तो धोबी का कुत्ता घर का न घाट का. उसने अपना दुख एक व्यक्ति कर्मचन्द, जो कभी मेरे सत्संग में आया होगा, से कहा. उसने उससे कहा कि मानवता मन्दिर होशियारपुर में मेरे (फकीर चन्द) के पास चला जा. वह कहता है कि पहले एक से लगा तो यह हाल, यदि दूसरे से लगा तो जाने क्या हाल होगा? दूध का जला छाछ को फूंक-फूंक कर पीता है. रात को रोने लगा. मालिक से प्रार्थना की. वह सबकी सुनता है. उसने कहा कि यदि फकीर सच्चा है तो वह मुझे आकर दर्शन दे. सुबह को जब वह राम-राम जपने लगा तो मेरा रूप उस पर प्रकट हुआ, बातें हुईं और मैंने उसे कहा कि होशियारपुर में आजा. ऐ संसार वालो मैं शपथ-पूर्वक कहता हूँ कि मुझे इसका कुछ पता नहीं. न मैं

उसे जानता हूँ, न मैं उसके पास गया. फिर वह कौन था जो प्रकट हुआ?

अज्ञात सहायता का रहस्य

सुनो! मैं आज बताना चाहता हूँ कि यह रहस्य (राज़) क्या है? देखो! तुम सब मालिके कुल के अंश हो. जिस समय सुरत (आत्मा) संसार में मन के चक्कर में आकर दुखी होती हैं वह सच्चे दिल से पुकार करती है. वह दयाल मालिके कुल किसी न किसी रूप में जहाँ उसका काम बनना होता है वहाँ उसको वैसी हिदायत कर देता है. एक तो यह उसूल है. दूसरा उसूल यह है कि हर एक आदमी के ख्याल, वाणी और चरित्र (Features) इस आकाश मण्डल में मौजूद रहते हैं. मेरे ही नहीं हर एक पशु-पक्षी, मनुष्य आदि सबके. तो जहाँ-जहाँ जिस-जिस को जिस वस्तु की चाहना होती है वह ख्याल या रूप चिदाकाश में मौजूद रहते हैं. वह रूप वहाँ वहाँ जाकर उसकी सहायता करते हैं.

कहा है-

आपन आवे ताहि पै, ताहि तहां ले जाय ।।

संभव है अन्य लोगों में इस प्रकार प्रकट होने का ज्ञान दूसरे महापुरुषों को हो और वे दूसरों के पास जाते हों. मैं कोई खण्डन नहीं करता मगर जो बात मेरे साथ बीती है वह कह रहा हूँ. यदि आज मैं इन बातों को पर्दे में रखता हूँ, तो मेरा अपना जन्म बिगड़ता है. यदि मैं पैसा लेने के लिए अथवा अपने मानवता मन्दिर बनाने के लिए बात को छिपाता हूँ और कपट का व्यवहार करता हूँ तो जो व्यक्ति मेरी संगत करेगा वह रेडिएशन के नियम के अनुसार इष्ट पद को नहीं पहुँच सकता, क्योंकि हर एक आदमी के अन्दर से रेडिएशन निकलती रहती है.

तो फिर क्या काम है गुरु का? वह तुमको सतपद पहुँचाता है. आज धर्मदास (सेठ चन्द्रकान्त) को वह शब्द सुनाता हूँ जो कबीर साहब ने अपने धर्मदास को कहा था-

चल हंसा सतलोक हमारे, छोड़ो यह संसारा हो ।।

यह संसार काल है राजा, करम को जाल पसारा हो।

चौदह खण्ड बसै जाके मुख, सबको करत अहारा हो ।।

जारि वारि कोइला करि डारत, फिर-फिर ले औतारा हो ।

ब्रह्म विस्नु शिव तन धरि आये, और को कौन विचारा हो ।

सुन नर मुनि सब छल-छल मारिन, चौरासी में डारा हो ।

मद्ध अकास आय जहाँ बैठे, जोति सबद उजियारा हो ।।

सेत सरूप सब जहं फूले, हंसा करत विहारा हो ।।

कोटन सूर चन्द छिपि जैहैं, एक रोम उजियारा हो ।।

वही पार एक नगर बसतु है, बरसत अमृत धारा हो ।

कहें कबीर सुनो धर्मदासा लखो पुरुष दरबारा हो ।

अब देखो! धर्मदास को कबीर ने यह तो नहीं कहा कि मैं तुमको ले जाऊँगा. आज चन्द्रकान्त (धर्मदास) ने यह कहा था कि यह कह दो कि मैं तुमको ले जाऊँगा. मेरी बात को समझो, सुनो, मनन करो, यदि विश्वास आ जाएगा, तो मैं ले जाऊँगा. इस शब्द में जन्म-मरण से बचने का सिलसिला चला हुआ है. फिर आवागमन के चक्र से हम कैसे बचें? जब तक हम सूक्ष्म शरीर से अलग नहीं होते और उससे परे हमारा कारण शरीर है. कारण शरीर शब्द प्रकाश का है. जब तक शब्द और प्रकाश हमारे शरीर में है हम उसे आत्मा कहते हैं. जब हम मरेंगे तो हमारा शब्द और प्रकाश यहाँ से निकल कर जब बड़े प्रकाश और बड़े शब्द में मिल जाएगा तो हमारा आत्मा परमात्मा से मिल जाएगा. फिर अहं ब्रह्म कहने का तुमको क्या हक है? हो तो तुम वही मगर कहते हो तो गलत कहते हो कि तुम परमात्मा हो. केवल समझाने बुझाने को ऐसा कहना ठीक है मगर अमली पहलू से ठीक नहीं है.

खेलना और फंसना

फिर क्या इलाज? यह कि पहले अपने को शब्द और प्रकाश रूप बनाओ. संसार छोड़ो. हमारा रूप शब्द और प्रकाश है. इससे विचार निकलते रहते हैं. वह हमारी आत्मा के सामने आते हैं. उनके साथ हम खेलते रहते हैं, यह संसार है. जितने भी भक्त, उपासक और योगी, ज्ञानी हैं अपने अन्तर से ख़्यालात उठा-उठा कर उनके साथ अपने बाहर- अन्तर में खेलते है और उनमें फंसे रहते हैं. खेलना और चीज़ है और फंसना और चीज़ है. दुनिया में खेलने या काम करने के बिना तो गुजारा नहीं, मगर उस खेल में फंस जाना, आसक्त हो जाना, मोह ग्रसित हो जाना, ममत्व हो जाना गलत है. हम भाई को भाई समझें, बाप को बाप समझें मगर मोह ग्रस्त या आसक्त न हों. जब तक जीवन है मन रहेगा. उसे मार नहीं सकते. उसमें खेलो मगर अपने रूप को पहचान लो नहीं तो संसार के कष्टों से और जन्म-मरण से बचाव नहीं है. स्वामी जी का शब्द सुनो ताकि यों न कहो कि मैं जो कह रहा हूँ अपनी ओर से कह रहा हूँ -

मिली नर देह यह तुमको, बनाओ काज कुछ अपना ।

पचो मत आय इस जग में, जानियो रैन का सपना ।।

देह और गेह सब झूठा, भर्म में काहे को खपना ।।

जीव सब लोभ में भूले, काल से कोई नहीं बचना ।।

जलेंगे आग में निस दिन, बहुरि भोगें जनम मरना।

इस दृष्टि से विचार करो कि जितने भक्त-उपासक हैं उनकी भक्ति और उपासना मन से होती है. क्या वे उसमें पचे या फंसे नहीं रहते? आज उपास्यदेव के दर्शन हो गये तो प्रसन्न वरना अप्रसन्न. कभी समय था जब मैं राधास्वामी मत की पुस्तकें पढ़ता था. उनमें आता था कि यह रहस्य योगी, इंद्र, मुनींद्र आदि भूल गये. मेरे कान इस वाणी को सुनने को तैयार नहीं होते थे मगर अपने अनुभव के बाद कहे जाता हूँ कि जो स्वामी जी ने कहा है वह ठीक है. अगर मेरी वर्णन शैली कठोर है तो स्वामी जी की भी कठोर है. हां, स्वामी जी मेरी तरह समझाते तो राधास्वामी मत में झगड़े न होते. बात वही है. मानसिक पूजा. एक गुरु से बंधा है, एक दौलत के साथ, एक राम के साथ! एक का गुरु मरा, वह रोया और किसी का पुत्र मरा तो वह रोया. फिर दोनों में अन्तर क्या? कुछ नहीं.जब तक कोई इस मन के चक्र से नहीं निकलता, धर्मराज से तिनका नहीं टूटता. धर्मराज से तिनका तब टूटेगा जब तुम अपने अन्तर शब्द और प्रकाश को प्रकट करोगे, देखोगे. धर्मराज का काम है न्याय करना. यदि तुम न्याय के राज से दयाल के देश में जाना चाहते हो तो शब्द और प्रकाश के सिवाय कोई उपाय नहीं है. यही बात गरुड़ पुराण में है कि परब्रह्म के देश और शब्द ब्रह्म के देश में वासा प्राप्त करो.

इस सिलसिले में मैं अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि जो लोग अच्छे आचरण वाले होते हैं और वासना रहित होकर शरीर छोड़ते हैं उनका मन बना रहता है. सन्त मार्ग में इस अवस्था का नाम है महासुन्न. ऐसे लोगों का सूक्ष्म शरीर निर्वासना होता हुआ ब्रह्मांड में रहेगा क्योंकि उनका शब्द और प्रकाश खुला नहीं है. ऐसे जीवों को जो महासुन्न में रहते हैं वासना रहित हैं तो जब कोई सन्त उधर से जाता है, चूँकि वह शब्द और प्रकाश से ब्रह्मण्ड में जाता है, तो उनको अपने साथ ले जाता है. यह इसी प्रकार है जैसे छोटी बत्ती जल रही है वहाँ बड़ा बल्ब लगा दो तो वह बड़े की रोशनी में लय होकर उसका रूप हो जाएगी.

ब्रह्म-ब्रह्म दुनिया कहती है. ब्रह्म का अर्थ है बढ़ना और सोचना. जो प्रकाश हम में है वही घट में रम रहा है. यही ब्रह्म है. मुझे बताओ ऐसा कोई देश है जहाँ प्रकाश के बिना दुनिया बन रही हो? सब जगह प्रकाश ही प्रकाश है. मुझे और कोई प्रकाश दिखाई नहीं पड़ता. अतः ब्रह्ममय होने को शब्द और प्रकाश का साधन है.

कल के सत्संग में मैंने यह बताया था कि मनुष्य मर कर कैसे जाता है, कहाँ जन्म लेता है आदि-आदि. अब आगे सुनो.

मन और चैतन्य अवस्था का भेद

मनुष्य का जीवन उसकी मनन शक्ति से होगा. जब बुद्धि पैदा होती है तब चैतन्यता का ज्ञान होता है. यदि बुद्धि न हो तो उसका भान न होगा. मन है सूक्ष्म शरीर. यह मन ही काल है

मन ही माया है. जब जीवात्मा ने जीवन में विचार से नहीं किन्तु अनुभव से ज्ञान प्राप्त कर लिया तो यह बहुत सा मरहला अवश्य हल हो जाएगा मगर मन को पूर्ण दमन करने पर जो उसकी अपनी अवस्था बाकी रही जब तक उस अवस्था में वह स्वंय नहीं जाएगा तब तक उसका आवागमन छूट नहीं सकता. ज्ञानियों को भी आवागमन हो जाता है. किन ज्ञानियों को भी आवागमन हो जाता है. किन ज्ञानियों को? जो मनन शक्ति से अपने रूप का अक़्ली तौर से ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं मगर अपने स्वरूप का अनुभव नहीं करते. साधन से मन को खत्म करने के बाद जो अवस्था बाकी रह जाती है वह कहने सुनने का विषय नहीं. वह वर्णन में नहीं आती. वह चेतन अवस्था है. उसको अनुभव करो. लाख वेद पाठ करो, प्रवचन सुनो, रामायण पाठ करो अथवा और कोई पाठ करो. तुम पर वह अवस्था तब तक नहीं आएगी जब तक तुम साधन करके अपने मन को निर्मल करते हुए मन को छोड़ न जाओ. मन को छोड़ने को यदि तुम केवल प्रकाश का ही साधन करते रहोगे तो ब्रह्म देश में जो चेतनता है वह मन की चेतनता है, वही रहती है. गरुड़ पुराण कहता है कि इसके आगे परब्रह्म और शब्द ब्रह्म में जाओ. यही बात राधास्वामी मत वाले कहते हैं कि शब्द योग के बिना स्वरूप का ज्ञान नहीं हो सकता. एक ज्ञान तो यह है कि बुद्धि से विश्वास कर लिया या निर्णय कर लिया. दूसरा ज्ञान वह अनुभव-ज्ञान है, उसका रूप हो जाना. इसलिए सत्संग और साधन बताए गए हैं.

देखो! लाखों सत्संगी अपने कल्याण या 84 से बचने को विशेषकर हिन्दुओं में, गुरुओं के साथ लगे हैं. मेरे साथ लगे हैं. मेरे साथ भी बहुत से लगे हैं. मैं यह चाहता हूँ कि उनको सच्ची बात बता जाऊँ कि उनका कल्याण को जाय. मैं यह नहीं चाहता कि फकीर चन्द पुत्र पण्डित मस्तराम को गुरु मानो. इससे तुम्हारा कल्याण नहीं होगा. असली अवस्था तो निज स्वरूप है परम तत्त्व है. कबीर ने उसे अनामी, गुरु नानक ने उसे अकाल कहा है. सनातन धर्म में शास्त्र कहते हैं कि सत को असत ने ढक रखा था. सत है प्राकट्य. असत वह अवस्था है जिसमें से तमाम रचना निकलती है. उसकी खोज करने जाता है वह अपना रूप हो जाता है. वह क्या है? कोई नहीं कह सकता.

इष्ट का रूप-निराकार और साकार

इसलिए इस आवागमन से बचने को अपना इष्ट वह मानो जो सबसे ऊँचा है. मगर कई ऐसे हैं जो उस परमात्मा को सर्वव्यापक मानते हैं और कोई रूप नहीं बनाते जैसे आर्य समाजी या इस्लाम धर्म वाले. मैं अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि जो मन के ख्याल से उस परम तत्त्व या खुदा को बेरूप-बेरंग मानकर उपासना करते हैं वे यमराज के चक्र से बच नहीं सकते हैं. लोग कहते हैं कि तुमको ऐसा कहने का क्या हक है? मेरा हक है, किसी आधार पर और वह है तुम्हारा अपना रोज़ का जीवन. यदि तुमने कोई इष्ट या आइडियल नहीं बनाया है जहाँ मन ठहर

सके तो यह गुनावन (विचार) में लगा रहेगा. निराकार पर वृत्ति ठहर ही नहीं सकती. अंधेरे का ध्यान करो, मगर मन सोचने लग जाएगा. इसलिए मालिक को जब मानो मानव रूप में मानो. हिन्दू शास्त्रों में दिव्य शक्तियों को मानव रूप देकर वर्णन किया है और मूर्ति पूजा बताई गई है. सन्त मत उसे गुरु के रूप में मानता है. दाता दयाल महर्षि 'शिव' ने कहा हुआ है कि सत-स्वरूप को मानव रूप में मानो. यह सब इसलिए है कि मन को ठहराने को साकार का रूप है, सगुण भक्ति है. बिना साकार रूप के मन ठहरेगा कैसे और किसके सहारे? यह बात सोचने, समझने और अमल करने से समझ आ जाएगी.

सुमिरन ध्यान की आवश्यकता

सुरत को ठहराने के लिए शब्द और प्रकाश है. जब तक तुम्हारा मन साथ है अर्थात सोच-विचार और मनन है उस समय तक रूप का ध्यान और सुमिरन कभी न छोड़ो. दुनिया वाले गृहस्थी जो दुनिया की आशाओं में हैं वे यदि हिन्दू हैं तो चाहे वे राम को, कृष्ण को, शिव को पूजें, मुसलमान हैं तो ख़ुदा को पूजें, सिख गुरु नानक को पूजें, मैं इन बातों के रगड़े में नहीं पड़ता. मैंने तो आपको गुरु, सिद्धान्त या नियम बता दिया. कई गृहस्थी ऐसे देखे गये कि जिन्होंने साकार रूप का साधन परमार्थ के ख्याल से छोड़ दिया. सुमिरन-ध्यान छोड़ा. उनकी दुनिया बिगड़ गई. इसको स्पष्ट रूप से यों समझ लो कि तुम दुनिया में रहते हो. गृहस्थी हो. तुमको सांसारिक वस्तुओं की आवश्यकता रहती है. ये वस्तुयें तुमको संकल्प के दृढ़ या पक्का होने पर मिलती हैं. यदि तुम संकल्प या मन के चक्र से ऊपर चले गए तो फिर सांसारिक दशा से उदासीनता आ जाने के कारण दुनिया नीरस हो जाएगी. यह अनुभव का विषय है. करके देख सकते हो या मेरी बात का विश्वास कर लो. दाता दयाल महर्षि 'शिव' जी का जीवन सामने है. वे सत्पुरुष थे. उन्होंने 'लामकानियत में घर किया' ऐसे-ऐसे शब्द कहे हैं. वे पिछली उम्र में कहाँ गये? लामकानियत में, अलख में, जहाँ दुनिया का ख्याल नहीं रहा. परिणाम यह हुआ कि धाम (राधास्वामी धाम) उजड़ गया. उनके हज़ारों शिष्य थे मगर खाने तक को ढंग से नहीं मिलता था.

इसलिए कहे जाता हूँ कि उन लोगों को छोड़ कर जिन को परमार्थ की लालसा है अर्थात सांसारिक वस्तुओं की आवश्यकता या इच्छा नहीं है किसी को सुमिरन-ध्यान नहीं छोड़ना चाहिए. पिछली आयु में छोड़ दे तो हानि नहीं. राधास्वामी मत में जन साधारण को सुमिरन-ध्यान-भजन तीनों का अभ्यास इकट्ठा बताया है. साधक केवल शब्द का ही अभ्यास न करें. तीनों अभ्यास करें ताकि लोक भी न बिगड़े और परलोक भी न बिगड़े और पिछली अवस्था में चल कर लय होने का प्रयत्न करें.

ध्यान के साधन से इच्छा शक्ति (Will power) बलवान हो जाएगी और जैसा-जैसा सोचते

रहोगे वैसी-वैसी तुम्हारा दशा होती रहेगी. इससे लोक भी बना सकते हो और परलोक भी.

जीवन यापन के दो मार्ग कहे गये हैं- प्रवृत्ति और निवृत्ति. मैंने पहले बताया है कि जिन्हें परमार्थ की लालसा है, जो दुनिया से उपराम हो चुके हैं और धन, सन्तान, मान, बड़ाई की जिन्हें इच्छा नहीं रही है केवल वे ही निवृत्ति मार्ग में चलें अन्यथा उनकी दुनिया बिगड़ जाएगी. साथ ही यह भी बताया है कि प्रवृत्ति मार्ग में सुमिरन ध्यान, भजन करते हुए अपने आदर्श की ओर चला जाय. मन को एकाग्र करो मगर शुभ संकल्प रखो क्योंकि जब तुम अभ्यास करते हो जो वासनाएँ तुम्हारे अन्दर बैठी हुई हैं वे फुरती हैं. यदि विचार अच्छे और शुभ नहीं है तो यह सुमिरन बजाय लाभ के हानिकारक होगा.

गुरु और सत्संग

इसलिए राधास्वामी दयाल ने कहा है कि इस चक्र से निकालने वाला है सत्गुरु. जब तक पूर्ण पुरुष की संगत नहीं करोगे, ज्ञान नहीं मिलेगा और न जीवन सुधरेगा. इसलिए कबीर मत या राधास्वामी मत में जो कुछ है गुरु है और सत्संग है. मैंने गुरु भक्ति और नाम भक्ति को इतना स्पष्ट कर दिया है कि भ्रम और शंकाओं की गुंजाइश नहीं रही. इस समय जो हमारे घरेलू राष्ट्रीय, धार्मिक और सामाजिक हालात हैं उसको ठीक करने को माँग और पूर्ति(Demand and Supply) के नियम के अनुसार जो मैं कहता हूँ उसे समझ लिया जाय तो कल्याण हो सकता है.

जो बात मैंने कही है वही कबीर साहब ने कही है. उसका प्रमाण कबीर की वाणी से देता हूँ -

वारी जाऊँ मैं सत्गुरु के, मेरा किया भरम सब दूर ।

चन्द चढ़ा कुल आलम देखे, मैं देखूँ भ्रम दूर ।

हुआ प्रकाश आस गई दूजी, उगिया निर्मल नूर ।।

माया मोह तिमिर सब नासा पाया हाल हजूर।।

विषय विकार लार है जेता, जारि किया सब धूर ।।

पिया पियाला सुधि बुधि बिसरी, हो गया चकनाचूर।।

हुआ अमर मरे नहिं कबहूँ, पाया जीवन मूर ।।

बन्धन कटा छूटिया जम से, किया दरस मंजूर ।।

ममता गई भई उर समता, दुख सुख डारा दूर ।।

समझे बनै कहे नहिं आवे, भयो आनन्द भरपूर ।।

कहै कबीर सुनो भाई साधो बजिया निरमल तूर ।।

गुरु क्या करता है? वह सच्चा मार्ग बता देता है.

दाता दयाल (महर्षि शिव) का मैं बड़ा कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मेरा अपना भ्रम दूर कर दिया. मैं द्वन्द्व में फँसा था. जब उन्होंने देखा कि यह समझ नहीं सकता तो उन्होंने मुझे गुरु बना दिया. जो लोग मेरा ध्यान करते हैं और उनको जो अनुभव होते हैं कि मैं फकीर) उनको अभ्यास में दवा देता हूँ और वे उससे अच्छे हो जाते हैं तथा उनको सन्तान दे जाता हूँ मगर वह बताने वाला या देने वाला मैं नहीं होता तो फिर मेरा पर्दा उठा या नहीं! जब यह ज्ञान हो गया कि यह तो उसका अपना ही मन था तो मैं वहाँ रहने को विवश हुआ जहाँ मन नहीं होता. अब मैं मन के तरह-तरह के संकल्पों- विकल्पों में फँस नहीं सकता. जिस व्यक्ति का मन तरह-तरह के ख़्यालों में फँसा है वही यमराज में जाता है. हमारा यमराज क्या करेगा? वाणी (बारहमासा) में आगे लिखा है-

जो जो भजन से चूके । तिनके मुख जम पल पल थूके ।।

ऐसी कुगति होयगी सबकी । जो नहिं धारें सत्गुरु अब की ।।

सत्गुरु बिन कोई न बाचे । नाम बिना चौरासी नाचे। ।

धन्य भाग हम सत्गुरु पाया । चढ़ी सुरत मन गगन समाया ।

जो कष्ट हमको यमराज के यहाँ मिलते हैं उनका वर्णन गरुड़ पुराण में भी है और राधास्वामी दयाल की वाणी में भी है. मुझे सत्गुरु मिल गये. यह मेरे धन्य भाग हैं. बड़ा भाग्यशाली है वह पुरुष जिसे सत्गुरु मिल गया या मिल जाए. चूँकि मैं अपने को सत्गुरु कहता हूँ इसलिये इसका अर्थ यह नहीं कि फकीर चंद पुत्र पण्डित मस्तराम मिल गया और उसका धन्य भाग हो गया. धन्य भाग इस तरह हो गया कि जब वह मेरे या किसी गुरु के सत्संग में जाकर सत्संग को सुनेगा, उनके वचनों को गुनेगा और गुनगुन कर उसके सारांश को धारण करके उसके अनुसार चलेगा. यह है असली गुरु-भक्ति और मन की सेवा मगर जो जीव निचली श्रेणी के हैं उनको तन और धन की सेवा आवश्यक नहीं. स्वामी जी ने वाणी में कहा है--

गुरु नहिं भूका तेरे धन का । उन पै धन है भक्ति नाम का ।।

पर तेरा उपकार करावें । प्यासे भूके को दिलवावें ।।

तथा --

गुरु को ऐसा चाहिए, शिष का कछु न लेय ।

शिष को ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ देय ।।

ऐसे लोगों के लिए मानवता मन्दिर बनवाया हुआ है. उसमें बहुत सी विधवाओं की पेंशन लगाई हुई

है. (श्री गिरधर सिंह वारंगल निवासी को संकेत करते हुए कहा ऐ गिरधरसिंह! तुमको मालिक इतना देगा कि कमी न रहेगी. यदि आमदनी बढ़ जाय तो फ़्री अस्पताल खोल देना.

देखो ! मेरी स्त्री पैसा-पैसा करती रहती थी. मैं फकीर हूँ. मैंने कभी पैसे की परवाह नहीं की. वह धीर-धीरे जोड़ती रही और मरते समय १९७९ रु छोड़ गई. सोचता हूँ वह जोड़-जोड़ कर मर गई. क्या साथ साथ ले गई! कहा है--

खाय पकाय लुटाय कर, कर ले अपना काम ।

चलती विरियाँ रे नरा, धर्म ही आवे काम ।।

मगर इसका अर्थ यह नहीं कि आदमी अपनी कमाई का दुरूपयोग करें, व्यर्थ करें और नेक काम के लिए पैसा जोड़ें नहीं. अपने पैसे का सदुपयोग करो और वह यही है जो गुरु तुमको बताता रहे. मगर आजकल के तो गुरु लोभी लालची होकर चेलों से धन छीन कर अपना काम बनाते हैं. ऐसे गुरुओं से बचना चाहिए.

मन और धन की सेवा तो बता दी गई. अब रही तन की सेवा, तो वह भी गुरु की आज्ञानुसार निष्काम भाव से करनी चाहिए. तो गुरु-भक्ति से क्या मिला? हमको समझ आ गई. अपने निज स्वरूप का ज्ञान हो गया. फिर यमराज का नाता छूट गया. इस रहस्य को संतों ने पहले भी सैन-बैन में कहा था मगर जो समझने वाले थे समझ गये. जो नहीं समझ सके वे कोरे रह गये. मैं डंडे मारता हूँ. अर्थात बात को स्पष्ट करके कह रहा हूँ. जो मेरा सत्संग सुनते हैं और केवल सत्संग की नीयत से आते हैं उनका बेड़ा पार है. राधास्वामी ने भी अपनी वाणी (माया संवाद) में ऐसा ही कहा है. वहाँ माया कहती है कि स्वामी जी आपने जीवों को रास्ता बड़ा सुगम कर दिया. यदि जीव तेरे हैं तो मैं भी तो तेरी हूँ. इस पर स्वामी जी का उत्तर है कि ऐ माया ! मैंने तेरे सब छल-बल तोल लिए हैं. मेरा जीव तू नहीं ले जा सकती. वह सत पद जाएगा.

माया संवाद में स्वामी जी के उत्तर का भाव जो मैंने समझा है वह यह है कि जो उनके वचनों को समझेगा, गुनेगा, मनन करेगा और उन पर चलेगा वह माया के चक्र में नहीं फँस सकता. केवल राधास्वामी मत में शामिल होने अथवा राधास्वामी-राधास्वामी कह देने मात्र से काम नहीं निकल सकता. इसी तरह जिन्होंने ध्यान पूर्वक मेरा सत्संग किया है और रहस्य को समझा है, उस पर मनन किया है वे मन के ख़्यालों में नहीं फँस सकते. सत्संग से असली लाभ उन्हीं को होता है जो परमार्थ की दृष्टि से सत्संग में आते हैं. इसलिए मैं बार-बार कहा करता हूँ कि सत्संग बच्चों का तमाशा नहीं है और न कोई सामाजिक मीटिंग है. सत्संग में सत्संग की ग़र्ज़ से जाना चाहिए. सुनो! वाणी में आगे कहा गया है--

धन्य भाग हम सत्गुरु पाया । चढी सुरत मन गगन समाया ।।

यह गगन तुम्हारा दिमाग है. जब मनुष्य सत्संग की बात को दिमाग में रखकर संकल्पों-विकल्पों को छोड़ देता है तो निर्विकल्प यानी संकल्प रहित अवस्था में चला जाता है और तब उसे मस्ती या आनन्द मिलता है और वह उसमें झूमता है.

वाणी में फिर आगे आता है--

सखियाँ मिल सब गावन लागी । माया ममता देखत भागीं ।।

जब मन में संकल्प नहीं उठते तो खुशी, मस्ती आनन्द की अवस्था आ जाती है. उस समय माया और ममता किनारा कर जाती हैं अर्थात उनका कोई प्रभाव मनुष्य पर नहीं रहता. इसको स्पष्ट रूप से और समझ लो. लोग अभ्यास करते हैं. अन्तर में जाकर मन से लड़ाई करते हैं. मन तरह-तरह के संकल्प उठाता है और तुम उनको हटाना चाहते हो, मगर मन जब काबू आयेगा गुरु द्वारा आयेगा.

तुम लोग सोचते हो कि फकीर बाबा या अपना गुरु आयेगा. वह इस मन पर काबू दिलायेगा मगर फकीर या दूसरा गुरु आयेगा वह भी तो तुम्हारा अपना मन ही होगा. यह तुम्हारे ही मन की कल्पित मूर्ति तो होगी. फिर मन कहाँ क़ाबू में आया? लोग अभ्यास करते हैं, मन की तरंगों को रोकना चाहते हैं मगर सफलता नहीं मिलती.

कौन समझेगा फकीर, बात जो तू कह रहा ।

मौज जाने, क्यों मैं यह राज़े असला कह रहा ।।

दर्दे दिल रख करके अपने जैसों के लिए ।

राज़ को जो गुप्त था मैं खोल रहा ।।

इसलिए मन की चालों से निकालने वाली तुम्हारी समझ है, विवेक है, ज्ञान है कि तुम मन नहीं हो. यह समझ, विवेक और ज्ञान तुमको, यदि पूर्ण रूप से ध्यान देकर सत्संग किया जाय, सत्संग से मिल सकता है. सिवाय इस समझ के या ज्ञान के मन से निकल नहीं सकते. मन जब क़ाबू आयेगा ज्ञान की अग्नि से आयेगा. ज्ञान का नाम ही गुरु है. दाता दयाल ने गुरु को समझाते हुए एक शब्द लिखा है वह सुनो--

गुरु रूप

गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी ।।

गुरु को मानुष जानकर, भक्ति का करें व्यवहार ।

सो प्रानी अति मूढ़ हैं, कैसे जाएँ भव पार ।।

देह के बने अभिमानी ।।

गुरु को मानुष जान कर, सीत प्रसादी ले ।।
सो तो पशु समान हैं, संशय में अटके ।।

गुरु तत्त्व न जानी ।।

गुरु को मानुष जानकर, मानुष करें विचार ।
सो नर मूढ़ गँवार हैं, भूल रहे संसार ।।

मोह के फाँस फँसानी ।।

गुरु को मानुष मानकर, भेड़ की चलते चाल ।
वह बन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया काल ।।

पड़े योनि की खानि ।।

गुरु नाम आदर्श का, गुरु है मन का इष्ट ।
इष्ट आदर्श को न लखै, समझो उसे कनिष्ठ।।

बात बूझै मन मानी ।।

गुरु भाव घट में रहें, अघट सुघट की खान ।
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ़ समान ।।

नहिं गुरु रूप पिछानी।।

चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकाश ।
अपने में दोनों लखे, वही गुरु का दास ।।

रहे गुरु पद घट ठानी ।।

सुरत शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरु का रूप ।
शब्द गुरु की परख बिन, डूबे भरम के कूप ।।

नर जन्म गँवानी ।।

गुरु ज्ञान का रूप है, गुरु ज्ञान का सार ।
गुरु मत गुरु गम को लखे, फिर नहिं भव भय भार ।।

कमल जैसी गति आनी ।।

राधास्वामी सत्गुरु सन्त ने, कही बात समझाय ।

जो नहिं माने वचन को, उरझ उरझ उरझाय ।।

कौन समझे यह बानी।।

देखो! इस शब्द में दाता दयाल (महर्षि शिव) ने स्पष्ट रूप से कहा है--

गुरु नाम आदर्श का, गुरु है मन का इष्ट ।

इसलिए गुरु को जब तक दाढ़ी-मूँछ वाला 'फकीर' समझते रहोगे, तुम मन के चक्र से नहीं निकलोगे, न आवागमन से बचोगे और न सन्त पद मिलेगा.

(सेठ दुर्गादास चण्डीगढ़ वालों को सम्बोधन करते हुए कहा, दुर्गादास! तुमने बीस हज़ार रूपया देकर मानवता मन्दिर बनवाया है. यह तुम्हारी सेवा है. इस सेवा के बदले मैं चाहता हूँ कि तुमको कुछ दे जाऊँ कि तुमको सन्त पद मिले. यह इस तरह नहीं कि मैं फूँक मार कर तुमको सन्त पद पहुँचा दूँगा. मैं सारी उम्र 'आ, ई' , नहीं पढ़ाता रहूँगा. मेरी बात को समझो और उस पर चलो. कितने स्पष्ट और खुले शब्दों में आपको इस गूढ़ रहस्य को बता रहा हूँ. यदि नहीं समझते तो क्या करूँ! मैं यह काम इसलिये नहीं कर रहा कि तुमसे रूपया इकट्ठा करूँ. मैं मन्दिर बनाने नहीं आया हूँ न नगर बसाने आया हूँ. न मानवता मन्दिर से मैंने अपना कोई संबन्ध रखा है. मेरा मिशन दुनिया नहीं, न ज़र-ज़मीन है. मेरा मिशन तुम लोगों को अपने निज घर पहुँचाने का है. दाता दयाल ने जो मार्ग बताया और जिस मार्ग से मैं पहुँचा वही तुमको बता सकता हूँ. वे रास्ते हज़ारों हैं. ऊपर के शब्द में कहा है--

चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकाश ।

अपने में दोनों लखे, वही गुरु का दास ।।

'अपने में दोनों लखे' अर्थात गुरु को अपने से बाहर न समझे. मैं तुमको या दूसरों को अपने शरीर के साथ बाँधना नहीं चाहता. तुमको गुलाम बनाना नहीं चाहता. इसका समझ में आना कठिन है मगर इसका इलाज है--

कर संगत निर्बन्ध की, पल में लेय छुड़ाय ।

रोज़-रोज़ की संगत और रोज़-रोज़ के वचनों की मार-धाड़ तुमको आगे ढकेलती रहेगी और तुम्हारी तवज्जह (सुरत) को ऊपर ले जाएगी.

सुरत शब्द गुरु शब्द है, शब्द गुरु का रूप ।

शब्द गुरु की परख बिन, डूबे भरम के कूप ।।

गुरु ज्ञान का रूप है गुरु ज्ञान का सार ।

गुरु मत गुरु गम को लखे फिर नहि भव भय भार ।।

जो बात दाता दयाल (महर्षि शिव) ने कही है वही मैं कह रहा हूँ. चूँकि वाणी समझ में नहीं आती क्योंकि सुरत इतनी चढ़ती नहीं इसलिये घबराहट होती है जैसे झूला पर झूलने में पेंग जब ऊँची जाती है तो डर लगता है, ऐसे ही हमारी दशा है मगर आनन्द लेने वाले जितने ज़ोर से पेंग चढ़ाते हैं उतना ही आनन्द मिलता है.

'गुरु ज्ञान का रूप है' अर्थात जब गुरु मिल गया, ज्ञान हो गया तो संसार का भय नहीं सताएगा. विचार उठते रहेंगे मगर समझ आने से वह तुमको खींच नहीं सकते.

कई ऐसे ख्याल उठते हैं जिन्हें तुम नहीं चाहते. मेरे अन्दर अब भी उठते हैं. मगर चूँकि ज्ञान प्राप्त है इससे वे कट जाते हैं क्योंकि सुरत को टिकाने को केन्द्र मिला हुआ है. जिन्हें सुरत को टिकाने का केन्द्र नहीं मिला है उनको कठिन है. इसलिए सुरत को टिकाने को केन्द्र बनाओ.

सुरत को ठहराने के केन्द्र

सवाल हो सकता है कि किसे केन्द्र बनाया जाय. वह केन्द्र या आदर्श होना चाहिए कूटस्थ, आधार, परमतत्त्व. मगर उसको किसी रूप में मानना पड़ेगा. चाहे मेरे रूप में मानो, चाहे अपने गुरु के रूप में मानो या किसी और रूप में.

सावन मास के बारह मासे में आगे कड़ी है--

तिनको सावन काला नागा। डस डस खावे लागे आगा ।।

सावन मास शरीर का जीवन है. जिसने इसमें ज्ञान प्राप्त कर लिया, बात समझ में आ गई वह यमराज और धर्मराज से बच जाएगा.

बाहर वर्षा रिमझिम होई । घट में उनके अग्नि समोई ।।

अग्नि लगी मानो तन मन फूँका । उनके भावे पड़ गया सूखा ।।

बाहर ठंडक है मगर अन्तर में चिन्ता रूपी अग्नि सता रही है. देखो! बड़े-बड़े सेठ, धनी-मानी, मन्त्री, राजे दुखी हैं अशान्त हैं. उनको कोई न कोई चिन्ता फ़िक्र लगी हुई है. किसी को धन मान की चिन्ता है, किसी को ईश्वर मिलन की चिन्ता है. किसी को आवागमन से बचने की चिन्ता है, किसी को जप-तप की. कहा है--

चिन्ता बुरी बलाय है, जीवन ही को खाय ।

फिर इस चिन्ता का अन्त कब होता है? आगे की कड़ी सुनो--

पिया बिन सावन कैसा आया । जेठ तपन जस जीव लखाया ।

जीव जले विरह अग्नि में, क्यों कर शीतल होय।

बिन वर्षा पिया वचन के, गई तरावट खोय ।।

जिनको कन्थ मिलाप है, तिन मुख बरसत नूर !

‘ शीतल हिरदा सुखी, बाजे अनहद तूर ।।

पिया है क्या? वह अवस्था जहाँ स्त्री-पुरुष मिल कर एक हो जाते हैं. कोई चिन्ता नहीं रहती. वैसे ही मनुष्य आत्मा में रहकर चिन्ता फ़िक्र नहीं करता. निर्भय तथा अडोल हो जाता है. उसको ही पिया का मिलाप है, मगर यह मार्ग सांसारिक वासनाओं में ग्रस्त लोगों के लिये नहीं है.

इसलिए इष्ट पद क्या है, निर्भयता, अडोलपना, निर्वैरपना. जो निर्भय रहता है, न स्वयं डरता है न दूसरों को डराता है, अडोल रहता है, चिन्ता फ़िक्र उसे चलायमान नहीं करते. किसी से न द्वेष, ईर्ष्या करता है न वैर करता है. इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए साधन और सत्संग है तथा कुछ ज्ञान कुछ अनुभव है. इस पर दाता दयाल (महर्षि शिव) का एक शब्द सुन लो जिससे मेरे कथन की पुष्टि होती है--

जिसके मन नहिं चिन्ता व्यापै, जग में वही है दास फकीर ।

अभय रहे चित गुरु पद राखे, धीर वीर गम्भीर ।

शान्त भाव व्यवहार परमारथ, कभी न हो दिलगीर ।

अपनी पीर न उर में साले, लखे पराई पीर ।।

पर की पीर न उर में साले, सो अधरम बेपीर ।।

अपनी रूप संभाले पल पल, काट मोह ज़ंजीर ।

यह फकीर है गुरु का प्यारा, महावीर चित धीर ।

चाह गई चिन्ता सब भागी, आया भव निधि तीर ।

हंस रूप धर त्याग नीर को गह लिया ज्ञान का क्षीर ।।

राधास्वामी गुरु का सच्चा बालक, पहरि विराग की चीर ।

तन के रहते मुक्त विदेही, सहे न द्वन्द्व शरीर ।।

मैंने पिछले सत्संगों में जीव की उत्पत्ति तथा मरने के बाद कहाँ जाता है, यमराज आदि से

बचने का क्या उपाय है आदि बातों का वर्णन किया है. मेरे इस कथन का कुछ ध्येय है और वह यह है कि जीवों को असलियत का ज्ञान हो जाय और उनको जीवन में शान्ति मिल जाय. वही बात कबीर मत, राधास्वामी मत में है और वही सनातन धर्म में है. अब उससे आगे कहना चाहता हूँ.

शब्द और प्रकाश से परे-अजर अमर पद

वह क्या? माना कि सुमिरन-ध्यान करने से यमराज के चक्र से बचाव हो गया. शब्द और प्रकाश रूप होने से 84 चक्र से बचाव हो गया. यदि 84 के चक्र से बच गये तो फिर कहाँ रहोगे? यहाँ गरुड़ पुराण चुप है. इससे आगे का कोई वर्णन नहीं करता है. इससे आगे संतों का मार्ग है. 84 के चक्र से बचने के बाद जो हमारा असली घर है वहाँ रहे.

सब जानते हैं कि इस घर में सब अवतार, पीर पैगम्बर, सन्त, महात्मा कबीर, राधास्वामी दयाल आदि सब चले गये. कबीर साहब उस देश की बाबत अपने शब्द में क्या कहते हैं सुनो--

हो तुम हंसा सत्त लोक के, पड़े काल बस आई हो ।

मनै सरूपी देव निरंजन, तुम्हें राखि भरमाई हो ।।

पांच पचीस तीन के पिंजरा, तेहि मां राखि छिपाई हो ।

तुमको बिसरि गई सुधि घर की, महिमा अपन जनाई हो ।।

निरंकार निर्गुन है माया, तुमको नाच नचाई हो ।

चर्म दृष्टि का कुलफा दे के, चौरासी भरमाई हो ।।

चार वेद हैं जाको स्वासा, ब्रह्मा स्तुति गाई हो ।

सो कित ब्रह्मा जक्त भुलाये, तेहि मारग सब जाई हो ।।

तिनके मिले परम सुख उपजै, पद निर्वाना पाई हो ।।

चारों जुग हम आन पुकारा, कोई कोई हंस चिताई हो ।

कहैं कबीर ताहि पहुँचाऊँ, सत्त पुरुष घर जाई हो ।।

मित्रो! मेरा जीवन ऐसी-ऐसी वाणियों को सुनकर उस अमर-लोक या घर में पहुँचने का इच्छुक रहा है. हिन्दू शास्त्रों में इसे अजर-अमर पद कहा है. इस पद को खोजते-खोजते मेरी उम्र गुज़र गई. मैं अपने जीवन में भक्ति मार्ग पर चला हूँ मगर अब उसका रूप बदल गया है. पहले मैं राम की मूर्ति बनाकर मत्था टेकता था. फिर दाता दयाल (महर्षि शिव) की मूर्ति बनाकर मत्था टेकने लगा. इससे मेरी मनोकामना सिद्ध होती रही. आज एक व्यक्ति यहाँ हनमकुंडा में अपने घर ले गया. वह कहता है कि वह पाकिस्तान में था. वह रात में मुसीबत में फँस गया. उसने मुझे याद

किया. मैं अचानक प्रकट हुआ और उसे उस मुसीबत से बचने का उपाय बताया और वह बच गया.

असली सहायक कौन?

मैं आप लोगों से सच कहता हूँ कि मुझे इस बारे में कुछ मालूम नहीं है. फिर वह तुम्हारा रक्षक और सहायक कौन है? वह तुम्हारी अपनी आस और विश्वास है. उस शक्ति को जिस रूप द्वारा माना है वह उसी रूप में तुम्हारी सहायता करेगी. इसलिए जब तक कोई व्यक्ति उस सहायता करने वाली शक्ति से संबन्ध रखता है वह सत पद या अमर लोक में नहीं जा सकता है. लोग इसको मानने को तैयार नहीं मगर असली और सच्ची बात यह है कि हर एक व्यक्ति अपने ख्याल के अनुसार अपने जीवन को बनाता है. जिसको जो कुछ मिलता है अपने संकल्प का फल मिलता है. यदि मेरा रूप या राम या कृष्ण या किसी और का रूप उसके अच्छे ख्याल से सहायक बन सकता है तो उसके बुरे ख्याल से उसका नुकसान भी कर सकता है.

मैं ये बातें केवल जगत के कल्याण के लिए कह रहा हूँ. क्या कल्याण इससे होगा? सुनो! जो यह समझता है कि उसकी सहायता करने वाला राम है तो यह उसका विश्वास है. मुसलमान यह समझते हैं कि उनका सहायक मुहम्मद साहब है तो यह उनका विश्वास है. इसी तरह और भी समझ लो. सहायता तो करता है विश्वास मगर ये अपने अज्ञान से यह समझते हैं कि उनका सहायक कोई दूसरा है. इसका परिणाम यह हुआ कि कोई राम के उपासक, कोई कबीर पंथी, कोई राधास्वामी पंथी, कोई सिख, मुसलमान आदि-आदि बन गए और एक दूसरे को अपने से ग़ैर समझने लगे. इस तरह जो मानव जाति एक थी, वह विभिन्न सम्प्रदायों, धर्मों और पंथों में बंट गई और अब यह दशा है कि एक संप्रदायवादी दूसरों के पास बैठ नहीं सकते. एक दूसरे से घृणा, ईर्ष्या, द्वेष करते हैं.

इस समय एक सन्त मत की शिक्षा है जो कबीर, गुरु नानक और राधास्वामी दयाल ने वर्णन की है मगर वर्तमान समय के लोग उनकी सच्चाई को सुन लें तो घरेलू, राष्ट्रीय तथा मानसिक बहुत सी मुसीबतें हल हो जायें और जितने दुख हमारी अनसमझी या अज्ञान के कारण हैं दूर हो जायें.

कबीर ने इस शब्द में--

'हो हंसा तुम सत्तलोक के, पड़े काल बस आई हो।

कितना स्पष्ट कहा है. अन्य संतों और शास्त्रों के अनुसार हम तुम अजर, अमर होते हुए इस पिंड में आये हुए हैं. वह कौन वस्तु या शक्ति है जो हमें इस पिंड में लाई हुई है. मैं अन्धविश्वासी नहीं हूँ. जो कबीर, राधास्वामी दयाल ने कहा मैंने इन बातों के जानने में उमर खो दी.

मेरा दावा कोई नहीं है. मेरा विश्वास है और मेरा अनुभव है. एक व्यक्ति जिसका ज़िक्र अभी

किया उसको पाकिस्तान में फकीर चंद ने प्रत्यक्ष दर्शन दिए और उसको गाइड किया तथा (पादराम टप्पल वासी) ने यमुना नदी के किनारे एक कबीर पंथी साधु के साथ फकीर चंद को देखा तो मैं तो कहीं गया नहीं, फिर यह फकीर चंद के बनाने वाला कौन था? वह इनका मन था. इसको सनातन धर्म में छाया पुरुष कहते हैं. इसी प्रकार ऐसा कोई आदि पुरुष है जिसने अपने ख्याल से पहला आदमी बनाया.

विराट पुरुष-सृष्टि की उत्पत्ति

वह एक बड़ी शक्ति है. उसका शरीर है विराट पुरुष. पहाड़ जिसकी हड्डियाँ हैं. सूर्य चन्द्रमा जिसके नेत्र हैं. नदियाँ नाड़ी हैं. ऐसा एक महान पुरुष है जिसे काल पुरुष या कर्त्ता पुरुष कहते हैं. उसने इच्छा की कि मैं एक से अनेक हो जाऊँ और उसने अपने अन्तर से दुनिया बना दी. जिस तरह लोग अपने संकल्प से मुझे बना कर काम ले लेते हैं उसी तरह कर्त्ता पुरुष ने अपने संकल्प से काम लिया हुआ है और दुनिया बनाई हुई है.

परिणाम क्या निकला? लोगों के जीवनों को देखो. क्या कोई सुखी है? इस रचना में जानवर पैदा होते है साथ ही मारे जाते हैं. आदमी पैदा होते और मरते हैं और दुख सुख उठाते हैं. हर रोज़ लड़ाई झगड़े होते रहते हैं. लोग पिटते हैं, कुटते हैं, दुखी होते हैं मगर इस दुनिया को छोडने को तैयार नहीं. क्या विचित्र खेल रचा है. यह मन काल है कर्त्ता पुरुष है. इस ने दुनिया को रचा है. मगर जब यह रचना बनी तब सब कुछ बन गया, मगर अपूर्ण थी. जो वस्तु इसमें आई, जिसने आनन्द उठाया, वह है सुरत, हमारी तवज्जह. हम हैं. हम सत्त लोक के वासी हैं. वह सुरत कैसे आई. मेरी बुद्धि काम नहीं करती. संतों ने यह कहा है कि जब यह रचना बनी तब अपूर्ण थी कैसे? कि उसमें खेलने वाला नहीं था या सुरत नहीं थी. तप किया. फिर सुरत (Energy) आई, जिससे मनुष्य क्या कुछ नहीं कर सकता. दूसरा ख़ुदा बना है. क्या मनुष्य की शक्ति कम है? आज के युग में अमेरिका यदि चाहे तो 8-10 बम में सर्वनाश कर देगा. इसलिए मानव चोला मुख्य है बशर्ते कि उसे गुरु मिल जाय. यदि अमेरिका आदि बिगड़ जायें तो नाश कर दें. यह तीसरी वस्तु कैसे आई इसके हल करने में मैं फेल हूँ. हाँ जो सुरत है वह देह में आकर दुख सुख भोगती है और इस मन ने इसे फंसा रखा है. यही बात कबीर ने अपने शब्द में कही है--

मन सरूपी देव निरंजन तुम्हें राखि भरमाई हो ।

पांच पचीस तीन के पिंजरा

तहि मां राखि छिपाई हो ।।

तुमको बिसरि गई सुधि घर की,

महिमा अपनी जनाई हो ।।

निरंकार निरगुन है माया,

तुमको नाच नचाई हो ।।

मन फंसाने वाल व तारने वाला दोनों हैं

देखो! यह तुम्हारा मन ही है जिसने तुम्हें भरमा रखा है और तुम्हारा रक्षक और भक्षक बना हुआ है. दुनिया को दुखी और सुखी बना रखा है. इसलिए इसे गुरु के अर्पण कर दो तो शिव संकल्प के अनुसार सुधर सकता है. जो जीवन को सुधार सकता है वह मन ही है. मन से आवागमन में आते हो और इसी से बचते हो. मन ही साथी है. यदि साथी बुरा है तो अच्छे से अच्छा भी है. बिना मन के न दुनिया से पार हो सकते हो न फँस सकते हो. यही मन इसमें फँसाने वाला और निकालने वाला है.

इस मन से निकालने को हमने सत्गुरु पाया है जिन्होंने हमको हमारे असली घर का रास्ता बताया. वह रास्ता क्या है? वह है सुमिरन ध्यान. सुमिरन ध्यान से यमराज से निकलोगे और शब्द और प्रकाश से वहाँ जाओगे जिससे 84 के चक्र से बचोगे. फिर 84 के चक्र के बाद जहाँ रहना है उसका नाम है सत लोक.

फकीरा ! न कर गुमराह दुनिया को, दुनिया पागल न हो जाये ।

जैसे तूने पढ़ पढ़ वाणी उमर गँवाई, खोज खोज उमर बितावे ।

ताते कोई हो खोजी, मेरी बात समझ चित लावे ।।

गुरु, सुमिरन-ध्यान-भजन बताता है. साथ ही मनुष्य की बुद्धि को निश्चयात्मक बना देता है. काम करने की लाईन (Line of action) बता देता है कि इस तरह चल. तेरा परिणाम यह होगा.

यह मन्दिर, गुरुद्वारे, मस्जिद, गद्दियाँ किसने बनाईं. यह इन्सान के भरम ने बनाई है. यदि किसी मन्दिर की मूर्ति मुसलमान ने तोड़ दी या मस्जिद किसी हिन्दू ने तोड़ दी, तो हिन्दू मुसलमान लड़ बैठे और खून की नदियां बह गईं. ऐसी दशा को देखकर कुदरत ने मुझे फ़क़ीर बनाकर भेजा है अथवा इस फ़क़ीर के दिमाग़ को पागल बना दिया है.

ऐ देश के नेताओ! कांग्रेसवादियो! तुम सारे जीवन कोशिश करते रहो कि देश में एकता हो जाये मगर यह महा कठिन है क्योंकि लोगों के दिमाग पर जन्म-जन्मांतर से जो गलत ख्यालात पड़े हैं, उनको दूर करना किसी नेता या पार्टी का काम नहीं है. यह काम सत्पुरुष, सच्चे निष्काम गुरु का है, जो अपने वचन से जरूरत वालों को सच्चा ज्ञान देकर सच्चा यक़ीन करा दे कि असली

बात यह है. इसमें कोई लाग- लपेट की बात नहीं है. कबीर साहब भी कह गये--

निराकर निरगुन है माया, तुमको नाच नचाई हो.

यह निरंकार क्या है? वह शक्ति है जो दुनिया को रचने वाली है. उसने अपने संकल्प से दुनिया को नचाया और तमाम सरतों को बांधा. यह मन है जैसा चाहे नाच नचाता रहता है. सब मन के चंगुल में हैं. 'मन के नाच सारे नाचें ऋषि मुनि देवा'. आगे की कबीर के शब्द की कड़ी है--

चरम दृष्टि का कुलफ़ा देके, चौरासी भरमाई हो।

हमारा मन अपने संकल्प से अपनी रचना करता है. हम चूँकि बहिर्मुखी हो गए हैं, हम घर बार आदि को अपना समझते हैं और इस मैं-पने या मेर-तेर में आकर भ्रम में आये हुए हैं.

चार वेद है जाकी स्वासा, ब्रह्मा अस्तुति गाई हो ।

सो कित ब्रह्मा जुक्त भुलाये, तेहि मारग सब जाई हो ।।

सत्गुरु बहुरि जीव के रक्षक, तिनसे कर सुमताई हो ।।

जिनके मिले परम सुख उपजे, पद निर्वाना पाई हो ।।

ऐ मानव! यदि तू इस 84 के चक्र से बचना चाहता है तो जब तक मन से नहीं निकलेगा तब तक 84 के चक्र से बच नहीं सकता. सुमिरन ध्यान से भी नहीं बच सकते. हाँ, यमराज से बच जाओगे, परन्तु 84 के चक्र से नहीं. शब्द और प्रकाश का सहारा लें. प्रकाश ब्रह्म है, शब्द सत है.

ऐ मानव! तू सत्गुरु से मिलाई कर. वह तुम्हें मन के चक्र से निकलने की युक्ति बताएगा. तुम लोग यदि मेरी वाणी सुनते रहोगे, मेरे वचनों की डाँट-फटकार सहते रहोगे तो मैं कह सकता हूँ कि तुम सारी बात को समझ जाओगे ओर मेरे कहे अनुसार चल कर काल माया के चक्र से निकल जाओगे मगर मेरे साथ वे ठहरेंगे जो दुनिया से निकलना चाहते हैं.

चारों युग हम आन पुकारा, कोई कोई हंस चिताई हो ।

कहें कबीर ताहि पहुँचाऊँ, सत्त पुरुष घर जाई हो ।।

क्या ये शब्द झूठ हैं? नहीं. सुनो!

मैं संसार में दुखी था. बचपन में पिता की सख्ती भुगतनी पड़ती थी फिर तुच्छ तनख्वाह थी. गरीबी थी. ईंटें ढोनी पड़ती थीं, हाथों में खून निकला करता था. शादी हुई. स्त्री बीमार रही. दुखों ने घेरा हुआ था. पुकार की. सुरत उस मालिक की अंश है. गुरु के रूप में प्रकट होकर छाती से लगाया. अज्ञानी था, सारी बात समझ में नहीं आती थी. इसे समझाने के लिए गुरु पदवी दी और सत्संग कराने की आज्ञा दी. इस प्रकार सत्गुरु ने मझे इस चक्र से निकाला. वह सत्गुरु

तुम को भी निकाल देगा. इसलिए जो सत्संग में सत्संग के ख्याल से आए वह धन्य है बाकी जो तमाशा देखने के लिए आते हैं वह व्यर्थ है. फिर गुरु से मिताई क्या है? वही जो कहता आया हूँ.

दर्शन करे वचन पुनि सुने। सुन सुन कर नित मन में गुने।

जब ऐसा अधिकारी कोई व्यक्ति हो जाता है तब उस पर गुरु की दया होती है. वह गुरु दया या गुरु कृपा क्या है? यही कि किसी बात का पूर्ण निश्चय हो जाय. दाता दयाल (महर्षि शिव) के इस शब्द से प्रकट है--

जब दया गुरु की हुई, चरणों की भक्ति मिल गई ।

सब निकलता मिट गई, निश्चय की शक्ति मिल गई ।।

आ गए सत्संग में, और संग सत का मिल गया ।।

दुरमती जाती रही, जब गुरु के मत का हो गया ।।

प्रेम का प्याला पिया, पीते ही मतवाला बना ।

मन की सुधि बुधि खो गई, भोला बना बाला बना ।।

पांव में मस्तक नवाया, चित से धारा गुरु का रंग ।

कीट जिसको पहले सब, कहते थे अब ठहरा भिरंग ।।

आप में आपा लखा, आपे में आपा ज्ञान था ।

भरम में भटका हुआ, भूला था और अज्ञान था ।।

शब्द के सुनते ही अन्तर में, जो वृत्ति सो गई ।

छिन में पल में वासना माया की सारी खो गई ।।

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी राग को ।

गा रहा हूँ, धन्य मैं कहता हूँ अपने भाग को ।।

इस शब्द में सुधि वुधि खोने का जो भाव है वह यह नहीं कि बेहोश हो गए किन्तु बेग़म, बेफिक्र, अडोल अवस्था आ जाती है.

मेरी स्त्री के गुज़र जाने पर उसके संबन्धी रोते थे. उसकी पोती कहती थी कि माँ भगवान के घर गई और ख़ुश थी. ऐसी भोली-भाली दशा को कहा जाता है, भोला बना भाला बना.

गुरु का रंग क्या है? इसका अर्थ यह नहीं कि गुरु काला है तो तुम भी राख लपेट कर काले बना जाओ या गुरु के दाढ़ी है तो तुम भी दाढ़ी रख लो. देखो हुज़ूर महाराज (हुज़ूर राय साहब

सालिगराम साहब) दाढ़ी रखते थे मगर दाता दयाल (महर्षि शिव जो उनके शिष्य थे उन्होंने दाढ़ी नहीं रखी और मुझे कहा कि तुम दाढ़ी रख लो. उसका भाव यह है कि गुरु के वचन रूपी रंग से तुम रंग जाओ.

भूले-भटके का भाव यह है कि जो मुझे यह समझते हैं कि मैं दूसरों में प्रकट होता हूँ और ऐसा ही विश्वास है, तो यह भूले-भटके हुए हैं. इनको अभी सार ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई. रहस्य को नहीं समझ पाये. जब राधास्वामी मत के एक गद्दी वाले दूसरे गद्दी वाले तक के यहाँ जाने में घृणा करते हैं तो यह भूले भटके हुए हैं. सन्त मत वालों को बताये जाता हूँ कि सब लोग मनुष्य हैं, एक हैं, अफसोस है कि जो पंथ एकता के सूत्र में बांधने आया था उसे तोड़ कर इस मत वालों ने स्वयं भेदभाव मचा दिया.

अन्तर का शब्द और चीज़ है मगर सत्गुरु की धार से भी तुम्हारी ममता जानी चाहिए. जिन्हें मेरे सत्संग में शान्ति नहीं मिलती तो मैं सन्त कहलाने का अधिकारी नहीं. मेरा सत्संग केवल बकवास मात्र कहना चाहिए. इसको तुम अपने आप निर्णय कर सकते हो. जो अन्तर में रहने वाला है, निर्बंध है उसके वचन से शान्ति मिलनी चाहिए.

जिसकी संगत से शान्ति नहीं मिलती उसकी संगत न करो. सन्त की पहचान यही है कि उसके पास बैठने से मनुष्य के चित्त को सांत्वना मिले.

बाहर के सत्संग से मनन शक्ति बढ़ेगी, शंकायें दूर होंगी और बहिर्मुखता दूर हो जायेगी. तुम विवश होगे कि बाहर न दौड़ो. जगह-जगह गुरुओं के दरवाज़े पर न पड़े रहो. तुम कहोगे कि मेरा कहना यह है कि जिसकी बात समझ में आ गई, वह आवागमन के चक्र में नहीं आता. वह शान्त होकर घर बैठेगा मगर इससे तो सत्संग के सिलसिले बन्द हो जाएँगे मगर इसका इच्छुक है कौन! न गुरु न चेला! गुरु तो यह चाहते रहते हैं कि लोग मत्थे टेकते रहें, चढ़ावा चढ़ाते रहें. ऐसी स्थिति में लोगों को शान्ति मिलती कहाँ है. दाता दयाल (महर्षि शिव) कहा करते थे कि जिन्हें बात समझ में आ गई उनको सत्संग में आने की आवश्यकता नहीं. यह है. अगर तुमने एम.ए. पास कर लिया, तुमको स्कूल की जरूरत नहीं. मगर बच्चे बिना स्कूल में पढ़े एम.ए. पास नहीं कर सकते. उनके लिए स्कूल रखने जरूरी हैं. इसलिए 'सत्संग' का सिलसिला कायम रखना उनको भी आवश्यक है जो रहस्य को समझ गये है.

पद निर्वाण क्या है? सुनो! मैंने अभ्यास किया है.अब भी शब्द और प्रकाश का साधन करता हूँ. शब्द सुनते-सुनते अशब्द और अप्रकाश गति में चला जाता हूँ मगर उसके बाद फिर उत्थान होता है. सुरत और मन को कहीं भी लगाओ वहाँ से उत्थान होगा. अब साधन करने के पश्चात मुझे यह ज्ञान हो गया कि मेरा आदि क्या है? और यह कि मैं ऐसी अवस्था से आया हूँ जहाँ न मैं, न तू, न शब्द, न प्रकाश, न राम, न कृष्ण, न पीर, न पैगम्बर, न गुरु, न चेला, कुछ नहीं

है. केवल खामोशी (Silence) है. इस अवस्था के बाद राधास्वामी दयाल ने भी कहा है कि मैं भी चुप होता हूँ. उस अवस्था से जब उत्थान हुआ तब ज्ञान हुआ कि संसार प्रकृति का खेल है. प्रकृति कहीं कारण, कहीं सूक्ष्म, कहीं स्थूल है. जिस से हम निकले हैं वह परमतत्त्व आधार है. मैं भी अनामी हूँ तो तुम भी अनामी हो. ऱाधास्वामी दयाल ने सार-वचन में भी ऐसा ही लिखा है--

नहिं खालिक मखलूक न खिलकत । कर्त्ता कारन काज न दिक्कत ।।

दृष्टा दृष्टि नहिं कुछ दरसत । बांच लक्ष नहिं पद न पदारथ ।।

ज़ात सिफ़ात न अव्वल आख़िर । गुप्त न परगट बातिन जाहिर ।।

राम, रहीम, करीम न केशो । कुछ नहिं कुछ नहिं, कुछ नहिं था सो ।।

इसे यों समझ लो कि परमतत्त्व के आधार से, किरण आई और मौज से दुनिया में फंस गई. मैं कौन हूँ?

लव खुले और बन्द हुए, यह राज़े ज़िंदगानी ठहरा ।।

दाता दयाल (महर्षि शिव) कहा करते थे कि मैं केवल तीन बार हुजूर महाराज (हुजूर राय साहब सालिग राम जी महाराज) के यहाँ गया. उनसे सवाल किया कि दुनिया कैसे बनती है? और विस्तार (Evolution) कैसे होता है? उन्होंने कहा कि मेरे सामने बैठो और मेरी ओर देखो. मुँह खोला और बन्द कर लिया. उनका संकेत मेरी समझ में आ गया और मैं सुखी हूँ. अब प्रारब्ध कर्म वश जो ड्यूटी मिली है वह करता हूँ. तुमको इतनी बार समझाया मगर तुम नहीं समझते. इसलिए इस रहस्य को समझाने को यह गुरु पदवी दी.

ना मैं गुरु ना मैं चेला। मैं हूँ चैतन्य का बुलबुला ।।

मौज आधीन आया जग माहीं । दु:ख उठाये गुरु मिले राह माहीं ।।

जिन दया करी मोहि अंग लगाया।। गुरु बनाकर सार समझाया ।।

दर्द उठी अपने जैसों के ताईं ।। जो कुछ समझा भाख सुनाया ।।

फिर जीवन कैसे गुज़रता है? जब बात किसी की समझ में आ गई तो प्रारब्ध कर्म के अनुसार जैसी मौज हो वह करता है. जो जिस देश में रहता है यदि वह उसके कानून को तोड़ता है तो वह बाग़ी है. यह काल पुरुष का नियम है. नियम सबके लिए है चाहे वह कोई हो. जो नियम को तोड़ता है वह दुख उठाता है. कुल का व्यवहार है. समाज के नियमों का बंधन है. जो इनको तोड़ेगा वह दुख-सुख से बच नहीं सकता.

मैं अब कैसे रहता हूँ?

बंझा ने एक बालक जाया । जिन सकल जीव भरमाया ।।

मुझे विश्वास हो गया कि बंझा के पुत्र नहीं होता. सूक्ष्म प्रकृति जो है उससे यह रचना पैदा होती है. सूक्ष्म प्रकृति कहाँ से पैदा होती है? प्रकाश से धुआँ निकलता है. वह रेडिएशन निकल कर माद्दा बन जाती है. फिर वही स्थूल रूप धारण कर लेती है. उसकी रेडिएशन जीवन है. बालक था तुम्हारा मन, बुद्धि. मन के चक्र में आ गये भ्रम में आये. बिना समझ या ज्ञान के दौड़ते भागते हो. इसी बंझा का नाम हिन्दू शास्त्रों में माया है. सूक्ष्म प्रकृति या माया ही फँसाती और यही स्वतंत्र करती है.

सौभाग्य से जिसे गुरु या ज्ञान मिल गया वह जीवन मुक्त अवस्था में जनक की भाँति रहता और सारे काम करता है. उसे दुख-सुख नहीं होता. न वह जप-तप करता है न तीर्थ व्रत जानता है. ज्ञान होने पर सब समाप्त हो जाते हैं. वेद-शास्त्रों के प्रमाण देने से काम नहीं बनेगा. काम जब बनेगा जब बात को समझ कर उस पर आरूढ़ होगे.

यह कलियुग है. इसमें नाम की महिमा है. हिन्दू शास्त्रों ने हर युग का धर्म अलग-अलग बताया है.

ध्यान प्रथम युग मुख युग दूजे । द्वापर परितोषित प्रभु पूजे ।।

कलि केवल एक नाम अधारा । श्रुति स्मृति वेद मत सारा ।।

कलियुग में नाम की महिमा है. नाम क्या है?--

जो गुरु कहता है उसकी वाणी नाम है. जो उस पर चलता है उसे ज्ञान हो जाता है. शास्त्रों में भी यही कहा है--

मन्त्र मूलम् गुरु वाक्यम्, पूजा मूलम् गुरु पदम्।

ध्यान मूलम् गुरु मूर्ति, मोक्ष मूलम् गुरु कृपा ।।

कलियुग में रहते हुए जो इस धर्म के युग को नहीं मानते वे गलती पर हैं. राधास्वामी दयाल का प्राकट्य सनातन धर्म के सिद्धान्त के अनुसार हुआ है. दोनों में नाम की महिमा गाई है तो राधास्वामी मत सनातन धर्म से बाहर कैसे हो सकता है? राधास्वामी मत वास्तव में सनातन धर्म ही है. राधास्वामी मत वालों का यह केवल ख्याल ही है कि यह मत सनातन धर्म से भिन्न है किन्तु वास्तविक बात यह है कि राधास्वामी मत सनातन धर्म का पूर्ण रूप है. मैं राधास्वामी मत का हूँ. दाता दयाल (महर्षि शिव) राधास्वामी मत के थे मगर उन्होंने पुराण आदि ग्रंथों की व्याख्या की है. उनका खण्डन नहीं किया है.

लोग शब्दों के जाल में फंसे हैं. शब्द किसी भाव को लेकर गढ़े जाते है दूसरों को बात सुनाने

को, अपनी ओर आकर्षित करने को. यह राधास्वामी टेक्नीकल शब्द है. मैंने मानवता का शब्द प्रयोग किया है अन्तर में वृत्ति का पूर्ण रूपेण टिकाव की अवस्था का नाम राधास्वामी है. दूसरे शब्दों में यों कहो कि वृत्ति को अपने अन्तर ठहराने से ही परम शान्ति मिलेगी.

पिछले चार सत्संगों में जीवपना क्या है? जीव कैसे आता है? कहाँ जाता है? इन बातों पर बहुत कुछ प्रकाश डाल चुका. पुराण 84 के चक्र को छुड़ा कर उसके आगे कुछ वर्णन नहीं करता. अब वह परब्रह्म और शब्द ब्रह्म की ओर ले गया फिर उस पर चुप है. सन्त मत यहाँ चुप नहीं होता.

आगे क्या है? मैं अपने से प्रश्न करता हूँ कि ऐ फकीर! गुरु कहला कर अथवा परम सन्त कहलवा कर तुझे क्या मिला? दाता दयाल को धन्यवाद है कि मैं मान-बड़ाई के जाल में फंसा नहीं अन्यथा यह मान-बड़ाई बड़े-बड़ों को भी 84 के चक्र से नहीं निकलने देती. कल पिंगल रंगराव ने कहा था कि जो आप कहते हैं वह ठीक है मगर आपके स्पष्ट वर्णन से हम लोगों के गुरु में श्रद्धा-विश्वास टूटते हैं. जिस दृष्टि से यह बात उन्होंने कही है यह ठीक है. पिंगल रंगराव को याद रखना चाहिए कि यह राधास्वामी मत में है. राधास्वामी मत और कबीर मत और संतों का मत एक है. कबीर का शब्द है--

हौ तुम हंसा सत्त लोक के, पड़े काल बस आई हो ।
निरंकार निर्गुण है माया, तुमको नाच नचाई हो ।
चौरासी का कुल्फा दै के, चौरासी भरमाई हो ।।

मन का कार्य और विश्वास

जब तक मनुष्य मन के चक्र से ऊपर नहीं जाता 84 के चक्र से छूट नहीं सकता. इस 84 में फंसाने वाला मन ही है. श्रद्धा और विश्वास का संबन्ध केवल मन से है. चूँकि 1905 में मैंने प्रण किया था कि जो साधन और अभ्यास के पश्चात समझ में आएगा वह बता जाऊँगा. विवश होकर इन बातों को स्पष्ट रूप से कह रहा हूँ.

सोचो समझो! विश्वास जब होगा मन के द्वारा होगा. श्रद्धा जब होगी वह मन से होगी. विश्वास किसी गैर वस्तु पर होगा, दूसरे इष्ट पर होगा. इसलिये जब तक द्वैत है या एक से दो हैं तो 84 से बचने की सूरत नहीं है. हिन्दू शास्त्रों को पढ़ देखो. यह अवश्य है कि मेरी वर्णन शैली भिन्न है और उनकी भिन्न है मगर बात एक ही है. इसलिये हमें उस पर विश्वास करना है जो हमें 84 में न फँसाए. इस रहस्य को साधारण लोग नहीं समझ सकते. कबीर साहब उसी शब्द में आगे कहते हैं :-

सत्गुरु बहुरि जीव के रक्षक, तिनसे कर सुमताई हो ।

तिनके मिले परम सुख उपजै, पद निर्बाना पाई हो ।।
चारों युग हम आन पुकारा, कोई कोई हंस चिताई हो ।
कहें कबीर ताहि पहुंचाऊं, सत्त पुरुष घर जाई हो ।।

याद रखना चाहिए कि अपने आवागमन को छुड़ाने तथा सत पद की प्राप्ति को सिख, कबीर मत में, हिन्दुओं में सब में मार्ग बताया गया है. जो सत पद के इच्छुक हैं उनको उस पर विश्वास करना चाहिए जो मन से छुड़ा दे अर्थात या तो शब्द पर या प्रकाश पर.

प्रकाश की अवस्था परब्रह्म है और शब्द रूप होना सत लोक की अवस्था है. मेरे ख्याल से किसी को मेरे वचनों से शिकायत नहीं होनी चाहिए कि हमारे विश्वासों को धक्का पहुँचता है. तुम लोग गुरु पर विश्वास करते हो ठीक है. तुमने गुरु क्यों धारण किया था?

तुम लोग सन्त मत में हो. आवागमन से बचने को इच्छा करते हो. अनेक लोग देवी-देवताओं पर विश्वास करते हैं. संतों के मार्ग में भी विश्वास करना है. वह है सत्गुरु की ज़ात स्वरूप पर. जो वह कहता है वह सच है. इस विश्वास का बंधाना गुरु के हाथ में है. गुरु बहुत हैं मगर जो गुरु मनुष्य को 84 के चक्र से निकालते हैं वे कोई विशेष गुरु होते हैं. कोई व्यक्ति गुरु पर विश्वास नहीं कर सकता, जब तक गुरु आप दया या कृपा न करें.

विश्वास के बिना दुनिया का कोई काम नहीं चलता. बिना विश्वास के दुनिया का गुजारा नहीं. घरेलू, राष्ट्रीय, सामाजिक जीवन में बिना विश्वास के काम नहीं चलता. 84 के चक्र से बचने को भी विश्वास है. विश्वास से आवागमन जाता है, 84 के चक्र से बचते मगर यह विश्वास सत्गुरु पर करना है. यही विश्वास है कि वह सत्गुरु है और जो वह कहता है वह सच है. इस विश्वास से कि फकीर गुरु है या कोई अन्य व्यक्ति गुरु है तुम्हारा 84 का चक्र नहीं छूटेगा. हां, तुम को सहारा मिल सकता है.

प्रारम्भ में मैं मन मुख था. दाता दयाल (महर्षि शिव) पर विश्वास था मगर जो वह कहते थे उस पर विश्वास नहीं था. यदि उनके कथनानुसार चलता तो इतनी खोज करने की आवश्यकता न होती. मेरी खोज या रिसर्च का कारण यही है कि उनके वचनों पर विश्वास नहीं था.

दाता दयाल (महर्षि शिव) कहा करते थे कि फकीर! तेरे लिए आवागमन नहीं है. कह उन्होंने दिया मगर मेरे मन ने माना नहीं, वरना 10-10 घंटे साधना क्यों करता? क्यों कष्ट उठाता? विश्वास क्यों नहीं था क्योंकि यह ज़माना कलियुग का है. जैसे मैं कह रहा हूँ इसी तरह समझा देते तो ठीक था, मेरी समझ में आ जाता मगर मैं दाता दयाल को दूसरी हस्ती (व्यक्ति) समझता था. मेरा द्वैत भाव नहीं जाता था.

जिन्हें दुनिया की आवश्यकताएं हैं उनको विश्वास अनिवार्य है किसी देवी-देवता की पूजा

विश्वास से करो. तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हो जाएगी. यदि पूर्ण न होती तो लोग देवी-देवता, गंगा-यमुना आदि की पूजा न करते. अपने बच्चों के नाम उनके नाम पर न रखते. किसी का विश्वास गंगा पर गया. गंगा से प्रार्थना की. गंगा के विश्वास से उसके पुत्र हो गया. इससे उसने अपने पुत्र का नाम गंगा दास रख दिया. देवी-देवता, गंगा या राम-कृष्ण पर विश्वास करने से मनोकामनाएँ पूरी हो सकती हैं. धर्म, अर्थ और काम मिल सकता है मगर मोक्ष नहीं मिल सकता. यह मैं किसी खण्डन की दृष्टि से नहीं कह रहा हूँ किन्तु 60 वर्ष के अनुभव के बाद कह रहा हूँ. लोग मुझे पर विश्वास करते हैं. प्रसाद ले जाते हैं. 70-80 सन्तान हीन स्त्रियों के सन्तान हो गई. निर्धन धनी हो गए. रोगी आरोग्य हो गए. मैं जानता हूँ कि मैंने कुछ नहीं किया. करने वाला उनका विश्वास था. इसलिए विवश मुझे खुले शब्दों में कहना पड़ा है कि जो कुछ किसी को मिलता है उसके विश्वास का ही फल होता है.

ज्ञान के अवतार दाता दयाल (महर्षि शिव) का एक शब्द जिसमें उन्होंने अन्तिम अवस्था का वर्णन किया है, सुनो--

न अपना नाम रखना तुम,न दुनिया में निशाँ रखना ।।

'नहीं' की जब गई आदत, जुबां पर तब न 'हां' रखना ।।

मुकिर होना अबस है और, मुनकिर होना है गलती ।।

न सिर में ऐसे सौदा कर, कभी बारे गिरां रखना ।।

न साहिबे दिल न बे दिल बनने, की तुम में हवस आये ।।

दिल न देना न दिल लेना, न वहमें दिल सिताँ रखना ।।

अगर है तर्क कर दो, तर्क का भी तर्क बेशुब्ह

मकां जब छुट गया फिर क्यों खयाले लामकां रखना ।।

खमोशी मानये दारद, कि दर गुफ्तन नमी आयद ।।

न सच और झूठ कहने के लिए, मुंह में ज़ुबां रखना ।।

सिद्धान्त तो यही कहता है कि मैं चुप कर जाता. यदि चुप कर जाता हूँ तो उस शुद्ध स्वरूप का जिसने यह ख्याल दिया उसका ऋण नहीं उतार सकता. इसलिए विवश घसीटा जा रहा हूँ. देखो! दाता दयाल के इस शब्द से प्रकट हो रहा है कि वे अपना नाम और निशां भी रखना नहीं चाहते थे. एक ओर यह भाव है दूसरी ओर गुरुओं की यह दशा है कि वे अपने नाम का ढिंढोरा पिटवाते हैं और अपने-अपने पंथ और संप्रदायों के पक्ष में हैं. इससे जो मानव जाति एक थी, वह संप्रदायों में बंट गई. भाई-भाई के साथ नहीं बैठ सकता. एक पंथ वाला दूसरे का विरोधी बना है. मैं

किसी पंथ या सम्प्रदाय का विरोधी नहीं हूँ. मेरे जिम्मे जगत कल्याण की ड्यूटी थी इसलिए यह काम कर रहा हूँ. ये बातें समझदार वर्ग में जाएँगी, इसलिए सच्चाई का वर्णन कर रहा हूँ.

गिदड़वाहे में दाता दयाल (महर्षि शिव) से मैंने कहा था कि-- महाराज आपका यह चोला अब नहीं रहेगा. उन्होंने उत्तर दिया था कि फकीर! मेरे कर्म कट गये. तुम्हारे कर्म बाकी हैं वह भी कट जाएँगे. जब तक हो सत्संग का काम करते रहना. मैंने उस समय इस काम के करने से इन्कार किया था. तब उन्होंने कहा था कि--तू कौन है जो न करेगा. मौज ने मेरी सेवा के लिए तुझे मेरे पास भेजा था. तेरी जो कमी है वह दूर हो जाएगी.

शुभ और अशुभ कर्म

मेरी कमी अब दूर हो गई. यह काम मैंने अपने लिए किया. इससे यदि दूसरों को लाभ पहुँचे जो पहुँचना चाहिए तो इसमें मेरा क्या श्रेय है? जुलाहा अपने पेट के लिये कपड़ा बुनता है. उसको दुकानदार खरीद कर बेचता है और लाभ उठाता है. दर्जी उसकी सिलाई करता है. धोबी धोता है. फट जाने पर उसे कारखाने वाले खरीद कर काग़ज़ बनाते हैं. काम एक आदमी ने अपने पेट पर किया मगर उसके कर्म से दूसरों को लाभ पहुँच गया. इसी तरह हर एक आदमी काम करता है अपने लिए मगर परिणाम यह होता है कि दूसरों को लाभ पहुँच जाता है. यदि आपने अपने कल्याण के लिए काम किया तो दूसरों का भी कल्याण होगा. कारखाने वाले काम करते हैं अपने मुनाफा को, मगर उसमें लाखों रोटी कमाते हैं. यदि वह काम अपने लिए हानिकर है तो दूसरों को भी हानिकार होगा. इसी तरह मेरा काम अपने लिए हैं मगर मुझे यकीन है कि हज़ारों को इससे लाभ होगा.

वह जो भ्रम से निकलना चाहते हैं अथवा आवागमन से बचना चाहते हैं उनको कह रहा हैं कि आवागमन से बचने को शब्द और प्रकाश का साधन है. यमराज से बचने को सुमिरन-ध्यान है. इसके आगे और भी मंज़िलें हैं.

जब तक तुम्हारा शरीर है तुम साधन करके शब्द और प्रकाश में रह सकते हो. मगर जब तक शरीर है 24 घंटे वहाँ नहीं रह सकते. मैं भी नहीं रहता. कोई भी नहीं रहा. उदाहरण के लिए दाता दयाल (महर्षि शिव) यदि हर समय शब्द और प्रकाश में रहते तो पुस्तकें कैसे लिख सकते थे. बड़े-बड़े सन्त हुए, सत्गुरु कहलाये मगर वे भी 24 घंटे शब्द और प्रकाश में नहीं रहे. यदि वे 24 घंटे शब्द और प्रकाश में रहते तो कैसे सत्संग कराते, कैसे ग्रन्थ लिखते आदि- आदि.

अंतर में भिन्न-भिन्न शब्द होने का कारण

कितने ही सत्संगी ऐसे हैं कि जिनका अभ्यास बहुत ऊँचा है मगर चूँकि उनका भ्रम नहीं गया

है, इसलिए उत्थान होने पर घबराते हैं कि वृत्ति वहाँ से उखड़ गई. यह मेरा अनुभव है क्योंकि मेरे साथ बीती है. कभी समय था जब घंटा, शंख, रारंग, सारंग, बीन आदि के शब्द सुने. तरह-तरह के प्रकाश देखे. अब पिछली अवस्था है. अब लाख कोशिश करने पर भी घंटा, शंख आदि के शब्द सुनाई नहीं देते. अब क्या होता है--श्वेत प्रकाश और अखण्ड (Unbreakable) शब्द. चूँकि राधास्वामी नाम का सुमिरन किया हुआ है तो अब जो शब्द सुनता हूँ और उस ओर ध्यान देता हूँ तो वह ध्वनि राधास्वामी मालूम होती है. यह अभ्यास के अमली अनुभव है. मैंने सन्त मत की आ, ई पढ़ने की कोशिश की मगर नहीं पढ़ सका. मैं ये भाषण देने जा रहा हूँ. ये प्रकाशित होंगे. पाठक पढ़ के कहें कि मैं ठीक हूँ या गलत हूँ. बड़े-बड़े गुरु अपने-अपने अन्तरीय अनुभव के आधार पर या तो समर्थन करें या गलत हूँ तो खण्डन करें.

अन्तर में भिन्न-भिन्न प्रकार के शब्द होते हैं जिन्हें साधन करने वाले जानते हैं. वे क्यों होते हैं इस पर किसी सन्त ने प्रकाश नहीं डाला है. इनकी व्याख्या मैंने पहले भी की है जो 'मनुष्य बनो' अक्टूबर 1962 में और 'शिव-पत्र' के 'सार का सार, भाग दोयम' पुस्तक में प्रकाशित हो चुकी है मगर अन्तरीय शब्द होने के विषय के सिलसिले में यहाँ भी संकेत किये देता हूँ.

घंटा, शंख, मृदंग की आवाजें प्राकृतिक आवाजें हैं. जब चित्त वृत्ति को इकट्ठा करते समय करने वाले के अवचेतन मन (Sub-Conscious Mind) में सांसारिक पदार्थों की वासनाएँ होती हैं तो वृत्ति के इकट्ठा करने में शरीर के स्थूल पदार्थों में गति होती है और उससे जो आवाज़ या शब्द होता है वह घंटा या शंख के शब्द के समान होता है.

जिसके मन में वासनाएँ नहीं रहती उनके अन्तर में घंटा-शंख कैसे बज सकते हैं? 'ओम्' का शब्द त्रिकुटी के स्थान पर होता है. सन्त मत में वहाँ गुरु मूर्ति का ध्यान होता है. उस समय प्रेम की लगन लगी होती है और विचार, जो सूक्ष्म पदार्थ है, अन्तर में इकट्ठे होते है तो ओम् या मृदंग की ध्वनि सुनाई देती है जिस तरह कि बादल इकट्ठे होकर गरज खाते हैं.

जब मानसिक प्रेम खत्म हो गया तब फिर यह ध्वनि सुनाई नहीं देगी. जब पहली श्रेणी के शब्द मेरे अन्तर में प्रकट न हुए तो मुझे शंका होने लगी कि इतना अभ्यास किया फिर भी तू गिर गया. यह मेरा भ्रम था, क्योंकि अब मुझे दोनों अवस्थाओं का अनुभव है. चूँकि मेरी स्थिति पहली जैसी नहीं है. इसलिए निचली श्रेणी के शब्दों का न होना स्वाभाविक है.

कितने ही सत्संगियों को शिकायत है कि अभ्यास नहीं बनता. उनको बताता हूँ कि जैसे-जैसे बाह्य प्रभाव तुम्हारे विचारों के अनुसार तुम्हारे अवचेतन मन (Sub-Conscious Mind) पर पड़े हैं, वं वहाँ मौजूद रहते हैं. इसलिए जैसी वासना होगी वैसा शब्द होगा. जब ऐसी अवस्था हो तो घबराना नहीं चाहिए. जब तक तुम मन की वासनाओं, कामनाओं, से परे नहीं होते तब तक अभ्यास में समता एक रसपना कभी नहीं रहेगा. इस समता को लाने का इलाज यह है कि विचार

के साथ विचारों को शुद्ध करने की कोशिश करो और मूल कारण को ज्ञात करो, जिसके कारण अभ्यास नहीं बन रहा है. यह अच्छी तरह समझ लो कि तुम्हारा अभ्यास तुम्हारे भाव और विचारों के अनुसार बनेगा. दाता दयाल ने मेरे नाम एक शब्द लिखा था--

तू फकीर है मेरे प्यारे, सुन फकीर की बानी ।

... .

मोह मया और छल चतुराई, छोड़े मूल विकार ।

... .

(फकीर भजनावली से)

इस शब्द में उन्होंने 'मोह' मया और छल चतुराई, छोड़े मूल विकारा' लिखा है. यदि मैं अपने धन, धाम और मान को, जो लोग मुझे देते है, उनकी हाँ में हाँ मिलाता हूँ और चुप हो जाता हूँ तो छल चतुराई से कैसे बचता हूँ?

मैंने सच्चाई को प्रकट किया है. अपनी रिसर्च के बाद यह अनुभव किया है कि भारत का संकट जब दूर होगा जब भारत संतों की शरण लेगा. शरण लेने का अर्थ मत्थे टेकना नहीं किन्तु शरण का अर्थ यह है कि जो उनका कथन है उस पर विचार करके उसके अनुसार चला जाय या अमल किया जाय. सुनो! तुम सांसारिक पदार्थ चाहते हो और इसके लिए तुम देवी-देवता, राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, हज़रत मुहम्मद को मानते हो. तुम मानते हो, मानो, मानते रहो मगर मैंने सच्चाई वर्णन कर दी है कि ये सब देवी-देवता, पीर-पैगम्बर तुम्हारा मन है. तुम मन से ही तो उनको मानते हो. यह तुम्हारा विश्वास है. इसलिए ऐ मानव! तेरा सहायक तेरा मन है. व्यर्थ अपने को अलग-अलग सम्प्रदाय वाला मगर कर तू व्यर्थ वितंडावाद में फंस गया है और तूने अपने भाइयों के साथ घृणा और द्वेष का बीज बो दिया है. कहाँ वह अजर-अमर को मानने वाला सनातन धर्म और कहाँ लामकां का मानने वाला इस्लाम! फिर भी घृणा द्वेष का व्यवहार! भारत के बँटवारे के समय हिन्दू और मुसलमानों ने एक दूसरे के साथ जैसा घृणित व्यवहार किया इसको सब जानते हैं.

लोग उपासना करते हैं. मन से भक्ति करते हैं. ईश्वर को मन से मानते हैं. ईश्वर विराट पुरुष है, तो जो अपने इष्ट को कर्त्ता पुरुष मानते हैं वे 84 के चक्र से निकल नहीं सकते. ऊपर के लोकों में नहीं जा सकते. संतों ने इसे काल कहा है. संत मार्ग में काल को इष्ट नहीं माना किन्तु इससे ऊँचा माना है. गुरु नानक ने उसे अकाल कहा. कबीर ने उसे अनामी पद कहा. राधास्वामी दयाल ने सत से आगे, अलख-अगम से आगे कहा. हिंदुओं ने कहा कि--ओम् भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम .... अर्थात सत्यम के आगे सावित्री रूपी सूर्य के दर्शन

करो. फिर इनमें अन्तर क्या रहा. जहाँ हिन्दू भूले वहाँ राधास्वामी मत वाले भी भूले. जब साधन करता हुआ मनुष्य इष्ट पद पर पहुँच जाता है तो वह यह समझता है कि दुनिया प्रकृति का खेल है. स्वप्न है. ऐसे पुरुष को कहते हैं विदेह गति वाला. यही बात हिन्दू शास्त्र कहते हैं. कबीर कहता है-- इस पर कबीर साहब का शब्द है--

बलिहारी अपने साहिब की, जिन यह जुक्ति बनाई ।
उनकी शोभा केहि विधि कहिये, मो से कहि न जाई ।।
बिना जोत की जहं उजियारी, सो दरसै वह दीपा ।
निरतैं हंस करैं कोतूहल, वोही पुरुष समीपा ।
झलकै पदम नाना विधि वानी, माथे छत्र विराजै ।
कोटिन भानु चन्द्र की क्रान्ती, रोम रोम में छाजै ।।
कर गहि विहंसि जवै, मुख बोले, तब हंसा सुख पावै ।
अंस बंस जिन बूझि विजारी, सो जीवन मुक्तावै ।।
चौदह लोक वेद का मण्डल, तहं लगि काल दुहाई ।
लोक वेद जिन फन्दा काटी, ते वह लोक सिधाई ।।
सात सिकारी चौदह पारिन्द, भिन्न भिन्न निरतावै ।
चार अंश जिन समुझि विचारी, सो जीवन मुक्तावै ।।
चौदह लोक बसै जम चौदह, तंह लगि काल पसारा ।
ताके आगे जोति निरंजन, बैठे सून्य मंझारा ।।
सोरह खण्ड अक्षर भगवाना, जिन यह सृष्टि उपाई ।
अक्षर कला से सृष्टि उपजी, उनहीं मांहि समाई ।।
सत्रह संख पै अधर द्वीप जंह, सब्दातीत बिराजै ।
निरतै संखी बहु विधि शोभा, अनहद बाजा बाजै ।।
ताके ऊपर परम धाम है, मरम न कोऊ पाया ।
जो हम कही नहीं कोऊ मानै, ना कोऊ दूसर आया ।।
वेदन साखी सब जिव अरुझे, परम धाम ठहराया ।

फिर फिर भटके आप चतुर होइ, वह घर काहु न पाया ।।

जो कोइ होइ सत्य का किनका, सो हम को पतियाई ।

और न मिले कोटि कहि थाके, बहुरि काल घर जाई ।।

सोरह संख के आगे समरथ, जिन जग मोहिं पठाया ।

कहै कबीर आदि की बानी, वेद भेद नहिं पाया ।।

यह गति तुमको तब मिलेगी जब सच्ची समझ आ जाएगी. अर्थात पूर्ण ज्ञान (अनुभव ज्ञान) हो जाएगा. जैसा कि मैंने अभी बताया कि सब साधना करके एक ही मंजिल पर पहुँचे और इनमें कोई अन्तर नहीं रहा मगर हर एक अपने-अपने पंथ या सम्प्रदाय को श्रेय (Credit) देता है. उनको अपने पंथ या सम्प्रदाय की टेक है, चाहे प्रत्यक्ष में चाहे अप्रत्यक्ष (पर्दे) में मगर टेक केवल सत्गुरु की होनी चाहिए. सत्गुरु बाबा फकीर की नहीं. वह है सच्चा ज्ञान, सच्चा अनुभव. इसलिए मैं सत्गुरु की हैसियत में प्रकट हुआ हूँ और यथार्थ बात या सच्चाई वर्णन किये जाता हूँ. तुम चाहो मुझे अहंकारी कहो मगर मैं कोई बात अहंकार से नहीं कहता किन्तु अनुभव करने के बाद कह रहा हूँ. यदि दाता दयाल (महर्षि शिव) के कथनानुसार मैं जगत कल्याण को आया हूँ तो मैं आशा करता हूँ कि मेरे विचार ब्रह्मांड में जाएँगे और बड़े-बड़े दिमाग़ों को प्रभावित करेंगे.

इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम न हिन्दू बनो, न मुसलमान, न ईसाई, न सिख, केवल इन्सान बनो. कहने का अभिप्राय यह कि हर एक को अपना जैसा समझ कर इन्सानियत का व्यवहार करो.

हमको देखना यह है कि जीवन का ध्येय क्या है? जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ कि हम दुनिया में आये हैं और मन के चक्र में फंस गये हैं. अनेक प्रकार से फंसे हुए है. एक ही बन्धन नहीं हैं. हज़ारों ही बन्धन है. धर्म का, ईश्वर का, पुत्र का, स्त्री का, धन का, नातेदारों का, परिवार का आदि-आदि. ख़ुदा का मानने वाला, ईश्वर के मानने वाले से विरोध करता है. ईश्वर का उपासक ख़ुदा के मानने वाले से घृणा करता है. हर एक अपने-अपने सम्प्रदाय के बन्धन में हैं.

इससे निकलने के लिए साधन और सत्संग है मगर अधिक परिश्रम की आवश्यकता नहीं. हुज़ूर महाराज (राय सालिग राम साहब) ने कहा कि 100 वर्ष की पूजा से अढ़ाई घड़ी का, सत्संग बेहतर है. बाबा सावन सिंह जी भी यही कहा करते थे. तुलसी दास और कबीर ने भी ऐसा ही कहा है.

इसलिए जिन्होंने इस बात को जीवन भर परिश्रम के बाद प्राप्त किया है उनके अनुभव से लाभ उठाओ. व्यर्थ क्यों कष्ट उठाते हो. मगर जो वस्तु मुफ्त में मिलती है उसकी कोई क़द्र नहीं करता. इस सिलसिले में मुझे एक कहावत याद आ गई कि कोई नौजवान अपनी ससुराल गया

था. उसके जूते मामूली थे मगर रूमाल रेशमी था. जब वह ससुराल पहुँचा तो जूतों को रेशमी रूमाल से साफ करने लगा. लोगों ने बड़े अचंभे से पूछा कि रेशमी रूमाल को क्यों ख़राब करते हो. तो उसने कहा कि यह रूमाल पिता जी की कमाई का है और जूते मेरी कमाई के हैं. यह कहावत चाहे ठीक हो या न हो, मगर शिक्षाप्रद है कि मुफ्त को वस्तु की क़द्र नहीं की जाती. मैंने मर-मर के जो अनुभव किया है वह मैं मुफ्त में बांट रहा हूँ. लोग उसे लेना नहीं चाहते. तमाशा देखने आते हैं, इसलिए जो कहता हूँ उसे सुनो और उससे लाभ उठाओ.

जब तक जीवन है मौज अधीन रहकर काम करते रहो. खेल खेलना है, खेलते रहो. सत्संग करते रहो. अभ्यास के बारे में अधिक नहीं करना है. मन को शुद्ध करना है. कहा है--

'मन का हुजरा साफ कर, जानां के आने के लिए'

जहाँ मन शुद्ध हुआ, विचारों में पवित्रता आई कि ये शब्द और प्रकाश स्वयं खुल जाते हैं. अभ्यास का गुरु यही है कि मन को शुद्ध करो. वासनाओं को अनुकूल बनाओ. जब तक यह नहीं होता, साधन पूरा नहीं हो सकता. यह मेरे जीवन का अनुभव है. शब्द और प्रकाश जो खुलते हैं यह सब मन की वासनाओं के अनुसार खुलते हैं क्योंकि शब्दों का खुलना स्वाभाविक है, प्राकृतिक है. जैसी वासना होगी वैसा शब्द प्रकट होगा. जो मेरी समझ में आया निज अनुभव के आधार पर कह दिया. जो ड्यूटी दाता दयाल (महर्षि शिव) ने लगाई थी उसे पूरी कर चला. उस ऋण से उऋण हो गया. प्रशंसा की ख़ुशी नहीं. बुराई से घृणा नहीं! अब अन्तिम परिणाम मेरा क्या हो रहा है वह कबीर की वाणी से सुनो--

सखिया वा घर सबसे न्यारा, जहं पूरन पुरुष हमारा ।। टेक ।।

जहं नहिं सुख दुख सांच झूठ नहिं, पाप न पुन्न पसारा ।

नहिं दिन रैन चन्द नहिं सूरज, बिना जोति उजियारा ।। 1 ।।

नहिं तहं ज्ञान ध्यान नहिं जप तप, वेद कितेब न बानी ।।

करनी धरनी रहनी गहनी, ये सब उहां हिरानी ।। 2 ।।

धर नहिं अधर न बाहर भीतर, पिंड ब्रहमंड कछु नाहीं ।

पांच तत्त्व गुन तीन नहीं तहं, साखी सब्द न ताहीं ।। 3 ।।

मूल न फूल बेलि नहिं बीजा, बिना वृक्ष फल सोहै ।

ओअं सोहं अर्ध उर्ध नहिं, स्वासा लेख न कोहै।। 4 ।।

नहिं निर्गुन नहिं सर्गुन भाई, नहिं सूक्षम अस्थूलं ।

नहिं अक्षर नहिं अवगत भाई, ये सब जग के भूलं ।। 5 ।।

जहाँ पुरुष तहवां कुछ नाहीं, कहै कबीर हम जाना ।

हमरी सैन लखै जो कोई, पावै पद निरवाना ।। 6 ।।

।। गरुड़ पुराण रहस्य समाप्त ।।